

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमास्तुमहादेशिकाय नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरि रिरचितम्  
॥ श्रीमन्नारायणीयम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

## বিষয়সূচী

1	প্রথমং দশকম্ .....	7
2	দ্বিতীয়ং দশকম্ .....	9
3	তৃতীয়ং দশকম্ .....	11
4	চতুর্থং দশকম্ .....	13
5	পঞ্চমং দশকম্ .....	16
6	ষষ্ঠং দশকম্ .....	18
7	সপ্তমং দশকম্ .....	20
8	অষ্টমং দশকম্ .....	23
9	নবমং দশকম্ .....	26
10	দশমং দশকম্ .....	28
11	একাদশং দশকম্ .....	30
12	দ্বাদশং দশকম্ .....	32
13	ত্রয়োদশং দশকম্ .....	34
14	চতুর্দশং দশকম্ .....	36
15	পঞ্চদশং দশকম্ .....	38
16	ষোড়শং দশকম্ .....	40
17	সপ্তদশং দশকম্ .....	42
18	অষ্টাদশং দশকম্ .....	45

---

19	একোনিংশং দশকম্ .....	47
20	নিংশং দশকম্ .....	49
21	একনিংশং দশকম্ .....	51
22	দ্বািংশং দশকম্ .....	54
23	ত্রয়োিংশং দশকম্ .....	57
24	চতুিংশং দশকম্ .....	60
25	পঞ্চিংশং দশকম্ .....	62
26	ষড়িংশং দশকম্ .....	64
27	সপ্তিংশং দশকম্ .....	66
28	অষ্টািংশং দশকম্ .....	69
29	একোনিত্রিংশং দশকম্ .....	71
30	ত্রিংশং দশকম্ .....	73
31	একত্রিংশং দশকম্ .....	75
32	দ্বাত্রিংশং দশকম্ .....	77
33	ত্রয়স্িত্রিংশং দশকম্ .....	79
34	চতুস্িত্রিংশং দশকম্ .....	81
35	পঞ্চাত্রিংশং দশকম্ .....	84
36	ষড়িত্রিংশং দশকম্ .....	87
37	সপ্তাত্রিংশং দশকম্ .....	90
38	অষ্টাত্রিংশং দশকম্ .....	92

---

---

39	একোনচত্রারিংশং দশকম্ .....	94
40	চত্রারিংশং দশকম্ .....	96
41	একচত্রারিংশং দশকম্ .....	98
42	দ্বিচত্রারিংশং দশকম্ .....	100
43	ত্রিচত্রারিংশং দশকম্ .....	103
44	চতুশ্চত্রারিংশং দশকম্ .....	105
45	পঞ্চচত্রারিংশং দশকম্ .....	107
46	ষট্চত্রারিংশং দশকম্ .....	110
47	সপ্তচত্রারিংশং দশকম্ .....	112
48	অষ্টচত্রারিংশং দশকম্ .....	114
49	একোনপঞ্চাশং দশকম্ .....	116
50	পঞ্চাশং দশকম্ .....	118
51	একপঞ্চাশং দশকম্ .....	120
52	দ্বিপঞ্চাশং দশকম্ .....	122
53	ত্রিপঞ্চাশং দশকম্ .....	124
54	চতুঃপঞ্চাশং দশকম্ .....	126
55	পঞ্চপঞ্চাশং দশকম্ .....	128
56	ষট্‌পঞ্চাশং দশকম্ .....	130
57	সপ্তপঞ্চাশং দশকম্ .....	132
58	অষ্টপঞ্চাশং দশকম্ .....	135

---

---

59	একোনষষ্টিতমং দশকম্ .....	137
60	ষষ্টিতমং দশকম্ .....	139
61	একষষ্টিতমং দশকম্ .....	142
62	দ্বিষষ্টিতমং দশকম্ .....	144
63	ত্রিষষ্টিতমং দশকম্ .....	146
64	চতুষষ্টিতমং দশকম্ .....	148
65	পঞ্চষষ্টিতমং দশকম্ .....	150
66	ষট্‌ষষ্টিতমং দশকম্ .....	152
67	সপ্তষষ্টিতমং দশকম্ .....	154
68	অষ্টষষ্টিতমং দশকম্ .....	156
69	একোনসপ্ততিতমং দশকম্ .....	158
70	সপ্ততিতমং দশকম্ .....	161
71	একসপ্ততিতমং দশকম্ .....	163
72	দ্বিসপ্ততিতমং দশকম্ .....	165
73	ত্রিসপ্ততিতমং দশকম্ .....	168
74	চতুসসপ্ততিতমং দশকম্ .....	170
75	পঞ্চসপ্ততিতমং দশকম্ .....	172
76	ষট্‌সপ্ততিতমং দশকম্ .....	175
77	সপ্তসপ্ততিতমং দশকম্ .....	178
78	অষ্টসপ্ততিতমং দশকম্ .....	181

---

---

79	একোনাশীতিতমং দশকম্ .....	183
80	অশীতিতমং দশকম্ .....	186
81	একাশীতিতমং দশকম্ .....	189
82	দ্ব্যশীতিতমং দশকম্ .....	191
83	ত্র্যশীতিতমং দশকম্ .....	194
84	চতুরশীতিতমং দশকম্ .....	197
85	পঞ্চাশীতিতমং দশকম্ .....	200
86	ষডশীতিতমং দশকম্ .....	203
87	সপ্তাশীতিতমং দশকম্ .....	206
88	অষ্টাশীতিতমং দশকম্ .....	208
89	একোননরতিতমং দশকম্ .....	212
90	নরতিতমং দশকম্ .....	215
91	একনরতিতমং দশকম্ .....	218
92	দ্বিনরতিতমং দশকম্ .....	222
93	ত্রিনরতিতমং দশকম্ .....	226
94	চতুর্নরতিতমং দশকম্ .....	230
95	পঞ্চনরতিতমং দশকম্ .....	234
96	ষণ্ননরতিতমং দশকম্ .....	238
97	সপ্তনরতিতমং দশকম্ .....	242
98	অষ্টনরতিতমং দশকম্ .....	246

---

---

<b>99</b>	একোনশততমং দশকম্ .....	<b>250</b>
<b>100</b>	শততমং দশকম্ .....	<b>254</b>

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये प्रथमं दशकम् ॥

ভগবান্‌হিমানুর্‌র্গনম্

সান্দ্রানন্দারবোধাত্মকমনুপমিতং কালদেশারধিভ্যাং

নির্মুক্তং নিত্যমুক্তং নিগমশতসহস্রেণ নির্ভাস্যমানম্।

অস্পষ্টং দৃষ্টমাত্রৈ পুনরুরূপুরুষার্থাত্মকং ব্রহ্ম তত্ত্বং

তত্ত্বাৱদ্ধাতি সাক্ষাদপুরুপরনপুৱে হস্ত ভাগ্যং জনানাম্ ॥ 1.1 ॥

1

এৱং দুৰ্লভ্যৱস্তন্যপি সুলভতযা হস্তলঙ্কে যদন্যৎ

তন্না ৱাচা ধিযা ৱা ভজতি বত জনঃ ক্ষুদ্রতৈৱ স্ফুটেযম্।

এতে তাৱদ্বযং তু স্থিৱতৱমনসা ৱিশ্বপীডাপহতৈ

নিশ্শেষাত্মানমেনং গুৱপৱনপুৱাধীশমেরাশ্রযামঃ ॥ 1.2 ॥

2

সত্ত্বং যত্ত্বৎ পৱাভ্যামপৱিকলনতো নিৰ্মলং তেন তাৱৎ

ভূতৈৰ্ভূতেন্দ্রিযৈস্তু ৱপুৱিতি বহুশঃ শ্রযতে ৱ্যাসৱাক্যম্।

তৎ স্বচ্ছৎৱাদ্যদচ্ছাদিতপৱসুখচিদগৰ্ভনিৰ্ভাসৱূপং

তস্মিন্ ধন্যা ৱমন্তে শ্রুতিমতিমধুৱে সুগ্ৰহে ৱিগ্ৰহে তে ॥ 1.3 ॥

3

নিষ্কম্পে নিত্যপূৰ্ণে নিৱৱধিপৱমানন্দপীযুষৱূপে

নিৰ্লীনানেকমুক্তাৱলিসুভগতমে নিৰ্মলব্রহ্মসিঙ্কৌ।

কল্লোলোল্লাসতুল্যং খলু ৱিমলতৱং সত্ত্বমাত্তস্তদাত্মা

কস্মান্নো নিষ্কলস্ত্বং সকল ইতি ৱচস্ত্বৎকলাস্বেৱ ভূমন্ ॥ 1.4 ॥

4

নিৰ্ৱ্যাপাৱোহপি নিষ্কাৱণমজ ভজসে যৎক্রিয়ামীক্ষণাখ্যাং

তেনৈৱোদেতি লীনা প্ৰকৃতিৱসতি কল্লাহপি কল্লাদিকালে।



- तस्यास्संशुद्धमंशं कमपि तमतिरोधायकं सद्भुरूपं  
 स एरं धृंरा दधासि स्महिमरिडराकुंठं रैकुंठं रूपम् ॥ 1.5 ॥ 5
- तते प्रत्यग्रधाराधरललितकलाधारलीकेलिकारं  
 लारण्यसैकसारं सुकृति जन दृशां पूर्णपुण्यारतारम्।  
 लम्हीनिश्शक्लीलानिलयनममृतस्यन्दसन्दोहमन्तः  
 सिङ्गं सङ्गिन्तकानां रपुरनुकलये मारुतागारनाथ ॥ 1.6 ॥ 6
- कष्टा ते सृष्टिचेष्टा बहुरभरखेदारहा जीरुभाजा -  
 मित्येरं पूरुमालोचितमजित मया नैरुमद्याभिजाने।  
 नो चेज्जीराः कथं वा मधुरतरमिदं एरुद्रपुश्चिद्रसार्द्रं  
 नेत्रैः श्रोत्रैश्च पींरा परमरससुधाञ्जोधिपुरे रमेरन् ॥ 1.7 ॥ 7
- नम्नाणां सन्निधते सततमपि पुरस्तेरनभ्यर्थितान -  
 प्यर्थान् कामानजस्रं रितरति परमानन्दसान्द्रां गतिं च।  
 इत्थं निश्शेषलभ्यो निररधिक फलः पारिजातो हरे एरं  
 म्फुद्रं तं शक्राटीद्रममडिलषति र्यर्थमर्थिब्रुजोहयम् ॥ 1.8 ॥ 8
- कारुण्यांकाममन्यं ददति खलु परे स्वात्नदस्त्रं रिशेषा -  
 दैश्वर्यादीशतेहन्ये जगति परजने स्वात्नोहपीश्वरस्त्रम्।  
 एरयुष्टैरारमन्ति प्रतिपदमधुरे चेतनाः स्फीतभाग्या -  
 स्त्रं चाहह्वाराम एरेत्यतुल गुणगणाधार शौरे नमस्ते ॥ 1.9 ॥ 9
- ऐश्वर्यं शक्करादीश्वररिनिधमनं रिश्वरेतेजोहराणां  
 तेजस्संहारि रीर्यं रिमलमपि यशो निस्पृहैश्चापगीतम्।  
 अङ्गासङ्गा सदा श्रीरखिलरिदसि न क्वापि ते सङ्गरार्ता  
 तद्वातागाररासिन् मुरहर भगरच्छब्दमुख्याश्रयोहसि ॥ 1.10 ॥ 10

॥ इति श्रीमन्नारायणीये प्रथमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে দ্বিতীয়ং দশকম্ ॥

ভগবদ্ভপৰ্ণনম্

সূৰ্যস্পৰ্ধিকিৰীটমূৰ্ধ্ৰতিলকপ্রোদ্ধাসিফালান্তরং

কারुण्याकुलनेत्रमार्द्रहसितोल्लासं सुनासापुटम्।

गणोद्यन्मकराडकुण्डलयुगं कर्णोज्ज्वलंकौस्तुभं

ॐरुद्रपं रनमाल्यहारपटलश्रीरंसदीप्रं भजे ॥ 2.1 ॥

11

केयूराङ्गदकङ्कणोत्तममहारत्नाङ्गुलीयाङ्कित -

श्रीमद्वाहचतुङ्कसङ्गतगदाशङ्खारिपङ्केरुहाम्।

काङ्किं काङ्कनकाङ्किलाङ्कितलसंपीताम्बरालम्बिनी -

मालम्बे रिमलाङ्गुजद्युतिपदां मूर्तिं तरार्तिच्छिदम् ॥ 2.2 ॥

12

यत्त्रैलोक्यमहीयसोऽपि महितं सम्मोहनं मोहनां

काङ्कं काङ्कनिधानतोऽपि मधुरं माधुर्यधुर्यादपि।

सौन्दर्योत्तरतोऽपि सुन्दरतरं ॐरुद्रपमाश्चर्यतो -

हप्याश्चर्यं डुरने न कस्य कुतुकं पुष्पाति रिषेण रिभो ॥ 2.3 ॥

13

तताद्भ्रधुरात्कं तर रपुंससम्प्राप्य सम्पन्नयी

सा देरी परमोऽसुका चिरतरं नास्ते स्वभक्तेश्वरपि।

तेनास्या वत कष्टमच्युत रिभो ॐरुद्रपमानोज्जक -

प्रेमस्त्रैर्मयादचापलबलाच्चापल्यरार्तोदभू ॥ 2.4 ॥

14

लम्ब्रीस्तारकरामणीयकहृतेरेयं परेश्वरस्थिरे -

त्यस्मिन्नन्यदपि प्रमाणमधुना रङ्ग्यामि लम्ब्रीपते।

- যে ব্রহ্মানুগাণুকীর্তনরসাসক্তা হি ভক্তা জনা -  
 স্তেষেষা রসতি স্থিরৈর দযিতপ্রস্তারদত্তাদরা ॥ 2.5 ॥ 15
- এরন্তুতমনোজ্ঞতানরসুধানিষ্যন্দসন্দোহনং  
 ব্রহ্মপং পরচিদ্রসায়নমযং চেতোহরং শৃংগতাম্।  
 সদ্যঃ প্রেরযতে মতিং মদযতে রোমাঞ্চযত্যঙ্গকং  
 ব্যাসিঞ্চত্যপি শীতবাষ্পরিসরৈরানন্দমূর্ছোদ্রৈঃ ॥ 2.6 ॥ 16
- এরন্তুততযা হি ভক্ত্যভিহিতো যোগঃ স যোগদ্বযাৎ  
 কর্মজ্ঞানমযাদ্ভূশোভমতরো যোগীশ্বরৈর্গীযতে।  
 সৌন্দর্যৈকরসাত্মকে ব্রযি খলু প্রেমপ্রকর্ষাত্মিকা  
 ভক্তির্নিশ্রমমের ব্রিশ্বরপুরুষৈর্লভ্যা রমারল্লভ ॥ 2.7 ॥ 17
- নিষ্কামং নিযতস্বধর্মচরণং যৎ কর্মযোগাভিধং  
 তদুরেত্যফলং যদৌপনিষদজ্ঞানোপলভ্যং পুনঃ।  
 তত্তুর্যজ্ঞতযা সুদুর্গমতরং চিত্তস্য তস্মাদ্বিভো  
 ব্রৎপ্রেমাত্মকভক্তিরের সততং স্বাদীযসী শ্রেযসী ॥ 2.8 ॥ 18
- অত্যাযাসকরাণি কর্মপটলান্যাচর্য নির্যন্মলা  
 বোধে ভক্তিপথেহথরাহপ্যুচিততামাযান্তি কিং তারতা।  
 ক্লিষ্টরা তর্কপথে পরং তর বপুর্ব্রহ্মাখ্যমন্যে পুন -  
 শ্চিত্তার্দ্রব্রমৃতে বিচিন্ত্য বহুভিঃ সিধ্যন্তি জন্মান্তরৈঃ ॥ 2.9 ॥ 19
- ব্রহ্মজ্ঞিস্ত কথারসামৃতঝরীনির্মজ্জনেন স্বযং  
 সিদ্ধ্যন্তী বিমলপ্রবোধপদরীমক্লেশতস্তন্বরতী।  
 সদ্যঃ সিদ্ধিকরী জযত্যযি বিভো সৈরাস্ত মে ব্রৎপদ -  
 প্রেমপ্রৌটিরসার্দ্রতা দ্রুততরং রাতালযাধীশ্বর ॥ 2.10 ॥ 20

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये द्वितीयं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে তৃতীয়ং দশকম্ ॥

ভক্তস্বরূপবর্ণনং ভক্তিপ্রার্থনা চ

পঠন্তো নামানি প্রমদভরসিকৌ নিপতিতাঃ

স্মরন্তো রূপং তে বরদ কথযন্তো গুণকথাঃ।

চরন্তো যে ভক্তাস্ত্বয়ি খলু রমন্তে পরমমু -

নহং ধন্যান্মন্যে সমধিগতসর্বাভিলষিতান্ ॥ 3.1 ॥

21

গদক্লিষ্টং কষ্টং তব চরণসেৱারসভরে -

হপ্যনাসক্তং চিত্তং ভৱতি বত রিষণে কুরু দয়াম্।

ভৱৎপাদান্তোজস্মরণরসিকো নামনিৱহা -

নহং গাযং গাযং কুহচন রিৱৎস্যামি রিজনে ॥ 3.2 ॥

22

কৃপা তে জাতা চেৎ কিমিৱ নহি লভ্যং তনুভূতাং

মদীয়ক্লেশৌঘপ্রশমনদশা নাম কিযতী।

ন কে কে লোকেহস্মিন্ননিশমযি শোকাভিৱহিতা

ভৱদ্ভক্তা মুক্তাঃ সুখগতিমসক্তা রিৱদধতে ॥ 3.3 ॥

23

মুনিপ্রৌঢ়া রুঢ়া জগতি খলু গূঢ়াত্মগতযো

ভৱৎপাদান্তোজস্মরণরিৱুজো নারদমুখাঃ।

চরন্তীশ স্নৈৱং সততপরিৱির্ভাতপৱচি -

ৎসদানন্দাঈৱৈতপ্রসৱপরিমগ্নাঃ কিমপৱম্ ॥ 3.4 ॥

24

ভৱদ্ভক্তিঃ স্ফীতা ভৱতু মম সৈৱ প্রশমযে -

দশেষক্লেশৌঘং ন খলু হৃদি সন্দেহকণিকা।

- न चेद्र्यासस्योक्तिस्तुर च रचनं नैगमरचो  
 भरेन्मिथ्या रथ्यापुरुषरचनप्रायमथिलम् ॥ 3.5 ॥ 25
- भरदुक्तिस्तुरप्रमुखमधुरा वरदगुणरसां  
 किमप्यारुटा चेदथिलपरितापप्रशमनी।  
 पुनश्चात्ते स्वात्ते रिमलपरिवोधोदयमिल -  
 न्महानन्दाद्वैतं दिशति किमतः प्रार्थ्यमपरम् ॥ 3.6 ॥ 26
- रिधुय क्लेशान् मे कुरु चरणयुग्मं धृतरसं  
 भरत्क्लेशप्राप्तौ करमपि च ते पूजनरिधौ।  
 भरन्मूर्त्यालोके नयनमथ ते पादतुलसी -  
 परिघ्राणे घ्राणं शरणमपि ते चारुचरिते ॥ 3.7 ॥ 27
- प्रभूताधिर्याधिप्रसन्नचित्ते मामकहृदि  
 वरदीयं तद्रूपं परमसुखचिद्रूपमुदियां।  
 उदङ्गद्रोमाङ्गे गलितबह्वर्षाश्रुनिरहो  
 यथा रिस्मर्यासं दुरुपशमपीडापरिभरान् ॥ 3.8 ॥ 28
- मरुदोहाधीश वरधि खलु पराङ्गेऽपि सुथिनो  
 भरत्स्नेही सोऽहं सुबह्वं परितप्ये च किमिदम्।  
 अकीर्तिस्ते मा भूद्वरद गदभारं प्रशमयन्  
 भरदुक्तोत्तंसं ऋतिं कुरु मां कंसदमन ॥ 3.9 ॥ 29
- किमुक्तेर्भूयोऽभिस्तुर हि करुणा यारदुदिया -  
 दहं तारद्वेः प्रहितरिधिरिधार्तप्रलपितः।  
 पुरः कुप्ते पादे वरद तव नेष्यामि दिरसान्  
 यथाशक्ति र्यक्तं नतिनुतिनिषेरा रिरचयन् ॥ 3.10 ॥ 30

॥ इति श्रीमन्नारायणीये तृतीयं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুর্থং দশকম্ ॥

অষ্টাঙ্গযোগর্গনং যোগসিদ্ধির্গনং চ

কল্যতাং মম কুরুশ্চ তরতীং

কল্যতে ভরদুপাসনং যযা।

স্পষ্টমষ্টরিধযোগচর্যযা

পুষ্টযাশু তর তুষ্টিমাপ্নুযাম্ ॥ 4.1 ॥

31

ব্রহ্মচর্যদৃঢ়তাডিভির্মৈ -

রাপ্নরাদিনিযমৈশ্চ পারিতাঃ।

কুর্মহে দৃঢ়মমী সুখাসনং

পঙ্কজাদ্যমপি রা ভরৎপরাঃ ॥ 4.2 ॥

32

তারমন্তরনুচিন্ত্য সন্ততং

প্রাণরায়ুমভিযম্য নির্মলাঃ।

ইন্দ্রিয়াণি বিষযাদথাপহ -

ত্যাশ্মহে ভরদুপাসনোন্মুখাঃ ॥ 4.3 ॥

33

অশ্বফুটে রপুষি তে প্রযত্নতো

ধারযেম ধিষণাং মুহর্মুহঃ।

তেন ভক্তিরসমন্তরার্দ্রতা -

মুদ্রহেম ভরদভিঘ্নচিন্তকাঃ ॥ 4.4 ॥

34

বিস্মৃটারযরভেদসুন্দরং

৳রদ্বপুস্সুচিরশীলনারশাৎ।

- अश्रमं मनसि चिन्तयामहे  
 ध्यानयोगनिरतास्त्रुदाश्रयाः ॥ 4.5 ॥ 35
- ध्यायतां सकलमूर्तिमीदृशी -  
 मुन्निषन्मधुरताहतात्मनाम्।  
 सान्द्रमोदरसरूपमात्रुरं  
 ब्रह्मरूपमयि तेहरभासते ॥ 4.6 ॥ 36
- तत्समास्त्रदनरूपिणीं स्थितिं  
 ९रत्समाधिमयि रिश्रनायक।  
 आश्रिताः पुनरतः परिच्युता -  
 रारभेमहि च धारणादिकम् ॥ 4.7 ॥ 37
- इत्थमभ्यसननिर्भरोल्लस -  
 त्रुपरात्सुखकल्लितोत्सराः।  
 मुञ्जुञ्जुकुलमौलितां गताः  
 सङ्करेम शुकनारदादिरत् ॥ 4.8 ॥ 38
- ९रत्समाधिरिजये तु यः पुन -  
 र्मङ्गु मोक्करसिकः क्रमेण रा।  
 योगरश्यामनिलं षडाश्रये -  
 रुन्नयत्यज सुषुम्नया शनैः ॥ 4.9 ॥ 39
- लिङ्गदेहमपि संत्यजन्नथो  
 लीयते ९रयि परे निराग्रहः।  
 उर्ध्वलोककुतुकी तु मूर्धतः  
 सार्धमेव करणैर्निरीयते ॥ 4.10 ॥ 40
- अग्निरासररलर्कपक्कगै -  
 रुत्तरायणजूषा च दैरतैः।

- प्रापितो ररिपदं डरंपरो  
मोदरान् डुरपदान्तमीयते ॥ 4.11 ॥ 41
- आस्थितोहथ महरालये यदा  
शेषरङ्गदहनोष्णगार्दयेते।  
स्यते डरदुपाश्रयस्तदा  
रेधसः पदमतः पुरैर रा ॥ 4.12 ॥ 42
- तत्र रा तत्र पदेहथरा रसन्  
प्राकृतप्रलय एति मुक्तताम्।  
स्नेच्छया खलु पुरा रिमुच्यते  
संरिडिद्य जगदगुमोजसा ॥ 4.13 ॥ 43
- तस्य च स्थितिपयोमहोहनिल -  
दयोमहंप्रकृतिसप्तकारुतीः।  
ततुदात्कतया रिशन् सुथी  
याति ते पदमनारुतं रिडो ॥ 4.14 ॥ 44
- अरिंरादिगतिमीदृशीं ब्रजन्  
रिच्युतिं न डजते जगंपते।  
सक्तिदात्क डरदगुणोदया -  
नुत्तरगुमनिलेश पाहि माम् ॥ 4.15 ॥ 45

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुर्थं दशकं समाप्तम् ॥



শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে পঞ্চমং দশকম্ ॥

রিরাট্ পুরুষোৎপত্তিপ্রকারবর্ণনম্

ব্যক্ত্যব্যক্তমিদং ন কিঞ্চিদভবৎপ্রাকপ্রাকৃতপ্রক্ষযে

মাযাযাং গুণসাম্যরুদ্ধরিকৃতৌ ংরয্যাগতাযাং লযম্।

নো মৃত্যুশ্চ তদাহমৃতং চ সমভূন্নাহো ন রাত্রেঃ স্থিতিঃ

তত্রৈকস্তুমশিষ্যথাঃ কিল পরানন্দপ্রকাশাত্মনা ॥ 5.1 ॥

46

কালঃ কর্মগুণাশ্চ জীরনিরহা রিশ্রং চ কার্যং রিভো

চিল্লীলারতিমেযুষি ংরযি তদা নির্লীনতামাযযুঃ।

তেষাং নৈর বদন্ত্যসত্ত্বমযি ভোঃ শক্ত্যাাত্মনা তিষ্ঠতাং

নো চেৎ কিং গগনপ্রসূনসদৃশাং ভূযো ভরেৎসংভরঃ ॥ 5.2 ॥

47

এরং চ দ্বিপারার্ধকালরিগতা রীক্ষাং সিসৃক্ষাত্মিকাং

বিভ্রাণে ংরযি চুম্বুভে ত্রিভুরনীভারায় মাযা স্বযম্।

মাযাতঃ খলু কালশক্তিরখিলাদৃষ্টং স্বভারোহপি চ

প্রাদুর্ভূয গুণান্নিকাস্য রিদধুস্তস্যাস্সহায়ক্রিয়াম্ ॥ 5.3 ॥

48

মাযাসন্নিহিতোহপ্রিষ্টরপুষা সাক্ষীতি গীতো ভরান্

ভেদৈস্তাং প্রতিবিংবতো রিরিশিরান্ জীরোহপি নৈরাপরঃ।

কালাদিপ্রতিবোধিতাহথ ভরতা সঞ্জেদিতা চ স্বযং

মাযা সা খলু বুদ্ধিতত্ত্বমসৃজদ্যোহসৌ মহানুচ্যতে ॥ 5.4 ॥

49

তত্রাসৌ ত্রিগুণাত্মকোহপি চ মহান্ সত্ত্বপ্রধানঃ স্বযং

জীরেহস্মিন্ খলু নিরিকল্পমহমিত্যদ্বোধনিষ্পাদকঃ।

- चक्रेऽस्मिन् सरिकल्लबोधकमहन्तुत्रुं महान् खल्लसौ  
सम्पुष्टं त्रिगुणैस्तमोऽतिबलं रिषेण भरंप्रेरणां ॥ 5.5 ॥ 50
- सोऽहं च त्रिगुणक्रमां त्रिरिधतामासाद्य रैकारिको  
भूयस्तेजसतामसारिति भरन्नाद्येन सत्त्वात्माना।  
देवानिन्द्रियमानिनोऽकृत दिशारातार्कपाश्यास्त्रिनो  
रहीन्द्राच्युतमित्रकान् रिधुरिधिशीरुद्रशारीरकान् ॥ 5.6 ॥ 51
- भूमन् मानसबुद्ध्यहङ्कृतिमिलच्छिताख्यरुत्पन्नितं  
तच्छान्तःकरणं रिभो तत्र बलां सत्त्वांश एवासृजं।  
जातस्तेजसतो दशेन्द्रियगणस्तन्नामसांशांपुन -  
स्तन्नात्रं नभसो मरुंपुरपते शब्दोऽजनि र्ब्रह्मलां ॥ 5.7 ॥ 52
- शब्दाद्भ्याम ततः ससर्जिथ रिभो स्पर्शं ततो मारुतं  
तस्माद्रूपमतो महोऽथ च रसं तोयं च गन्धं महीम्।  
एवं माधुर्यं पूरंपूरकलनादाद्याद्यधर्मान्नितं  
भूतग्राममिमं रमेर भगवन् प्राकाशयस्तमसां ॥ 5.8 ॥ 53
- एते भूतगणस्तथेन्द्रियगणा देवाश्च जाताः पृथङ् -  
नो शेकुर्भूरनागुनिर्मितिरिधौ देरैरमीभिस्तदा।  
एवं नानारिधसृक्तिभिर्नुतगुणस्तत्त्वान्यमून्यारिशं -  
शेष्ठाशक्तिमुदीर्य तानि घटयन् ह्यैरण्यमणुं र्याधाः ॥ 5.9 ॥ 54
- अणुं तंखलु पूरंसृष्टसलिलेऽतिष्ठं सहस्रं समाः  
निर्भिन्नकृथाश्चतुर्दशजगद्रूपं रिराडाहरयम्।  
साहस्रैः करपादमूर्धनिरहैर्निशेषज्जीरात्त्रको  
निर्भातोऽसि मरुंपुराधिप स मां त्रायस्व सर्वाभयां ॥ 5.10 ॥ 55

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে ষষ্ঠং দশকম্ ॥

বিরাডেদহস্য জগদাত্মৎরর্গনম্

এরং চতুর্দশজগন্মযতাং গতস্য

পাতালমীশ তর পাদতলং বদন্তি।

পাদোর্ধ্বদেশমপি দেব রসাতলং তে

গুল্ফদ্বযং খলু মহাতলমদ্ভুতাত্মন্ ॥ 6.1 ॥

56

জঙ্ঘে তলাতলমথো সুতলং চ জানু

কিঞ্ঝোরুভাগযুগলং ব্রিতলাতলে দ্বে।

ক্ষোণীতলং জঘনমম্বরমঙ্গ নাভি -

ব্রক্ষশ্চ শক্রনিলযস্তর চক্রপাণে ॥ 6.2 ॥

57

গ্রীরা মহস্তর মুখং চ জনস্তপস্ত

ফালং শিরস্তর সমস্তমযস্য সত্যম্।

এরং জগন্মযতনো জগদাশ্রিতৈর -

প্যন্যৈর্নিবন্ধরপুষে ভগরন্ নমস্তে ॥ 6.3 ॥

58

ৎরদ্বক্ষরব্রুপদমীশ্বরর ব্রিশ্বরকন্দ

ছন্দাংসি কেশর ঘনাস্তর কেশপাশাঃ।

উল্লাসি চিল্লিযুগলং দ্রুহিণস্য গেহং

পক্ষ্মাণি রাত্রিদিরসৌ সরিতা চ নেত্রে ॥ 6.4 ॥

59

নিশেষব্রিশ্বররচনা চ কটাক্ষমোক্ষঃ

কর্ণৌ দিশোহশ্রিযুগলং তর নাসিকে দ্বে।

- लोडत्रपे च भगवन्नधरोत्तरोष्ठौ  
 तारागणाश्च दशनाः शमनश्च दंष्ट्रा ॥ 6.5 ॥ 60
- माया विलासहसितं श्रसितं समीरो  
 जिह्वा जलं रचनमीश शकुन्तपङ्क्तिः।  
 सिद्धादयस्स्वरगणा मुखरङ्गमग्नि -  
 देवा भुजाः स्तनयुगं तत्र धर्मदेवः ॥ 6.6 ॥ 61
- पृष्ठं वरधर्म इह देव मनस्सुधांशु -  
 रर्यक्तमेव हृदयाम्बुजमम्बुजाङ्ग।  
 कुम्भिसमुद्रनिरहा रसनं तु सक्त्ये  
 शेषः प्रजापतिरसौ वृषणौ च मित्रः ॥ 6.7 ॥ 62
- श्रीणीश्वलं मृगगणाः पदयोर्नखास्ते  
 हस्त्यष्ट्रसैन्धरमुखा गमनं तु कालः।  
 रिप्रादिरर्णभवनं रदनाञ्जवाह -  
 चारुरुयुग्मचरणं करुणाम्बुधे ते ॥ 6.8 ॥ 63
- संसारचक्रमधि चक्रधर क्रियास्ते  
 वीर्यं महासुरगणोहस्त्रिकुलानि शैलाः।  
 नाड्यस्सरिंसमुदयस्तररश्च रोम  
 जीयादिदं रपुरनिर्चनीयमीश ॥ 6.9 ॥ 64
- ऋद्गजगन्धरपुस्तुर कर्मभाजां  
 कर्मारसानसमये स्मरणीयमाहः।  
 तस्यान्तरात्परपुषे रिमलात्तने ते  
 रातालयाधिप नमोहस्त निरुक्ति रोगान् ॥ 6.10 ॥ 65

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षष्ठं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে সপ্তমং দশকম্ ॥

হিরণ্যগর্ভোৎপত্তিরর্ণনং, হিরণ্যগর্ভতপশ্চরণরর্ণনং,

রৈকুণ্ঠস্বরূপরর্ণনং, ভগবৎস্বরূপসাক্ষাৎকাররর্ণনং,

ভগবদনুগ্রহরর্ণনং চ

এবং দেব চতুর্দশাত্মকজগদ্রূপেণ জাতঃ পুন -

স্তস্যোর্ধ্বং খলু সত্যলোকনিলয়ে জাতোহসি ধাতা স্বয়ম্।

যং শংসন্তি হিরণ্যগর্ভমখিলত্রৈলোক্যজীরাত্মকং

যোহভূৎ স্ফীতরজোরিকাররিকসন্নানাসিসৃক্ষারসঃ ॥ 7.1 ॥

66

সোহযং রিশ্বরিসর্গদত্ত হৃদযঃ সম্পশ্যমানস্বয়ং

বোধং খল্লনরাপ্য রিশ্বরিশ্বযং চিন্তাকুলস্তস্থিরান্।

তারত্বং জগতাং পতে তপতপেত্যেবং হি রৈহাযসীং

রাণীমেনমশিশ্বরঃ শ্রুতিসুখাং কুরংস্তপঃপ্রেরণাম্ ॥ 7.2 ॥

67

কোহসৌ মামবদৎ পুমানিতি জলাপূর্ণে জগন্মণ্ডলে

দিক্ষুদ্বীক্ষ্য কিমপ্যনীক্ষিতরতা রাক্যার্থমুৎপশ্যতা।

দির্যং বর্ষসহস্রমাত্তপসা তেন ব্রহ্মারাধিত -

স্তস্মৈ দর্শিতরানসি স্বনিলযং রৈকুণ্ঠমেকাদ্ভুতম্ ॥ 7.3 ॥

68

মাযা যত্র কদাপি নো রিকুরুতে ভাতে জগদ্ভ্যা বহিঃ

শোকক্রোধরিমোহসাধ্বসমুখা ভারাস্ত দূরং গতাঃ।

সান্দ্রানন্দঝরী চ যত্র পরমজ্যোতিঃ প্রকাশাত্মকে

তত্তে ধাম রিভারিতং রিজযতে রৈকুণ্ঠরূপং রিভো ॥ 7.4 ॥

69

यस्मिन्नाम चतुर्भुजा हरिमणिश्यामारदातंरिषो  
 नानाभूषणरत्नदीपितदिशो राजद्विमानालयाः।  
 भक्तिप्राप्ततथारिधोन्नतपदा दीर्य्यन्ति दिर्या जना -  
 सुते धाम निरस्तसर्शमलं रैकुठरूपं जयेत् ॥ 7.5 ॥ 70

नानादिर्यरधुजनैरभिरूता रिदुल्लतातुल्यया  
 रिशेरान्मादनहृद्यगात्रलतया रिदयोतिताशान्तरा।  
 रंरंपादाम्बुजसौरभैककुतुकाल्लम्बीः स्वयं लम्ब्यते  
 यस्मिन् रिस्मयनीय दिर्य रिभरं तते पदं देहि मे ॥ 7.6 ॥ 71

तत्रैरं प्रतिदर्शिते निजपदे रत्नासनाध्यासितं  
 भास्वरंकोटिलसंकिरीटकटकवाद्याकल्लदीप्रकृति।  
 श्रीरंसान्कितमातृकौस्तुभमणिच्छायारुणं कारणं  
 रिशेरषां तर रूपमैम्बत रिधिस्तते रिभो भातु मे ॥ 7.7 ॥ 72

कालाश्लोदकलायकोमलरुचीचक्रेण चक्रं दिशा -  
 मारुंरानमुदारमन्दहसितस्यन्दप्रसन्नाननम्।  
 राजंकम्बुगदारिपङ्कजधरश्रीमद्भुजाम्बुलं  
 अष्टुस्तुष्टिकरं रपुस्तर रिभो मद्रोगमुद्रासयेत् ॥ 7.8 ॥ 73

दृष्टरा सम्भृतसम्भ्रमः कमलधु -  
 स्त्रुं पादपाथोरुहे  
 हर्षारेशरशंरदो निपतितः  
 प्रीत्या कृतार्थाभरन्।  
 जानास्येर मनीषितं मम रिभो  
 ज्ञानं तदापादय  
 द्वैताद्वैतभरंस्वरूपपरमि -  
 त्याचष्ट तं रंरां भजे ॥ 7.9 ॥ 74

आताम्रे चरणे रिनम्रमथ तं हस्तेन हस्ते स्पर्शन्  
बोधस्ते भरिता न सर्गारिधिभिर्बन्धोऽपि सञ्जायते।  
इत्याभाष्य गिरं प्रतोष्य नितरां तच्छित्तगूढः स्वयं  
सृष्टौ तं समुदैरयः स भगरनुल्लासयोल्लाघताम् ॥ 7.10 ॥

75

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে অষ্টমং দশকম্ ॥

প্রলযরর্ণনং, জগৎসৃষ্টিপ্রকাররর্ণনং চ

এরং তারং প্রাকৃতপ্রক্ষযান্তে

ব্রাহ্মে কল্পে হ্যাদিমে লঙ্কজন্মা।

ব্রহ্মা ভূযস্ত্ত এরাপ্য রেদান্

সৃষ্টিং চক্রে পূর্কল্পোপমানাম্ ॥ 8.1 ॥

76

সোহযং চতুর্য়ুগসহস্রমিতান্যহানি

তারন্মিতাশ্চ রজনীর্বহশো নিনায।

নিদ্রাত্যসৌ ংরযি নিলীয সমং স্বসৃষ্টে -

নৈমিত্তিকপ্রলযমাহরতোহস্য রাত্রিম্ ॥ 8.2 ॥

77

অস্মাদৃশাং পুনরহর্মুখকৃত্যতুল্যাং

সৃষ্টিং করোত্যনুদিনং স ভরংপ্রসাদাৎ।

প্রাপ্ত্রাম্ভকল্পজনাযাং চ পরাযুযাং তু

সুপ্তপ্রবোধনসমাস্তি তদাহপি সৃষ্টিঃ ॥ 8.3 ॥

78

পঞ্চাশদব্দমধুনা স্বরযোর্ধরূপ -

মেকং পরার্থমতিরূত্য হি রর্ততেহসৌ।

তত্রান্ত্যরাত্রিজনিতান্ কথযামি ভূমন্

পশ্চাদ্দিনারতরণে চ ভরদ্বিলাসান্ ॥ 8.4 ॥

79

দিনারসানেহথ সরোজযোনিঃ

সুষুপ্তিকামস্ত্রযি সন্মিলিল্যে।



- जगन्ति च ऋज्जठरं समीयु -  
 सुदेदमेकार्णरमास रिश्रम् ॥ 8.5 ॥ 80
- तैरैर रेषे फणिराजि शेषे  
 जलैकशेषे डुरने स्म शेषे।  
 आनन्दसान्द्रानुडरस्वरूपः  
 स्वयोगनिद्रापरिमुद्रितात्मा ॥ 8.6 ॥ 81
- कालाख्यशक्तिं प्रलयासने  
 प्रबोधयेत्यादिशता किलादौ।  
 ऋया प्रसुप्तं परिसुप्तशक्ति -  
 ब्रजेन तत्राखिलजीरधाम्ना ॥ 8.7 ॥ 82
- चतुर्गुणां च सहस्रमेरं  
 ऋयि प्रसुप्ते पुनरद्वितीये।  
 कालाख्यशक्तिः प्रथमप्रबुद्धा  
 प्राबोधयत्त्वां किल रिश्रनाथ ॥ 8.8 ॥ 83
- रिवुध्य च ऋं जलगर्भशायिन्  
 रिलोक्य लोकानखिलान् प्रलीनान्।  
 तेषैर सुम्भ्यात्तया निजास्तः -  
 स्थितेषु रिश्रेषु ददाथ दृष्टिम् ॥ 8.9 ॥ 84
- ततस्त्रदीयादयि नाभिरक्त्रा -  
 दूदक्षितं किष्णं दिर्यपद्मम्।  
 निलीननिशेषपदार्थमाला -  
 सङ्केपरूपं मुकुलायमानम् ॥ 8.10 ॥ 85
- तदेतदञ्जोरुहकुड्मलं ते  
 कलेवरां तोयपथे प्ररुचम्।

- बहिर्निरितं परितः स्फुरन्तिः  
स्वधामभिर्ध्रान्तमलं न्यकुन्तं ॥ 8.11 ॥ 86
- सम्फुल्लपत्रे नितरां रिचित्रे  
तस्मिन् भरद्वायधृते सरोजे ।  
स पद्मजन्मा रिधिरारिरासीं  
स्वयम्प्रबुद्धाखिलरेदराशिः ॥ 8.12 ॥ 87
- अस्मिन् परात्नन् ननु पाद्मकण्ठे  
रमिन्मुखापितपद्मयोनिः ।  
अनन्तदुमा मम रोगराशिं  
निरुक्तिं रातालयरस रिषेण ॥ 8.13 ॥ 88

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये नरमं दशकम् ॥

জগৎসৃষ্টিপ্রকাররণনম্

স্থিতঃ স কমলোদ্ভরস্তর হি নাভিপঙ্কেরুহে  
কুতস্বিদিদমম্বুধারুদিতমিত্যনালোকযন্।  
তদীক্ষণকুতুহলাৎ প্রতিদিশং রিবৃত্তানন -  
শচতুর্দনতামগাদ্বিকসদষ্টদৃষ্ট্যম্বুজাম্ ॥ 9.1 ॥

89

মহার্ণরিরিঘূর্ণিতং কমলমের তৎ কেবলং  
রিলোক্য তদুপাশ্রযং তর তনুং তু নালোকযন্।  
ক এষ কমলোদরে মহতি নিস্সহাযো হ্যহং  
কুতঃ স্বিদিদমম্বুজং সমজনীতি চিন্তামগাৎ ॥ 9.2 ॥

90

অমুষ্য হি সরোরুহঃ কিমপি কারণং সম্বরে -  
দিতি স্ম কৃতনিশ্চযস্স খলু নালরন্ধ্রাধ্রনা।  
স্বযোগবলরিদ্যযা সমররুচরান্ প্রৌচধী -  
স্তুদীযমতিমোহনং ন তু কলেবরং দৃষ্টরান্ ॥ 9.3 ॥

91

ততস্সকলনালিকারিরমার্গগো মার্গযন্  
প্রযস্য শতরৎসরং কিমপি নৈর সন্দৃষ্টরান্।  
নিবৃত্ত্য কমলোদরে সুখনিষণ্ণ একাগ্রধীঃ  
সমাধিবলমাদধে ভরদনুগ্রহৈকাগ্রহী ॥ 9.4 ॥

92

শতেন পরিবৎসরৈর্দৃচসমাধিবন্ধোল্লসৎ -  
প্রবোধরিশদীকৃতস্স খলু পদ্মিনীসম্বরঃ।

- अदृष्टचरमद्भुतं तर हि रूपमस्तुर्दृशा  
 र्यचष्ट परितुष्टधीर्भुजगभोगभागाश्रयम् ॥ 9.5 ॥ 93
- किरीटमकुटोल्लसत्कटकहारकेयूरयुग् -  
 मणिस्फुरितमेखलं सुपरिरीतपीताम्बरम्।  
 कलायकुसुमप्रभङ्गलतलोल्लसत्कौस्तुभङ्  
 रपुस्तदधि भारये कमलजन्मने दर्शितम् ॥ 9.6 ॥ 94
- श्रुतिप्रकरदर्शितप्रचुररैभर श्रीपते  
 हरे जय जय प्रभो पदमुपैषि दिष्ट्या दृशोः।  
 कुरूष्ण धियमाशु मे भुरननिर्मितौ कर्मठा -  
 मिति द्रुहिणरर्णितस्त्रगुणवंहिमा पाहि माम् ॥ 9.7 ॥ 95
- लभस्त्र भुरनत्रयीरचनदम्भतामम्भतां  
 गृहाण मदनुग्रहं कुरू तपश्च भूयो रिधे।  
 भ्रंरखिलसाधनी मयि च भक्तिरतुत्येकटे -  
 त्तुदीर्य गिरमादधा मुदितचेतसं रेधसम् ॥ 9.8 ॥ 96
- शतं कृततपास्ततस्स खलु दिर्यसंरंसरा -  
 नराप्य च तपोबलं मतिबलं च पूर्वाधिकम्।  
 उदीक्ष्य किल कम्पितं पयसि पङ्कजं रायुना  
 भ्रद्वलरिजृम्भितः परनपाथसी पीतरान् ॥ 9.9 ॥ 97
- तत्रैर कृपया पुनस्सरसिजेन तेनैर सः  
 प्रकल्प्य भुरनत्रयीं प्ररवृते प्रजानिर्मितौ।  
 तथारिधकृपाभरो गुरुमरुत्पुराधीश्वर  
 रमाशु परिपाहि मां गुरुदयोम्भितैरीम्भितैः ॥ 9.10 ॥ 98

॥ इति श्रीमन्नारायणीये नरमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে দশমং দশকম্ ॥

### সৃষ্টিভেদবর্ণনম্

রৈকুণ্ঠ বর্ধিতবলোহথ ভরংপ্রসাদা -

দম্ভোজযোনিসৃজৎ কিল জীরদেহান্।

স্বাস্থুনি ভুরুহমযানি তথা তিরশ্চাং

জাতীর্মনুষ্যানিরহানপি দেবভেদান্ ॥ 10.1 ॥

99

মিথ্যাগ্রহাস্মিমতিরাগরিকোপভীতি -

রজ্ঞানবৃত্তিমিতি পঞ্চরিধাং স সৃষ্টরা।

উদামতামসপদার্থরিধানদূন -

স্তেনে ৎরদীযচরণস্মরণং রিশুদ্বৈদ্যে ॥ 10.2 ॥

100

তারং সসর্জ মনসা সনকং সনন্দং

ভূযস্সনাতনমুনিং চ সনৎকুমারম্।

তে সৃষ্টিকর্মণি তু তেন নিযুজ্যমানা

স্বৎপাদভক্তিৱসিকা জগৃহ্ন রাণীম্ ॥ 10.3 ॥

101

তারং প্রকোপমুদিতং প্রতিরুন্ধতোহস্য

ক্রমধ্যতোহজনি মৃডো ভরদেকদেশঃ।

নামানি মে কুরু পদানি চ হা রিরিঞ্চে -

ত্যাদৌ রুরোদ কিল তেন স রুদ্রনামা ॥ 10.4 ॥

102

একাদশাহ্রযতযা চ রিভিন্নরূপং

রুদ্রং রিধায দযিতা রনিতাশ্চ দৎরা।

- तारुण्यदत्तं च पदानि भरुप्रणुः  
 प्राह प्रजारिरचनाय च सादरं तम् ॥ 10.5 ॥ 103
- रुद्राभिसृष्टभयदाकृतिरुद्रसङ्घ -  
 सम्पूर्णमाण्डुरनत्रयतीतचेताः ।  
 मा मा प्रजाः सृज तपश्चर मङ्गलाये -  
 त्याचष्ट तं कमलदूर्भदीरिताया ॥ 10.6 ॥ 104
- तस्याथ सर्गरसिकस्य मरीचिरत्रि -  
 सुत्राङ्गिराः क्रतुमुनिः पुलहः पुलस्त्यः ।  
 अङ्गादजायत भृगुश्च रसिष्ठदक्षौ  
 श्रीनारदश्च भगरान् भरदङ्घ्रिदासः ॥ 10.7 ॥ 105
- धर्मादिकानभिसृजन्नथ कर्दमं च  
 राणीं रिधाय रिधिरङ्गजसङ्कुलोहदुः ।  
 रद्वोधि तैस्सनकदक्षमुखैस्तनूजै -  
 रुद्वोधितश्च रिरराम तमो रिमुष्णन् ॥ 10.8 ॥ 106
- रेदान् पुराणनिरहानपि सर्वरिद्याः  
 कुरन् निजाननगणात्तुराननोहसौ ।  
 पुत्रेषु तेषु रिनिधाय स सर्गरुद्धि -  
 मप्रान्पुरंस्तर पदाम्बुजमाप्रितोहदुः ॥ 10.9 ॥ 107
- जाननुपायमथ देहमजो रिभज्य  
 स्त्रीपुंसभारमभजन्नुतद्बुध्याम् ।  
 ताभ्यां च मानुषकुलानि रिरर्धयंस्त्रुं  
 गोरिन्द मारुतपुरेश निरुक्चि रोगान् ॥ 10.10 ॥ 108

॥ इति श्रीमन्नारायणीये दशमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে একাদশং দশকম্ ॥

সনকাদীনাং রৈকুণ্ঠপ্রবেশবর্ণনং, জয়বিজয়শাপবর্ণনং,  
হিরণ্যকশিপুহিরণ্যাক্ষোৎপত্তিবর্ণনং চ

ক্রমেণ সর্গে পরিবর্ধমাণে

কদাপি দিব্যাস্তসনকাদযস্তে।

ভরদ্বিলোকায রিকুণ্ঠলোকং

প্রবেদিরে মারুতমন্দিরেশ ॥ 11.1 ॥

109

মনোজ্ঞনৈশ্রেয়সকাননাদ্যৈ -

রনেকরাপীমণিমন্দিরৈশ্চ।

অনোপমং তং ভরতো নিকেতং

মুনীশ্বররাঃ প্রাপুরতীতকক্ষ্যাঃ ॥ 11.2 ॥

110

ভরদ্বিদৃক্ষুন্ডবরনং রিরিক্ষুন্

দ্বাঃস্টৌ জয়স্তান্ বিজযোহপ্যরুক্ষাম্।

তেষাং চ চিত্তে পদমাপ কোপঃ

সর্বং ভরৎপ্রেরণযৈর ভূমন্ ॥ 11.3 ॥

111

রৈকুণ্ঠলোকানুচিতপ্রবেষ্টৌ

কষ্টৌ যুরাং দৈত্যগতিং ভজেতম্।

ইতি প্রশস্তৌ ভরদাশ্রযৌ তৌ

হরিস্মৃতির্নোহস্ত্বিতি নেমতুস্তান্ ॥ 11.4 ॥

112

তদেতদাজ্জায় ভরানরাপ্তঃ

সহৈর লক্ষ্ম্যা বহিরম্বুজাক্ষ।

खगेश्वरांसार्पितचारुबाहू -

रानन्दयंस्तानभिराममूर्त्या ॥ 11.5 ॥

113

प्रसाद्य गीर्भिः स्मरतो मुनीन्द्रा -

ननन्याथारथ पार्षदौ तौ।

संरञ्जयोगेन भ्रैस्त्रिभिर्मा -

मुपेतमित्यातुकृपं न्यगादीः ॥ 11.6 ॥

114

एरदीयभृत्यारथ काश्यपात्तौ

सुरारिरीरारुदितौ दितौ द्वौ।

सक्त्यासमुत्पादनकष्टचेष्टौ

यमौ च लोकस्य यमारिरान्यौ ॥ 11.7 ॥

115

हिरण्यपूरः कशिपुः किलैकः

परौ हिरण्यम् इति प्रतीतः।

उभौ भरन्नाथमशेषलोकं

रुषा न्यरुक्त्वां निजरासनाक्षौ ॥ 11.8 ॥

116

तयोर्हिरण्यम्महासुरेन्द्रो

रणाय धारन्नरापुत्रैरी।

भरंप्रियां म्हां सलिले निमज्य

चचार गर्गाद्विनदन् गदारान् ॥ 11.9 ॥

117

ततो जलेशां सदृशं भरञ्जं

निशम्य बभ्राम गरेषयञ्जाम्।

भक्तैकदृश्यः स कृपानिधे एरं

निरुक्त्वि रोगान् मरुदालयेष ॥ 11.10 ॥

118

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकादशं दशकं समाप्तम् ॥



শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये द्वादशं दशकम् ॥

ররাহারতারর্গনং, ভুম্যুঙ্করণর্গনং চ

স্বাযন্তুরো মনুরথো জনসর্গশীলো

দৃষ্টরা মহীমসময়ে সলিলে নিমগ্নাম্।

শ্রষ্টারমাপ শরণং ভরদভিঘ্রসেরা -

তুষ্টাশযং মুনিজনৈঃ সহ সত্যলোকে ॥ 12.1 ॥

119

কষ্টং প্রজাঃ সৃজতি ময্যরনির্নিমগ্না

স্থানং সরোজভর কল্পয তৎপ্রজানাম্।

ইত্যেরমেষ কথিতো মনুনা স্বযন্তু -

রশ্তোরুহাঙ্ক তর পাদযুগং র্যচিন্তীৎ ॥ 12.2 ॥

120

হা হা রিভো জলমহং ন্যপিবং পুরস্তা -

দদ্যাপি মজ্জতি মহী কিমহং করোমি।

ইৎং ৎরদভিঘ্রযুগলং শরণং যতোহস্য

নাসাপুটাৎ সমভরঃ শিশুকোলরূপী ॥ 12.3 ॥

121

অস্মুষ্ঠমাত্রপুরুৎপতিতঃ পুরস্তাৎ

ভূযোহথ কুস্তিসদৃশঃ সমজৃম্বথাস্ত্বম্।

অভ্রে তথারিধমুদীক্ষ্য ভরন্তমুচ্চে -

রিস্মেরতাং রিধিরগাৎ সহ সুনুভিঃ স্মৈঃ ॥ 12.4 ॥

122

কোহসারচিন্ত্যমহিমা কিটিরুখিতো মে

নাসাপুটাৎ কিমু ভরেদজিতস্য মাযা।

- इत्थं रिचिन्तयति धातरि शैलमात्रः  
 सदयो भरन् किल जगर्जिथ घोरघोरम् ॥ 12.5 ॥ 123
- तं ते निनादमुपकर्ण्य जनस्तपःस्थाः  
 सत्यस्थिताश्च मुनयो नुनुरुर्भरन्तम्।  
 तत्स्रोत्रहर्षुलमनाः परिणद्य भूय -  
 स्तोयाशयं रिपुलमूर्तिररातरञ्जम् ॥ 12.6 ॥ 124
- उर्ध्वप्रसारिपरिधुम्नरिधूतरोमा  
 प्रोत्क्षिप्तबालधिरराङ्गुखघोरघोणः।  
 तूर्णप्रदीर्णजलदः परिघूर्णदम्भा  
 स्तोतृन् मुनीन् शिशिरयन्नरतेरिथ ंरम् ॥ 12.7 ॥ 125
- अन्तर्जलं तदनुसङ्गुलनक्रचक्रं  
 द्राम्यतिमिङ्गिलकुलं कलुषोर्मिमालम्।  
 आरिश्य भीषणररेण रसातलस्था -  
 नाकम्पयन् रसुमतीमगरेषयञ्जम् ॥ 12.8 ॥ 126
- दृष्टराहथ दैत्यहतकेन रसातलास्ते  
 संरेशितां ऋतिति कूटकिटिर्बिभो ंरम्।  
 आपातुकानरिगणय्य सुरारिखेटान्  
 दंष्ट्राङ्गुरेण रसुधामदधाः सलीलम् ॥ 12.9 ॥ 127
- अभ्युद्धरन्नथ धरां दशनाग्रलग्न -  
 मुस्ताङ्गुराङ्कित इराधिकपीररात्मा।  
 उद्धूतघोरसलिलाज्जलधेरुदङ्गन्  
 क्रीडारराहरपुरीश्वर पाहि रोगां ॥ 12.10 ॥ 128

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्वादशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে ত্রয়োদশং দশকম্ ॥

হিরণ্যাক্ষরধরণনম্

হিরণ্যাক্ষং তারদ্বরদ ভরদন্বেষণপরং

চরন্তং সাংরতে পযসি নিজজঙ্ঘাপরিমিতে।

ভরদ্বক্তো গংরা কপটপটুধীর্নারদমুনিঃ

শনৈরুচে নন্দন্ দনুজমপি নিন্দংস্তর বলম্ ॥ 13.1 ॥

129

স মাযারী রিষুংহরতি ভরদীয়াং রসুমতীং

প্রভো কষ্টং কষ্টং কিমিদমিতি তেনাভিগদিতঃ।

নদন্ ক্লাসৌ ক্লাসারিতি স মুনিনা দর্শিতপথো

ভরন্তং সম্প্রাপদ্ধরণিধরমুদ্যন্তমুদকাৎ ॥ 13.2 ॥

130

অহো আরণ্যোহযং মৃগ ইতি হসন্তং বহুতরৈ -

দুরুজৈর্বিধ্যন্তং দিতিসুতমরজ্জায় ভগরন্।

মহীং দৃষ্টরা দংষ্ট্রাশিরসি চকিতাং স্নেন মহসা

পযোধারাধায় প্রসভমুদযুঙ্কথা মৃধরিধৌ ॥ 13.3 ॥

131

গদাপাণৌ দৈতেৎ ৎরমপি হি গৃহীতোন্নতগদো

নিযুদ্ধেন ক্রীডন্ ঘটঘটররোদঘুষ্টরিযতা।

রণালোকৌৎসুক্যান্মিলতি সুরসঙ্ঘে দ্রুতমমুং

নিরুঙ্ক্যাস্সঙ্ক্যাতঃ প্রথমমিতি ধাত্রা জগদিষে ॥ 13.4 ॥

132

গদোন্নর্দে তস্মিংস্তর খলু গদায়াং দিতিভুরো

গদাঘাতাদ্ধুমৌ ঝটিতি পতিতায়ামহহ ! ভোঃ !!

- मृदुस्मेरास्यस्त्रुं दनुजकुलनिर्मूलनचणं  
 महाचक्रं स्मृत्वा करभुरि दधानो रुरुचिषे ॥ 13.5 ॥ 133
- ततः शूलं कालप्रतिमरुषि दैते रिसृजति  
 र्शुषि छिन्दतेनं करकलितचक्रप्रहरणां।  
 समारुष्टो मुष्ट्या स खलु रितुदंस्त्रां समतनो  
 गलन्याये मायास्त्रुषि किल जगन्नोहनकरीः ॥ 13.6 ॥ 134
- भरुचक्रज्योतिष्कणलरनिपातेन रिधुते  
 ततो मायाचक्रे रिततघनरोषाक्कमनसम्।  
 गरिष्ठाभिर्मुष्टिप्रहृतिभिरभिघ्नन्तमसुरं  
 स्वपादास्रुष्टेन शरणपदमूले निररधीः ॥ 13.7 ॥ 135
- महाकायस्सेसाहयं तर चरणपातप्रमथितो  
 गलद्रक्तो रज्ज्वादपतदृषिभिः श्लाघितहतिः।  
 तदा र्नामुदामप्रमदभररिद्योतिहृदया  
 मुनीन्द्रास्सान्द्राभिः स्तुतिभिरनुरन्नध्ररतनुम् ॥ 13.8 ॥ 136
- र्शुचि छन्दो रोमस्त्रुपि कुशगणश्चम्बुषि घृतं  
 चतुर्होतारोहृष्टौ स्त्रुगपि रदने चोदर ईडा।  
 ग्रहा जिह्वायां ते परपुरुष कर्णे च चमसा  
 रिभो सोमो रीर्यं ररद गलदेशेहप्युपसदः ॥ 13.9 ॥ 137
- मुनीन्द्रैरित्यादिसुरनमुखरैर्मोदितमना  
 महीयस्या मूर्त्या रिमलतरकीर्त्या च रिलसन्।  
 स्वधिष्यं सम्प्राप्तः सुखरसरिहारी मधुरिपो  
 निरुक्त्या रोगं मे सकलमपि रातालषपते ॥ 13.10 ॥ 138

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रयोदशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুর্দশং দশকম্ ॥

কপিলোপাখ্যানম্

সমনুস্মৃততারকাভিঘ্নযুগ্মঃ

স মনুঃ পঙ্কজসম্ভরাস্তজন্মা।

নিজমন্তরমন্তরায়হীনং

চরিতং তে কথয়ন্ সুখং নিনায ॥ 14.1 ॥

139

সময়ে খলু তত্র কর্দমাখ্যা

দ্রুহিণচ্ছাযভরস্তদীযরাচা।

ধৃতসর্গরসো নিসর্গরম্যং

ভগবৎস্লামযুতং সমাঃ সিষেরে ॥ 14.2 ॥

140

গরুডোপরি কালমেঘকম্পং

বিলসৎকেলিসরোজপাণিপদম্।

হসিতোল্লসিতাননং রিভো ব্রং

বপুরারিষ্কুরুষে স্ম কর্দমায ॥ 14.3 ॥

141

স্তুরতে পুলকার্বুতায় তস্মৈ

মনুপুত্রীং দযিতাং নরাপি পুত্রীঃ।

কপিলং চ সুতং স্বমের পশ্চাৎ

স্বগতিং চাপ্যনুগৃহ্য নির্গতোহভূঃ ॥ 14.4 ॥

142

স মনুশ্শতরূপযা মহিষ্যা

গুণবত্যা সুতযা চ দেবহৃত্যা।

ভরদীরিতনারদোপদিষ্টঃ

সমগাৎ কর্দমমাগতিপ্রতীক্ষম্ ॥ 14.5 ॥

143

মনুনোপহতাং চ দেরহুতিং

তরুণীরত্নমরাপ্য কর্দমোহসৌ।

ভরদর্চননির্ভূতোহপি তস্যাং

দৃশুশ্রষণয়া দধৌ প্রসাদম্ ॥ 14.6 ॥

144

স পুনস্ত্ৰুদুপাসনপ্রভারা -

দধিতাকামকৃতে কৃতে রিমানৈ।

রনিতাকুলসঙ্কুলো নরাত্মা

র্যহরদেৱপথেষু দেৱহুত্যা ॥ 14.7 ॥

145

শতৱর্ষমথ র্যতীত্য সোহযং

নর কন্যাঃ সমরাপ্য ধন্যরূপাঃ।

রনযানসমুদ্যতোহপি কাল্পা -

হিতকৃৎ ৱরজ্জননোৎসুকো ন্যরাৎসীৎ ॥ 14.8 ॥

146

নিজভর্তৃগিরা ভরনিষেরা -

নিরতায়ামথ দেৱ দেৱহুত্যাং।

কপিলস্ত্ৰুমজাযথা জনানাং

প্রথযিষ্যন্ পরমাত্মতত্ত্বরিদ্যাম্ ॥ 14.9 ॥

147

রনমেযুষি কর্দমে প্রসন্নে

মতসর্ৱস্বমুপাদিশন্ জনন্যৈ।

কপিলাত্মক রাযুমন্দিরেশ

ৱররিতং ৱরং পরিপাহি মাং গদৌঘাৎ ॥ 14.10 ॥

148

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये चतुर्दशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ  
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে পঞ্চদশং দশকম্ ॥ কপিলোপদেশম্

- মতিরিহ গুণসক্তা বন্ধকৃত্তেত্রসক্তা  
ত্রমৃতকৃদুপরুন্ধে ভক্তিযোগস্ত সক্তিম্।  
মহদনুগমলভ্যা ভক্তিরেত্রা সাধ্যা  
কপিলতনুরিতি ত্রং দেরহুত্য়ে ন্যাগাদীঃ ॥ 15.1 ॥ 149
- প্রকৃতিমহদহঙ্কারাশ্চ মাত্রাশ্চ ভূতা -  
ন্যপি হৃদপি দশাঙ্কী পুরুষঃ পঞ্চত্রিশং।  
ইতি রিদিত্রিভাগো মুচ্যতেহসৌ প্রকৃত্যা  
কপিলতনুরিতি ত্রং দেরহুত্য়ে ন্যাগাদীঃ ॥ 15.2 ॥ 150
- প্রকৃতিগতগুণৌঘৈর্নাজ্যতে পুরুষোহযং  
যদি তু সজতি তস্যং তদগুণাস্তং ভজেরন্।  
মদনুভজনতত্ত্বালোচনৈঃ সাহপ্যেপেযাং  
কপিলতনুরিতি ত্রং দেরহুত্য়ে ন্যাগাদীঃ ॥ 15.3 ॥ 151
- রিমলমতিরুপাত্তৈরাসনাদৈর্মদঙ্গং  
গরুডসমধিরুচং দির্যভূষাযুধাঙ্কম্।  
রুচিতুলিততমালং শীলযেতানুরেলং  
কপিলতনুরিতি ত্রং দেরহুত্য়ে ন্যাগাদীঃ ॥ 15.4 ॥ 152
- মম গুণগণলীলাকর্ণনৈঃ কীর্তনাদৈঃ  
মযি সুরসরিদোঘপ্রখ্যচিত্তানুবৃত্তিঃ।

- ভরতি পরমভক্তিঃ সা হি মৃত্যোর্বিজেরী  
কপিলতনুরিতি ৳রং দেৱহুতৈ ন্যাগাদীঃ ॥ 15.5 ॥ 153
- অহহ বহ্লহিংসাসঙ্কিতার্থৈঃ কুটুম্বং  
প্রতিদিনমনুপুষ্পন্ স্ত্রীজিতো বাললালী।  
ব্রিশতি হি গৃহসক্তো যাতনাং ময্যভক্তঃ  
কপিলতনুরিতি ৳রং দেৱহুতৈ ন্যাগাদীঃ ॥ 15.6 ॥ 154
- যুরতিজঠরখিন্নো জাতবোধোহপ্যকাণ্ডে  
প্রসরগলিতবোধঃ পীডযোল্লঙ্ঘ্য বাল্যম্।  
পুনরপি বত মুহ্যত্ৱেৱ তারুণ্যকালে  
কপিলতনুরিতি ৳রং দেৱহুতৈ ন্যাগাদীঃ ॥ 15.7 ॥ 155
- পিতৃসুরগণযাজী ধার্মিকো যো গৃহস্থঃ  
স চ নিপততি কালে দক্ষিণাধ্বরোপগামী।  
মযি নিহিতমকামং কর্মতুদকপথার্থং  
কপিলতনুরিতি ৳রং দেৱহুতৈ ন্যাগাদীঃ ॥ 15.8 ॥ 156
- ইতি সুরিদিত রেদ্যাং দেৱ হে দেৱহুতিং  
কৃতনুতিমনুগৃহ্য ৳রং গতো যোগিসঙ্ঘৈঃ।  
ব্রিমলমতিরথাহসৌ ভক্তিযোগেন মুক্তা  
৳রমপি জনহিতার্থং রতসে প্রাগুদীচ্যাম্ ॥ 15.9 ॥ 157
- পরম কিমু বহুক্ত্যা ৳রৎপদাম্ভোজভক্তিং  
সকলভযরিনেত্রীং সর্ৱকামোপনেত্রীম্।  
বদসি খলু দৃঢং ৳রং তদ্বিধুযামযান্ মে  
গুরুপরনপুরেশ ৳রয্যুপাধৎস্ব ভক্তিম্ ॥ 15.10 ॥ 158

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये पञ्चदशं दशकं समाप्तम् ॥



শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये षोडशं दशकम् ॥

नरनारायणारतारर्णनं, दक्षयागर्णनं च

दक्ष्णा रिरिङ्गतनयोहथ मनोस्तनूजां

लङ्करा प्रसूतिमिह षोडश चाप कन्याः।

धर्मे त्रयोदश ददौ पितृषु स्वधां च

स्वाहां हरिर्भुजि सतीं गिरिशे व्रदंशे ॥ 16.1 ॥

159

मूर्तिर्हि धर्मगृहिणी सुषुरे भरुतं

नारायणं नरसखं महितानुभारम्।

यज्जन्मनि प्रमुदिताः कृततूर्यघोषाः

पुष्पाङ्करान् प्ररश्नुर्नुनुः सुरौघाः ॥ 16.2 ॥

160

दैत्यं सहस्रकरचं करचैः परीतं

साहस्ररंसरतपस्समराभिलर्यैः।

पर्यायनिर्मिततपस्समरौ भरुतौ

शिष्टैककङ्कटममुं न्यहतां सलीलम् ॥ 16.3 ॥

161

अन्नाचरन्नुपदिशन्नपि मोक्षधर्मं

व्रं ड्रातृमान् बदरिकाश्रममध्यरांसिः।

शक्रोहथ ते शमतपोबलनिस्सहात्मा

दिर्याङ्गनापरिवृतं प्रजिघाय मारम् ॥ 16.4 ॥

162

कामो रसस्तुमलयानिलबन्धुशाली

कान्ताकटाक्षरिशिथैर्रिकसद्विलासैः।

- रिध्यान्मुहूर्मुहूरकम्पमुदीक्ष्य च एरां  
 डीरुङ्गुयाहथ जगदे म्दुहासडाना ॥ 16.5 ॥ 163
- डीत्याहलमङ्गज रसन्त सुराङ्गना रो  
 मन्मानसं एरिह जुषध्रमिति क्रुराणः।  
 एरं रिस्मयेन परितः स्तुरतामथैषां  
 प्रादर्शयः स्वरिचारक कातराङ्गीः ॥ 16.6 ॥ 164
- सम्मोहनाय मिलिता मदनदयस्ते  
 एरुदासिकापरिमलैः किल मोहमापुः।  
 दन्तां एरया च जगृह्णपयैर सर -  
 स्वर्रासिगर्शमनीं पुनरुर्शीं ताम् ॥ 16.7 ॥ 165
- दृष्टेरारशीं तर कथां च निशम्य शक्रः  
 पर्याकुलोहजनि डरन्महिमारमर्शां।  
 एरं प्रशान्तरमणीयतरारतारां  
 एरतोहधिको ररद कृषतनुस्त्रुमेर ॥ 16.8 ॥ 166
- दङ्गुस्तु धातुरतिलालनया रजोहक्को  
 नात्यादृतङ्गुयि च कष्टमशान्तिरासीं।  
 येन र्यरुक्क स डरतनुमेर शर्ं  
 यङ्गे च रैरपिशुने स्त्रुतां र्यामानीं ॥ 16.9 ॥ 167
- क्रुद्धेशमर्दितमथः स तु कृत्तशीर्षो  
 देरप्रसादितहरादथ लङ्गुजीरः।  
 एरंपुरितक्रतुररः पुनराप शान्तिं  
 स एरं प्रशान्तिकर पाहि मरुंपुरेश ॥ 16.10 ॥ 168

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षोडशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে সপ্তদশং দশকম্ ॥

ধ্বরচরিতর্গনম্

উত্তানপাদনূপতের্মনুনন্দনস্য

জাযা বভূর সুরুচির্নিতরামভীষ্টা।

অন্যা সুনীতিরিতি ভর্তুরনাদৃতা সা

৳রামের নিত্যমগতিঃ শরণং গতাহভূৎ ॥ 17.1 ॥

169

অঙ্কে পিতুস্সুরুচিপুত্রকমুত্তমং তং

দৃষ্টরা ধ্বরঃ কিল সুনীতিসুতোহধিরোক্ষ্যন্।

আচিক্ষিপে কিল শিশুঃ সুতরাং সুরুচ্যা

দুস্সন্ত্যজা খলু ভরদ্বিমুখৈরসূযা ॥ 17.2 ॥

170

৳রম্মোহিতে পিতরি পশ্যতি দাররশ্যে

দূরং দুরুক্তিনিহতঃ স গতো নিজাম্বাম্।

সাহপি স্বকর্মগতিসন্তরণায় পুংসাং

৳রংপাদমের শরণং শিশরে শশংস ॥ 17.3 ॥

171

আকর্গ্য সোহপি ভরদর্চননিশ্চিতাত্মা

মানী নিরেত্য নগরাৎ কিল পঞ্চরর্ষঃ।

সন্দৃষ্টনারদনিরেদিতমন্ত্রমার্গঃ

৳রামাররাধ তপসা মধুকাননান্তে ॥ 17.4 ॥

172

তাতে ঝিষগ্নহৃদযে নগরীং গতেন

শ্রীনারদেন পরিসান্বিতচিত্তবৃত্তৌ।

बालञ्जुदर्पितमनाः क्रमर्धितेन निन्ये कठोरतपसा किल पञ्चमासान् ॥ 17.5 ॥	173
तारुतपोबलनिरुच्छ्रसिते दिगन्ते देरार्थितञ्जुमुदयङ्करुणार्द्रचेताः। एरद्रुपचिद्रसनिलीनमतेः पुरस्ता - दारिर्बभूरिथ रिभो गरुडाधिकृतः ॥ 17.6 ॥	174
एरदर्शनप्रमदभारतरङ्गितं तं दृग्भ्यां निमग्नमिर रूपरसायने ते। तुष्टुषमाणमरगम्य कपोलदेशे संस्पृष्टरानसि दरेण तथाहदरेण ॥ 17.7 ॥	175
तारुद्विबोधरिमलं प्रणुरन्तमेन - माभाषथाञ्जुमरगम्य तदीयभारम्। राज्यं चिरं समनुभूय भजस्व भूयः सर्षोत्तरं क्षुर पदं रिनिर्भृतिहीनम् ॥ 17.8 ॥	176
इत्युचिषि एरुषि गते नृपनन्दनोऽसा - रानन्दिताखिलजनो नगरीमुपेतः। रेमे चिरं भरदनुग्रहपूर्णकामः ताते गते च रनमादृतराज्यभारः ॥ 17.9 ॥	177
यक्शेण देर निहते पुनरुत्तमेऽस्मिन् यक्शेः स युद्धनिरतो रिरतो मनूज्या। शान्त्या प्रसन्नहृदयाङ्कनदादुपेतां एरुद्रुक्तिमेर सुदृढामर्षुणोन्महात्मा ॥ 17.10 ॥	178
अन्ते भरुपुरुषनीतरिमानयातो मात्रा समं क्षुरपदे मुदितोऽहयमास्ते।	

एरं स्रुतुत्यजनपालनलोलधीस्रुं  
रातालयाधिप निरुक्कि ममामयौघान् ॥ 17.11 ॥

179

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तदशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে অষ্টাদশং দশকম্ ॥

পৃথুচরিতর্গনম্

জাতস্য ধ্বংকুল এর তুঙ্গকীর্তে -

রঙ্গস্য র্যজনি সুতঃ স রেননামা।

যদ্বোধ্যর্থ্যথিতমতিঃ স রাজরর্থ -

স্বুৎপাদে নিহিতমনা বনং গতোহভুৎ ॥ 18.1 ॥

180

পাপোহপি ক্ষিতিতলপালনায রেনঃ

পৌরাদৈরুপনিহিতঃ কঠোররীর্ষঃ।

সর্বেভ্যো নিজবলমের সম্প্রশংসন্

ভূচক্রে তর যজনান্যযং ন্যরৌৎসীৎ ॥ 18.2 ॥

181

সম্প্রাপ্তে হিতকথনায তাপসৌঘে

মত্তোহন্যো ভুরনপতির্ন কশ্চনেতি।

ৎরনিন্দারচনপরো মুনীশ্বররৈস্তুঃ

শাপাগ্নৌ শলভদশামনাযি রেনঃ ॥ 18.3 ॥

182

তন্নাশাৎ খলজনভীরুকৈর্মুনীন্দ্রে -

স্তুন্নাত্রা চিরপরিরক্ষিতে তদঙ্গে।

তযক্তাঘে পরিমথিতাদথোরুদগুৎ

দোর্দণ্ডে পরিমথিতে ত্বরমারিরাসীঃ ॥ 18.4 ॥

183

রিখ্যাতঃ পৃথুরিতি তাপসোপদিষ্টৈঃ

সূতাদ্যৈঃ পরিণুতভারিভূরির্ষীঃ।

रेनार्त्या कबलितसम्पदं धरित्री -

माक्रान्तां निजधनुषा समामकार्षीः ॥ 18.5 ॥

184

डूयस्तां निजकुलमुख्यैरस्युक्ते -

देरादैः समुचितचारुभाजनेषु।

अन्नादीन्याभिलषितानि यानि तानि

स्वच्छन्दं सुरभितनूमदुहस्त्रम् ॥ 18.6 ॥

185

आत्मानं यजति मथैस्त्रुषि त्रिधाम -

न्नारक्ने शततमराजिमेधयागे।

स्पर्धालुः शतमथ एतय नीचरेषो

ह्येराहस्त्रं तन्न तनयां पराजितोहडुं ॥ 18.7 ॥

186

देरेन्द्रं मुहरिति राजिनं हरन्तं

रहौ तं मुनिररमणुले जुहुषौ।

रुक्माने कमलभरे क्रतोस्समाप्ते

साम्नां एरं मधुरिपुमैक्कथाः स्वयं स्वम् ॥ 18.8 ॥

187

तदन्तं ररमुपलभ्य भक्तिमेकां

गम्नान्ते रिहितपदः कदापि देर।

सत्रस्यं मुनिनिरहं हितानि शंस -

नैक्किर्थाः सनकमुखान् मुनीन् पुरस्तां ॥ 18.9 ॥

188

रिज्जानं सनकमुखोदितं दधानः

स्वात्मानं स्वयमगमो रनान्तसेरी।

ततादूकपृथुरपुरीश संररं मे

रोगौघं प्रशमय रातगेहरासिन् ॥ 18.10 ॥

189

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टादशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে একোনরিংশং দশকম্ ॥

প্রাচেতসকথানুর্ণনম্

পৃথোস্তু নপ্তা পৃথুধর্মকর্মঠঃ

প্রাচীনবর্হিযুর্তৌ শতদ্রুতৌ।

প্রচেতসো নাম সুচেতসস্সুতা -

নজীজনৎ ৎরৎকরুণাক্কুরানির ॥ 19.1 ॥

190

পিতুঃ সিসৃক্ষানিরতস্য শাসনাৎ

ভরত্তপস্যাভিরতা দশাপি তে।

পযোনিধিং পশ্চিমমেত্য তত্তটে

সরোররং সন্দদৃশুর্মনোহরম্ ॥ 19.2 ॥

191

তদা ভরত্তীর্থমিদং সমাগতো

ভরো ভরৎসেরকদর্শনাদৃতঃ।

প্রকাশমাসাদ্য পুরঃ প্রচেতসাম্

উপাদিশৎ ভক্ততমস্তরস্তরম্ ॥ 19.3 ॥

192

স্তরং জপন্তস্তমমী জলাত্তরে

ভরত্তমাসেরিষতায়ুতং সমাঃ।

ভরৎসুখাস্বাদরসাদমীষ্টিয়ান্

বভূর কালো ধ্রুররন শীঘ্রতা ॥ 19.4 ॥

193

তপোভিরেষামতিমাত্রর্ধিভিঃ

স যজ্ঞহিংসানিরতোহপি পারিতঃ।



- पिताहपि तेषां गृह्यातनारद -  
 प्रदर्शितात्मा भरदात्मातां यथौ ॥ 19.5 ॥ 194
- कृपाबलेनैर पुरः प्रचेतसां  
 प्रकाशमागाः पतगेन्द्रराहनः।  
 विराजि चक्रादिररायुधांशुभिः  
 भुजाभिरष्टाभिरुदक्षितद्युतिः ॥ 19.6 ॥ 195
- प्रचेतसां तारदयाचतामपि  
 रमेर कारुण्यभराद्भुरानदाः।  
 भरद्विचिन्ताहपि शिराय देहिनां  
 भरंरसौ रुद्रनुतिश्च कामदा ॥ 19.7 ॥ 196
- अराप्य कान्तां तनयां महीरुहां  
 तथा रमध्वरं दशलक्षरंसरीम्।  
 सुतोहस्तु दम्भा ननु तंक्षणाच्च मां  
 प्रयास्यथेति न्यगदो मुदैर तान् ॥ 19.8 ॥ 197
- ततश्च ते भूतलरोधिनस्तुरुन्  
 क्रुधा दहन्तो द्रुहिणेन वारिताः।  
 द्रुमैश्च दत्तां तनयामराप्य तां  
 रदुक्तकालं सुथिनोहभिरेमिरे ॥ 19.9 ॥ 198
- अराप्य दम्भं च सुतं कृताध्वराः  
 प्रचेतसो नारदलक्ष्या धिया।  
 अपुरानन्दपदं तथारिध -  
 सुमीश व्रातालयनाथ पाहि माम् ॥ 19.10 ॥ 199

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकानरिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে ঝিংশং দশকম্ ॥

ঋষভযোগীশ্বরচরিতর্গনম্

প্রিয়ব্রতস্য প্রিয়পুত্রভূতা -

দাগ্নীধ্বরাজাদুদিতো হি নাভিঃ।

ৗরাং দৃষ্টরানিষ্টদমিষ্টিমধ্যে

তরৈর তুষ্টৈ কৃতযজ্ঞকর্মা ॥ 20.1 ॥

200

অভিষ্টুতস্তত্র মুনীশ্বরৈস্ত্বং

রাজ্ঞঃ স্বতুল্যং সুতমর্থ্যমানঃ।

স্বযং জনিষ্যেহহমিতি ব্রূরাণ -

স্তিরোদধা বর্হিষি ঝিশ্বরমূর্তে ॥ 20.2 ॥

201

নাভিপ্রিয়াযামথ মেরুদের্যাং

ৗরমংশতোহভূরুষভাভিধানঃ।

অলোকসামান্যগুণপ্রভার -

প্রভারিতাশেষজনপ্রমোদঃ ॥ 20.3 ॥

202

ৗরযি ত্রিলোকীভূতি রাজ্যভারং

নিধায় নাভিঃ সহ মেরুদের্যা।

তপোরনং প্রাপ্য ভরন্নিষেরী

গতঃ কিলানন্দপদং পদং তে ॥ 20.4 ॥

203

ইন্দ্রস্ত্বদুৎকর্ষকৃতাদমর্ষা -

দ্বর্ষ নাস্মিন্নজনাভর্ষে।

- यदा तदा ९रं निजयोगशक्त्या  
 स्वरर्षमेनद्र्यदधाः सुरर्षम् ॥ 20.5 ॥ 204
- जितेन्द्रदत्तां कमनीं जयन्ती -  
 मथोद्ब्रह्मात्परताशयोहपि।  
 अजीजनस्तत्र शतं तनूजा -  
 नेषां क्षितीशो भरतोहग्रजन्मा ॥ 20.6 ॥ 205
- नराभरन् योगिररा नरान्ये  
 ९रपालयन् भारतरर्षखण्डान्।  
 सैका ९रशीतिसुर शेषपुत्रा -  
 स्तपोबलां डूसुरडूयमीयुः ॥ 20.7 ॥ 206
- उकृत्वा सुतेड्योहथ मुनीन्द्रमध्ये  
 रिक्तिडक्त्यन्वितमुक्तिमार्गम्।  
 स्वयं गतः पारमहंस्यरुक्ति -  
 मधा जडोन्मत्तपिशाचचर्याम् ॥ 20.8 ॥ 207
- परात्प्रडूतोहपि परोपदेशं  
 कुरन् भरान् सरनिरस्यमानः।  
 रिकारहीनो रिचचार कृष्णां  
 महीमहीनात्परसाडिलीनः ॥ 20.9 ॥ 208
- शयुर्ब्रतं गोमृगकाकचर्यां  
 चिरं चरन्नाप्य परं स्वरूपम्।  
 दराहताङ्गः कुटकाचले ९रं  
 तापान् ममापाकुरु रातनाथ ॥ 20.10 ॥ 209

॥ इति श्रीमन्नारायणीये रिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये एकरिंशं दशकम् ॥

जम्बुद्वीपादिषु भगवदुपासनाप्रकारवर्णनम्

मध्येन्द्रे ভুর ইলার্বৃতনাম্নি রর্ষে  
গৌরীপ্রধানরনিতাজনমাত্রভাজি।

শর্বেণ মন্ত্রনুতিভিঃ সমুপাস্যমানং  
সঙ্কর্ষণাত্মকমধীশ্বর সংশ্রযে ৎরাম্ ॥ 21.1 ॥

210

ভদ্রাশ্রনামক ইলার্বৃতপূর্ৱর্ষে  
ভদ্রশ্রোভির্বিভিঃ পরিণূযমানম্।

কল্পান্তগূঢ়নিগমোদ্ধরণপ্ররীণং  
ধ্যামি দেৱ হযশীর্ষতনুং ভৱন্তম্ ॥ 21.2 ॥

211

ধ্যামি দক্ষিণগতে হরিরর্ষর্ষে  
প্রহ্লাদমুখ্যপুরুষৈঃ পরিষের্যমাণম্।

উত্তুঙ্গশান্তধরলাকৃতিমেকশুদ্ধ -  
জ্ঞানপ্রদং নরহরিং ভগৱন্ ভৱন্তম্ ॥ 21.3 ॥

212

র্ষে প্রতীচি ললিতাঅনি কেতুমালে  
লীলারিশেষললিতস্মিতশোভনাঙ্গম্।

লক্ষ্ম্যা প্রজাপতিসুতৈশ্চ নিষের্যমাণং  
তস্যাঃ প্রিয়ায ধৃতকামতনুং ভজে ৎরাম্ ॥ 21.4 ॥

213

রম্যে হৃদীচি খলু রম্যকনাম্নি রর্ষে  
তদ্বর্ষনাথমনুর্যসপর্যমাণম্।

- ভক্ৰেকরৎসলমমৎসরহৎসু ভান্তং  
 মৎস্যাকৃতিং ভুরননাথ ভজে ভরন্তম্ ॥ 21.5 ॥ 214
- বর্ষং হিরণ্মযসমাহ্রযমৌত্তরাহ -  
 মাসীনমদ্রি ধৃতিকর্মঠকামঠাঙ্গম্।  
 সংসেরতে পিতৃগণপ্ররোরহর্ষমা যং  
 তং ত্ৱাং ভজামি ভগবন্ পরচিন্মযাত্মন্ ॥ 21.6 ॥ 215
- কিঞ্ছোত্তরেষু কুরুষু প্রিযযা ধরণ্যা  
 সংসেরিতো মহিতমন্ত্রনুতিপ্রভেদৈঃ।  
 দংষ্ট্রাগ্রঘৃষ্টঘনপৃষ্ঠগরিষ্ঠরশ্মা  
 ত্ৱং পাহি রিঞ্জনুত যঞ্জররাহমূর্তে ॥ 21.7 ॥ 216
- যাম্যাং দিশং ভজতি কিম্পুরুষাখ্যরর্ষে  
 সংসেরিতো হনুমতা দৃঢভক্তিভাজা।  
 সীতাভিরামপরমাদ্ভুতরূপশালী  
 রামাত্মকঃ পরিলসন্ পরিপাহি রিষ্ণে ॥ 21.8 ॥ 217
- শ্রীনারদেন সহ ভারতখণ্ডমুখ্যৈ -  
 স্ত্বং সাঙ্খ্যযোগনুতিভিঃ সমুপাস্যমানঃ।  
 আকল্পকালমিহ সাধুজনাভিরক্ষী  
 নারাযণো নরসখঃ পরিপাহি ভূমন্ ॥ 21.9 ॥ 218
- প্লাক্ষেহর্করূপমযি শাল্মল ইন্দুরূপং  
 দ্বীপে ভজন্তি কুশনামনি রহিরূপম্।  
 ক্রৌঞ্ছেহম্বুরূপমথ রাযুমযং চ শাকে  
 ত্ৱাং ব্রহ্মরূপমযি পুঙ্করনাম্নি লোকাঃ ॥ 21.10 ॥ 219
- সরৈর্ধ্বরাদিভিরুডুপ্রকরৈর্গ্ৰহৈশ্চ  
 পুচ্ছাদিকেৱরযরেৱরভিকল্প্যামনৈঃ।

९रं शिंशुमाररपुषा महतामुपास्यः

सक्त्यासु रुक्मि नरकं मम सिन्धुशायिन् ॥ 21.11 ॥

220

पातालमूलडुरि शेषतनुं भरुतुं

लोलैककुण्डलरिराजिसहस्रशीर्षम्।

नीलाश्वरं धृतहलं डुजगाङ्गनाभि -

जुष्टं भजे हर गदान् गुरुगेहनाथ ॥ 21.12 ॥

221

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अकरिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে দ্বারিংশং দশকম্ ॥

অজামিলোপাখ্যানম্

অজামিলো নাম মহীসুরঃ পুরা

চরন্ রিভো ধর্মপথান্ গৃহাশ্রমী।

গুরোর্গিরা কাননমেত্য দৃষ্টরান্

সুধৃষ্টশীলাং কুলটাং মদাকুলাম্ ॥ 22.1 ॥

222

স্বতঃ প্রশান্তোহপি তদাহতাশযঃ

স্বধর্মমুৎসৃজ্য তযা সমারমন্।

অধর্মকারী দশমী ভরন্ পুন -

দধৌ ভরন্নামযুতে সুতে রতিম্ ॥ 22.2 ॥

223

স মৃত্যুকালে যমরাজকিঙ্করান্

ভযঙ্করাংস্ত্রীনভিলক্ষয়ন্ ভিযা।

পুরা মনাক্ ৎরৎস্মৃতিরাসনাবলা -

জ্জুহার নারাযণনামকং সুতম্ ॥ 22.3 ॥

224

দুরাশযস্যাপি তদাৎরনির্গত -

ৎরদীযনামাঙ্করমাত্রৈভরাৎ।

পুরোহভিপেতুর্ভরদীযপার্ষদা -

শ্চতুর্ভুজাঃ পীতপটা মনোরমাঃ ॥ 22.4 ॥

225

অমুং চ সম্পাশ্য রিকর্ষতো ভটান্

রিমুঞ্চতেত্যারুরুধুবলাদমী।

নিরারিতাস্তে চ ভরজ্জনৈস্তদা তদীযপাপং নিখিলং ন্যরেদযন্ ॥ 22.5 ॥	226
ভরন্তু পাপানি কথং তু নিষ্কৃতে কৃতেহপি ভো দণ্ডনমস্তি পণ্ডিতাঃ। ন নিষ্কৃতিঃ কিং রিদিতা ভরাদৃশা - মিতি প্রভো ৳রৎপুরুষা বভাষিরে ॥ 22.6 ॥	227
শ্রুতিস্মৃতিভ্যাং রিহিতা ব্রতাদযঃ পুনন্তি পাপং ন লুনন্তি রাসনাম্। অনন্তসেরা তু নিকৃন্ততি দ্বযী - মিতি প্রভো ৳রৎপুরুষা বভাষিরে ॥ 22.7 ॥	228
অনেন ভো জন্মসহস্রকোটিভিঃ কৃতেষু পাপেষ্বরপি নিষ্কৃতিঃ কৃতা। যদগ্রহীন্মাম ভযাকুলো হরে - রিতি প্রভো ৳রৎপুরুষা বভাষিরে ॥ 22.8 ॥	229
নৃণামবুদ্ধ্যাপি মুকুন্দকীর্তনং দহত্যঘৌঘান্ মহিমাস্য তাদৃশঃ। যথাগ্নিরেধাংসি যথৌষধং গদা - নিতি প্রভো ৳রৎপুরুষা বভাষিরে ॥ 22.9 ॥	230
ইতীরিতৈর্যাম্যভট্টেরপাসূতে ভরদুটানাং চ গণে তিরোহিতে। ভরৎস্মৃতিং কঞ্চন কালমাচরন্ ভরৎপদং প্রাপি ভরদুট্টেরসৌ ॥ 22.10 ॥	231
স্বকিঞ্চরারেদনশঙ্কিতো যম - স্তুদভিঘ্নভক্তেষু ন গম্যতামিতি।	



अकीयभृत्यानशिशिक्षदुच्छकैः

स देर रातालथनाथ पाहि माम् ॥ 22.11 ॥

232

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्वाविंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে ত্রয়োবিংশং দশকম্ ॥

দক্ষচরিতং, চিত্রকেতুপাখ্যানং, বৃত্রধরণং, মরুদুৎপত্তিরণং চ  
প্রাচেতসস্ত ভগবন্নপরো হি দক্ষ -

স্বৎসেরনং ব্যধিত সর্গরিবৃদ্ধিকামঃ।  
আরিবভূরিথ তদা লসদষ্টবাহু -

স্তম্ভৈ ররং দদিথ তাং চ রধুমসিক্কীম্ ॥ 23.1 ॥

233

তস্যাত্মজাস্ত্বযুতমীশ পুনস্শহস্রং  
শ্রীনারদস্য রচসা তর মার্গমাপুঃ।

নৈকত্রাসমৃষযে স মুমোচ শাপং

ভক্তোত্তমস্তুষ্টিরনুগ্রহমের মেনে ॥ 23.2 ॥

234

ষষ্ট্যা ততো দুহিতৃভিঃ সৃজতঃ কুলৌঘান্  
দৌহিত্রসুনুরথ তস্য স রিশ্বররূপঃ।

ত্রৈলোক্যত্রমিতমজাপযদিন্দ্রমাজৌ

দেব ত্রৈলোক্যমহিমা খলু সর্জিতৈত্রৈঃ ॥ 23.3 ॥

235

প্রাকশুরসেনরিষযে কিল চিত্রকেতুঃ

পুত্রাগ্রহী নৃপতিরঙ্গিরসঃ প্রভারাৎ।

লঙ্করৈকপুত্রমথ তত্র হতে সপত্নী -

সঙ্ঘৈরমুহ্যদরশস্তর মাযযাসৌ ॥ 23.4 ॥

236

তং নারদস্ত সমমঙ্গিরসা দযালুঃ

সম্প্রাপ্য তারদুপদর্শ্য সুতস্য জীরম্।

- कस्यास्मि पुत्र इति तस्य गिरा रिमोहं  
 त्यक्त्वा र्वदर्चनरिधौ नृपतिं न्ययुञ्जत ॥ 23.5 ॥ 237
- स्तोत्रं च मन्त्रमपि नारदतोहथ लङ्करा  
 तोषाय शेषरपुषो ननु ते तपस्यन्।  
 रिद्याधराधिपतितां स हि सपुत्रात्रे  
 लङ्कराप्यकुर्वन्मतिरन्त्रभजद्वरन्तम् ॥ 23.6 ॥ 238
- तस्मै मृगालधरलेन सहस्रशीर्षा  
 रूपेण बद्धनुतिसिद्धगणारूतेन।  
 प्रादुर्भरन्नचिरतो नुतिभिः प्रसन्नो  
 दंराहहृत्तत्रमनुगृह्य तिरोदधाथ ॥ 23.7 ॥ 239
- र्वदुक्तमौलिरथ सोहपि च लङ्कलङ्कं  
 र्षाणि हर्षुलमना डुरनेषु कामम्।  
 सङ्गापयन् गुणगणं तत्र सुन्दरीभिः  
 सङ्गातिरेकरहितो ललितं चचार ॥ 23.8 ॥ 240
- अत्यन्तसङ्गरिलयाय डरप्रणुनो  
 नूनं स रूप्यगिरिमाप्य महंसमाजे।  
 निष्पङ्कमङ्ककृतरन्त्रभमङ्गजारिं  
 तं शङ्करं परिहसन्नुमयाभिषेपे ॥ 23.9 ॥ 241
- निस्सङ्गमङ्गयमयाचितशापमोक्षे  
 रूत्रासुरर्वरमुपगम्य सुरेन्द्रयोधी।  
 डुक्त्यात्तत्रकथनैः समरे रिचित्रं  
 शत्रोरपि ड्रममपास्य गतः पदं ते ॥ 23.10 ॥ 242
- र्वसेरनेन दितिरिन्द्ररधोदयताहपि  
 तान्प्रत्यूतेन्द्रसुहदो मरुतोहभिलेडे।

दुष्टाशयेहपि शुभदैर भरन्निषेरा

तत्रादृशङ्गमर मां परनालयेः ॥ 23.11 ॥

243

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रयोविंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুর্বিংশং দশকম্ ॥

প্রহ্লাদচরিতর্গনম্

হিরণ্যাক্ষে পোত্রিপ্রররপুষা দেব ভরতা

হতে শোকক্রোধগ্নপিতধৃতিরেতস্য সহজঃ।

হিরণ্যপ্রারম্ভঃ কশিপুরমরারাতিসদসি

প্রতিজ্ঞামাতেনে তব কিল বধার্থং মধুরিপো ॥ 24.1 ॥

244

বিধাতারং ঘোরং স খলু তপসিৎরা নচিরতঃ

পুরঃ সাক্ষাৎকুরন্ সুবনরমৃগাদৈরনিধনম্।

বরং লঙ্করা দৃষ্টো জগদিহ ভবনায়কমিদং

পরিক্ষুন্দম্বিন্দ্রাদহরত দিবং ব্রামগণযন্ ॥ 24.2 ॥

245

নিহন্তং ব্রাং ভূযস্তব পদমরাপ্তস্য চ রিপো -

বহির্দৃষ্টৈরন্তর্দধিত হৃদয়ে সুক্ষ্মবপুষা।

নদনুচ্চৈস্ত্রাপ্যাখিলভুরনান্তে চ মৃগযন্

ভিষা যাতং মংরা স খলু জিতকাশী নিববৃতে ॥ 24.3 ॥

246

ততোহস্য প্রহ্লাদঃ সমজনি সুতো গর্ভবসতো

মুনের্নীণাপাণেরধিগতভবদ্ভক্তিমহিমা।

স বৈ জাত্যা দৈত্যশিশুরপি সমেত্য ব্রযি রতিং

গতস্তুদ্ভক্তানাং বরদ পরমোদাহরণতাম্ ॥ 24.4 ॥

247

সুরারীণাং হাস্যং তব চরণদাস্যং নিজসুতে

স দৃষ্টব্রা দুষ্টাত্মা গুরুভিরশিশিক্ষচ্চিরমমুম্।

गुरुप्रोक्तं चासारिदमिदमभद्राय दृढमि -

त्यपाकुरन् सर्गं तत्र चरणभङ्गैर्यत्र रघुधे ॥ 24.5 ॥

248

अधीतेषु श्रेष्ठं किमिति परिपृष्टैश्च तनये

भ्रष्टाङ्गिं रयामभिगदति पर्याकुलधृतिः।

गुरुभ्या रोषित्वा सहजमतिरस्येत्यभिरिदन्

रधोपायानस्मिन् रयतनुत भ्रष्टपादशरणे ॥ 24.6 ॥

249

स शूलैरारिद्वः सुबह्व मथितो दिग्भ्रजगणै -

र्महासर्पैर्दष्टोऽप्यनशनगराहाररिधुतः।

गिरीन्द्रारम्भिष्ठोऽप्यहह ! परमात्मान्यि रिभो

रयि न्यस्तात्त्रां किमपि न निपीडामभजत ॥ 24.7 ॥

250

ततः शङ्कारिष्टः स पुनरतिदुष्टोऽस्य जनको

गुरुक्त्या तदगेहे किल ररुणपाशैस्तमरुणं।

गुरोश्चासान्निध्ये स पुनरनुगान् दैत्यतनयान्

भ्रष्टाङ्गैस्तुं परममपि रिञ्जानमशिषं ॥ 24.8 ॥

251

पिता शृण्वन् बालप्रकरमखिलं ररुंस्तुतिपरं

रुषाङ्गः प्राहेनं कुलहतक कस्ते बलमिति।

बलं मे रैकुर्णस्तत्र च जगतां चापि स बलं

स एव त्रैलोक्यं सकलमिति धीरोऽयमगदीं ॥ 24.9 ॥

252

अरे क्लासौ क्लासौ सकलजगदात्मा हरिरिति

प्रभिन्ते स्म स्तुभं चलितकररालो दितिसुतः।

अतः पश्चाद्विषेण न हि रदितुमीशोऽस्मि सहसा

कृपात्नं रिश्वात्नं परनपुरवासिन् मृडय माम् ॥ 24.10 ॥

253

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुर्विंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये पञ्चविंशं दशकम् ॥

नरसिंहारतारवर्णनम्

স্তম্ভে ঘট্টযতো হিরণ্যকশিপোঃ কর্ণৌ সমাচূর্ণয -

ন্বাগূর্ণজ্জগদগুণকুহরো ঘোরস্তরাভূদ্রঃ।

শ্ৰুৎরা যং কিল দৈত্যরাজহৃদয়ে পূর্ং কদাপ্যশ্ৰুতং

কম্পঃ কশ্চন সম্পপাত চলিতোহপ্যস্তোজভূর্বিষ্টরাৎ ॥ 25.1 ॥

254

দৈত্যে দিক্ষু রিসৃষ্টচক্ষুষি মহাসংরম্ভিণি স্তম্ভতঃ

সম্ভুতং ন মৃগাঅকং ন মনুজাকারং রপুস্তে রিভো।

কিং কিং ভীষণমেতদদ্ভুতমিতি ব্যুদ্ভান্তচিভেহসুরে

রিস্বৃজ্জ্জ্বরলোগ্রোরোমরিকসদ্বর্ষ্মা সমাজ্জম্বথাঃ ॥ 25.2 ॥

255

তপ্তস্বর্ণসর্পঘূর্ণদতিরুক্ষাক্ষং সটাকেসর -

প্রোংকম্পপ্রনিকুণ্ঠিতাম্বরমহো জীযাতুরেদং রপুঃ।

র্যাওর্যাপ্তমহাদরীসখমুখং খডেগাগ্ররঞ্জনাহা -

জিহ্বানির্গমদৃশ্যমানসুমহাদংষ্ট্রায়ুগোড্ডামরম্ ॥ 25.3 ॥

256

উৎসর্পদ্রলিভঙ্গভীষণহনু হ্রস্বস্বরীযস্তর -

গ্রীরং পীররদোম্পশতোদগতনখক্রুবাংশুদুরোল্লগম্।

র্যোমোল্লঙ্ঘি ঘনামনোপমঘনপ্রধ্বাননির্দ্বারিত -

স্পর্ধালুপ্রকরং নমামি ভরতস্তন্নরসিংহং রপুঃ ॥ 25.4 ॥

257

নুনং রিষ্ণুরযং নিহন্যমুমিতি ভ্রাম্যদগদাভীষণং

দৈত্যেন্দ্রং সমুপাদ্ররন্তমধ্বথা দোর্ভ্যাং পৃথুভ্যামমুম্।

रीरो निर्गलितोऽथ खड्गफलकौ गृह्णन् रिचित्रश्रमान्  
 ब्यावृणन् पुनरापपात डुरनत्रासोद्यतं व्रामहो ॥ 25.5 ॥ 258

द्राम्यन्तुं दितिजाधमं पुनरपि प्रोदगृह्य दोर्भ्यां जरां  
 द्वारेहथोरुयुगे निपात्य नखरान् ब्युत्थाय रक्फोभुरि।  
 निर्भिन्दन्नधिगर्भनिर्भरगलद्रक्तान्धु वद्वोत्सरं  
 पायं पायमुदैरयो बह् जगत्संहारिसिंहाररान् ॥ 25.6 ॥ 259

त्यक्त्वा तं हतमाशु रक्तलहरीसिक्तोन्नमद्भ्रमणि  
 प्रत्यूत्पत्य समस्तदैत्यपटलीं चाखाद्यमाने व्रथि।  
 द्राम्यद्भूमि रिकम्पिताम्बुधि कुलं ब्यालोलशैलोत्करं  
 प्रोत्सर्पत्खचरं चराचरमहो दुःस्थामरस्थां दधौ ॥ 25.7 ॥ 260

तारन् मांसरपाकरालरपुषं घोरान्त्रमालाधरं  
 व्राम् मध्येसभमिद्वकोपमुषितं दुरारगुराररम्।  
 अब्येतुं न शशाक कोपि डुरने दुरे स्थिता डीररः  
 सर्वे शर्ररिरीरुवासर मुखाः प्रत्येकमस्तोषत ॥ 25.8 ॥ 261

डूयोऽप्यम्भतरौषधान्नि डरति ब्रम्हाञ्जया बालके  
 प्रह्लादे पदयोर्नमत्यपभये कारुण्यभाराकुलः।  
 शान्तञ्जुं करमस्य मूर्ध्नि समधाः स्तोत्रैरथोदगायत -  
 स्तस्याकामधियोऽपि तेनिथ ररं लोकाय चानुग्रहम् ॥ 25.9 ॥ 262

एरं नाटितरौद्रचेष्टित रिडो श्रীतापनीयाभिध -  
 श्रुत्यन्तस्फुटगीतसर महिमन्नत्यन्तशुद्धाकृते।  
 ततादृङ्निखिलोत्तरं पुनरहो कस्त्यां परो लङ्घयेत्  
 प्रह्लादप्रिय हे मरुत्पुरपते सर्रामयात्पाहि माम् ॥ 25.10 ॥ 263

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चरिंशत् दशकं समाप्तम् ॥



श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये षड्विंशं दशकम् ॥

गजेन्द्रमोक्षरर्षणम्

इन्द्रद्युम्नः पाण्ड्यखण्डाधिराज -

सुदुक्तात्मा चन्दनाद्रौ कदाचिৎ।

एरुंसेरायां मग्नधीरालुलोके

नैरागस्यं प्राप्तमातिथ्यकामम् ॥ 26.1 ॥

264

कुञ्जोद्धृतिः सञ्चतक्रोधभारः

सुक्तात्मा एरुं हस्तिभूयं भजेति।

शपद्वाहथैनं प्रत्यगां सोहपि लेभे

हस्तीन्द्रं एरुं स्मृतिर्यक्तिधन्यम् ॥ 26.2 ॥

265

दुष्काञ्चोर्धर्मध्याजि त्रिकुटे

क्रीडशैले युथपोहयं रशाभिः।

सर्गान् जञ्जुनत्यरतिष्ठ शक्त्या

एरुञ्जानां कुत्र नोऽकर्षलाभः ॥ 26.3 ॥

266

स्त्रेण स्त्रेणा दिर्यदेशं शक्त्या

सोहयं खेदानप्रजानन् कदाचिৎ।

शैलप्रान्ते घर्मतान्तः सरस्यां

युथैस्सार्धं एरुं प्रणुनोहभिरमे ॥ 26.4 ॥

267

हूस्तारद् देरलस्यापि शापां

ग्राहीभूतस्तज्जले वर्तमानः।

- जग्रहैनं हस्तिनं पाददेशे  
 शान्त्यर्थं हि शान्तिदोहसि स्वकानाम् ॥ 26.5 ॥ 268
- एरंसेराया रैभरां दुर्निरोधं  
 युद्ध्यन्तं तं रंसराणां सहस्रम्।  
 प्राप्ते काले एरंपदैकाग्र्यसिद्धौ  
 नक्राक्रान्तं हस्तिरथं र्यधास्तुम् ॥ 26.6 ॥ 269
- आतिर्यक्तप्राक्तनञ्जानभक्तिः  
 शुभोत्फिष्टैः पुञ्जीकैः समर्चन्।  
 पूराभ्यस्तं निरिषेयाअनिष्ठं  
 स्तोत्र श्रेष्ठं सोहन्त्रगादीं पराअन् ॥ 26.7 ॥ 270
- ऋरा स्तोत्रं निर्गुणस्तं समस्तं  
 ब्रह्मेशादैर्नाहमित्यप्रयाते।  
 सर्वात्मा एरं डुरिकारुण्यरेगां  
 तार्क्ष्यारुचः प्रेम्फितोहडूः पुरस्तां ॥ 26.8 ॥ 271
- हस्तीन्द्रं तं हस्तपद्मेन धृरा  
 चक्रेण एरं नक्ररथं र्यदारीः।  
 गन्धर्वेहस्मिन् मुक्तशापे स हस्ती  
 एरंसारुप्यं प्राप्य देदीप्यते स्म ॥ 26.9 ॥ 272
- एतद्भुतं एरां च मां च प्रगे यो  
 गायेंसोहयं डूयसे श्रेयसे स्यां।  
 इत्युक्तेन तेन सार्धं गतस्तुं  
 धिष्यं रिषेया पाहि रातालयेष ॥ 26.10 ॥ 273

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षड्विंशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तत्रिंशं दशकम् ॥

अमृतमथने कूर्मारतारवर्णनम्

दुर्वासाम्सुररनितान्तापुदिर्यामाल्यं

शक्राय स्वयमुपदाय तत्र भूयः।

नागेन्द्रप्रतिमृदिते शशाप शक्रं

का क्षान्तिस्तुदितरदेरतांशजानाम् ॥ 27.1 ॥

274

शापेन प्रथितजरेहथ निर्जरेन्द्रे

देरेष्वरप्यसुरजितेषु निष्प्रभेषु।

शर्वाद्याः कमलजमेत्य सर्ददेरा

निर्माणप्रभर समं भरुतापुः ॥ 27.2 ॥

275

ब्रह्माद्वैः सुतमहिमा चिरं तदानीं

प्रादुष्यन् ररद पुरः परेण धाम्ना।

हे देरा दितिजकुलैरिधाय सक्किं

पीयूषं परिमथतेति पर्यशास्तुम् ॥ 27.3 ॥

276

सक्कानं कृतरति दानरैः सुरौघे

मन्वानं नयति मदेन मन्दराद्रिम्।

अष्टैहस्मिन् बदरमिरोद्बहन् खगेन्द्रे

सद्यस्तुं रिनिहितरान् पयःपयोधौ ॥ 27.4 ॥

277

आधाय द्रुतमथ रासुकिं ररत्रां

पाथोधौ रिनिहितसर्वीजजाले।

প্রারন্ধে মখনরিধৌ সুরাসুরৈস্তু -

র্যাজাত্বং ভুজগমুখেহকরোঙ্গুরারীন্ ॥ 27.5 ॥

278

ক্ষুঙ্কাদ্রৌ ক্ষুভিতজলোদরে তদানীং

দুঙ্কাকৌ গুরুতরভারতো নিমগ্নে।

দেরেষু র্যথিততমেষু তৎপ্রিযৈষী

প্রাণৈষীঃ কমঠতনুং কঠোরপৃষ্ঠাম্ ॥ 27.6 ॥

279

রজ্রাতিস্থিরতরকর্পরেণ রিষেণ

রিস্তারাৎপরিগতলক্ষযোজনেন।

অস্ত্রোধেঃ কুহরগতেন রর্মণা ংরং

নির্মগ্নং ক্ষিতিধরনাথমুন্নিথে ॥ 27.7 ॥

280

উন্মগ্নে ঝটিতি তদা ধরাধরেন্দ্রে

নির্মেথুর্দৃঢ়মিহ সম্মদেন সর্বে।

আরিশ্য দ্বিতযগণেহপি সর্পরাজে

রৈরশ্যং পরিশমযন্নরীর্ধুস্তান্ ॥ 27.8 ॥

281

উদ্দামভ্রমণজরোন্নমদিগীরীন্দ্র -

ন্যস্তুৈকস্থিরতরহস্তপঙ্কজং ংরাম্।

অভ্রান্তে রিধিগিরিশাদযঃ প্রমোদা -

দুদ্ভ্রান্তা নুনুরুরূপাতপুষ্পরর্ষাঃ ॥ 27.9 ॥

282

দৈত্যৌঘে ভুজগমুখানিলেন তপ্তে

তেনৈর ত্রিদশকুলেহপি কিঞ্চিদার্ভে।

কারুণ্যাত্তর কিল দেব রারিরাহাঃ

প্রারর্ষন্নমরগণান্ন দৈত্যসঙ্ঘান্ ॥ 27.10 ॥

283

উদ্ভ্রাম্যদ্বহতিমিনক্রচক্ররালে

তত্রাকৌ চিরমথিতেহপি নির্ঝিকারে।

एकस्रुं करयुगकृष्टसर्पराजः

संराजन् परनपुरेश पाहि रोगात् ॥ 27.11 ॥

284

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तरींशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে অষ্টারিংশং দশকম্ ॥

অমৃতমথনে কালকুটাদ্যুৎপত্তির্ণনং, লক্ষ্মীস্বয়ংররর্ণনং,

অমৃতোৎপত্তির্ণনম্ চ

গরলং তরলানলং পুরস্তা -

জ্জলধেরুদ্বিজগাল কালকুটম্।

অমরস্ততিরাদমোদনিঘ্নো

গিরিশস্তন্বিপপৌ ভরৎপ্রিযার্থম্ ॥ 28.1 ॥

285

রিমথৎসু সুরাসুরেষু জাতা

সুরভিস্তামৃষিষু ন্যাধাস্ত্রিধামন্।

হযরত্নমভূদথেভরত্নং

দ্যুতরুশ্চান্সরসঃ সুরেষু তানি ॥ 28.2 ॥

286

জগদীশ ভরৎপরা তদানীং

কমনীযা কমলা বভূর দেরী।

অমলামরলোক্য যাং রিলোলঃ

সকলোহপি স্পৃহযাম্বভূর লোকঃ ॥ 28.3 ॥

287

ৎরযি দত্তহদে তদৈর দের্যৈ

ত্রিদশেন্দ্রো মণিপীঠিকাং র্যতরীৎ।

সকলোপহতাভিষেচনীযৈঃ

ঋষযস্তাং শ্রুতিগীর্ভিরভ্যষিঞ্চন্ ॥ 28.4 ॥

288

অভিষেকজলানুপাতিমুঞ্চ -

ৎরদপাঙ্গৈরভূষিতাঙ্গরল্লীম্।

- मणिकुण्डलपीतचेलहार -  
 प्रमुंखैस्तममरादयोह्रदुषन् ॥ 28.5 ॥ 289
- ररणस्रजमातुडृग्नादां  
 दधती सा कुचकुम्भमन्दयाना।  
 पदशिञ्जितमञ्जुपुरा एरां  
 कलितब्रीलरिलासमाससाद ॥ 28.6 ॥ 290
- गिरिश द्रुहिणादिसर्देरान्  
 गुणभाजोहप्यरिमुक्तदोषलेशान्।  
 अरमृश्य सदैर सर्दरमेय  
 निहिता एरयनयाहपि दिर्यमाला ॥ 28.7 ॥ 291
- उरसा तरसा ममानिथैनां  
 डुरनानां जननीमनन्यभाराम्।  
 एरदुरोरिलसतुदीक्ष्णश्री -  
 परिबृष्ट्या परिपुष्टमास रिश्रम् ॥ 28.8 ॥ 292
- अतिमोहनरिद्रमा तदानीं  
 मदयन्ती खलु वारुणी निरागां।  
 तमसः पदरीमदास्रुमेना -  
 मतिसम्माननया महासुरेभ्यः ॥ 28.9 ॥ 293
- तरुणाम्बुदसुन्दरस्तदा एरं  
 ननु ध्रुवस्तुरिरुथितोहम्बुराशेः।  
 अमृतं कलशे ररहन् कराभ्या -  
 मथिलार्तिं हर मारुतालयेः ॥ 28.10 ॥ 294

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে একোনত্রিংশং দশকম্ ॥

দেৱানাৱমমৃতোপলঙ্কিপ্রকাৱৱর্গনম্

উদগচ্ছতস্তৱ কৱাদমৃতং হৱৎসু

দৈত্যেষু তানশৱণাননুনীয দেৱান্।

সদ্যস্তিরোদধিথ দেৱ ভৱৎপ্রভাৱা -

দুদ্যৎস্বযুথ্যকলহা দিতিজা বভূৱুঃ ॥ 29.1 ॥

295

শ্যামাং ৱুচাহপি ৱযসাহপি তনুং তদানীং

প্রাপ্তোহসি তুঙ্গকুচমণ্ডলভঙ্গুৱাং ৱৱম্।

পীযুষকুস্তকলহং পৱিমুচ্য সৱে

তৃষণকুলাঃ প্রতিযযুস্তদুরোজকুস্তে ॥ 29.2 ॥

296

কা ৱৱং মৃগাঙ্কি ৱিভজস্ব সুধামিমামি -

ত্যাৱুচৱাগৱিৱশানভিযাচতোহমূন্।

ৱিশ্ৱস্যতে মযি কথং কুলটাহস্মি দৈত্যা

ইত্যালপন্নপি সুৱিশ্ৱসিতানতানীঃ ॥ 29.3 ॥

297

মোদাৎ সুধাকলশমেষু দদৎসু সা ৱৱং

দুশ্চেষ্টিতং মম সহধ্ৱমিতি ৱ্ৰাণা।

পঙ্কিতপ্রভেদৱিনিৱেশিতদেৱদৈত্যা

লীলাৱিলাসগতিভিঃ সমদাঃ সুধাং তাম্ ॥ 29.4 ॥

298

অস্মাস্থিযং প্রণযিনীত্যসুৱেষু তেষু

জোষণং স্থিতেশ্ৱথ সমাপ্য সুধাং সুৱেষু।



- ॐरं डङुलुकुशगु नलरुडडडुतु  
सुडुनुडरुडडरलडतसुधं रुडलरुीः ॥ 29.5 ॥ 299
- ॐरतुः सुधुहरणडुगुडडलं डरुशु  
दॐरु गतु ॐरुड सुरुः खलु तु रुगुनु।  
डुुरुहथ डुरुडुतल रणु डललुदुतुडुडुडु -  
रुडुडुडुडुतु सुरगणु ॐरुडुडुडुडुडुडुडुडु ॥ 29.6 ॥ 300
- ॐरं कलनुडडुडुथ डललुडुखुडुगुडु  
शकुरु डुगुडुडु डललुडुडुडुडुडुडु डडुकुडु।  
शुकुडुडुडुडुडुडुडुडु नडुडुडु ड लुनु  
डुनुनु नुरुदगलरु नुडुरुणु रणं ॐरुडु ॥ 29.7 ॥ 301
- डुुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु तु  
डुडुडुडु रललुकुडुडुडुडुडुडुडुडु डडुशुः।  
डुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु ड गतः डदं तु  
सुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु ॥ 29.8 ॥ 302
- डुरुडुडुडुडुडु ड कनुडुकुडुडुडुडुडुडु -  
लुलुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु डडुनडुडुडु।  
ॐरुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु डनुडुडु -  
रुगुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु ॥ 29.9 ॥ 303
- डुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु डुरु  
रुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु डु।  
ॐरुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु डुरु  
ततुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु ॥ 29.10 ॥ 304

॥ इतल श्रुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु डडुशु डडुडुडुडुडु ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये त्रिंशत् दशकम् ॥

रामनारतारर्णनम्

शक्रेण संयति हतोऽपि बलिर्महात्मा

शुक्रेण जीरिततनुः क्रतुरर्धितोष्मा ।

रिक्त्रांतिमान् भयनिलीनसुरां त्रिलोक्यीं

चक्रे रशे स तत्र चक्रमुखादधीतः ॥ 30.1 ॥

305

पुत्रार्तिदर्शनरशाददितिर्बिषणा

तं काश्यपं निजपतिं शरणं प्रपन्ना ।

एरुपूजनं तदुदितं हि पयोरुताख्यं

सा द्वादशाहमचरुं एरुयि भक्तिपूर्णा ॥ 30.2 ॥

306

तस्यारधौ एरुयि निलीनमतेरमुष्याः

श्यामश्चतुर्भुजवरुः स्वयमारिरासीः ।

नम्रां च तामिह भरुतनयो भरेयं

गोप्यं मदीक्षुणमिति प्रलपन्नासीः ॥ 30.3 ॥

307

एरुं काश्यपे तपसि सन्निदधुतदानीं

प्राप्तोऽसि गर्भमदितेः प्रणुतो रिधात्रा ।

प्रासूत च प्रकटैरैश्वरदिर्यरुपं

सा द्वादशीशरणपुण्यादिने भरुतम् ॥ 30.4 ॥

308

पुण्याश्रमं तमभिरर्षति पुष्परर्षे -

ईर्षाकुले सुरगणे कृततूर्यघोषे ।

- बध्नाहङ्गलिङ्गं जय जयेति नूतः पितृभ्यां  
 ९रं तंक्फणे पटुतमं रटुरूपमाधाः ॥ 30.5 ॥ 309
- तारं प्रजापतिमुक्थैरूपनीय मौञ्जी -  
 दण्डाजिनाम्बरलयादिभिरर्च्यमानः ।  
 देदीप्यमानरपुरीश कृतान्निकार्य -  
 स्त्रुं प्रास्थिथा बलिगृहं प्रकृताश्रमेधम् ॥ 30.6 ॥ 310
- गात्रेण भारिमहिमोचितगौरवरं प्रा -  
 ष्ण्यारुणतेर धरणीं चलयन्नयासीः ।  
 छत्रं परोष्मतिरणार्थमिरादधानो  
 दण्डं च दानरजनेश्विर सन्निधातुम् ॥ 30.7 ॥ 311
- तां नर्मदोत्तरतटे हयमेधशाला -  
 मासेदुषि ९रयि रुचा तर रुद्धनेत्रैः ।  
 भास्वान् किमेष दहनो नु सनत्कुमारो  
 षोगी नु कोहयमिति शुक्रमुक्थैश्शशक्ले ॥ 30.8 ॥ 312
- आनीतमाशु भृगुभिर्महसाहभिभूते -  
 स्त्रुं रम्यरूपमसुरः पुलकारुताङ्गः ।  
 भक्त्या समेत्य सुकृती परिणिज्य पादौ  
 तत्रोयमन्त्रधृत मूर्धनि तीर्थतीर्थम् ॥ 30.9 ॥ 313
- प्रह्लादरंशजतया क्रतुभिर्द्विजेषु  
 रिश्र्वासतो नु तदिदं दितिजोहपि लेभे ।  
 यत्ते पदाम्बु गिरिशस्य शिरोभिलाल्यं  
 स ९रं रिभो गुरुपुरालय पालयेथाः ॥ 30.10 ॥ 314

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रिंशत् दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये एकत्रिंशं दशकम् ॥

बलिर्बिध्वंसनम्

প্রীত্যা দৈত্যস্তর তনুমহঃ প্রেক্ষণাৎ সর্থাহপি

ৎরামারাধ্যন্নজিত রচয়ন্নঞ্জলিং সঞ্জগাদ।

মত্তঃ কিং তে সমভিলষিতং রিপ্ৰসুনো রদ ত্বং

র্যক্তং ভক্তং ভরনমরনীং রাহপি সর্থং প্রদাস্যে ॥ 31.1 ॥

315

তামক্ষীণাং বলিগিরমুপাকর্ষ্য কারুণ্যপূর্ণো -

হপ্যস্যোৎসেকং শমযিতুমনা দৈত্যরংশং প্রশংসন্।

ভূমিং পাদত্রয়পরিমিতাং প্রার্থয়ামাসিথ ত্বং

সর্থং দেহীতি তু নিগদিতে কস্য হাস্যং ন রা স্যাৎ ॥ 31.2 ॥

316

রিশ্বেশং মাং ত্রিপদমিহ কিং যাচসে বালিশস্ত্বং

সর্থাং ভূমিং বৃণু কিমমুনেত্যালপত্ত্বাং স দৃপ্যন্।

যস্মাদ্দর্পাং ত্রিপদপরিপূর্ত্যক্ষমঃ ক্ষেপরাদান্

বন্ধং চাসারগমদতদর্হোহপি গাটোপশাত্ত্যে ॥ 31.3 ॥

317

পাদত্রয়া যদি ন মুদিতো রিষ্টপৈর্নাপি তুষ্যে -

দিত্যুক্তেহস্মিন্ ররদ ভরতে দাতুকামেহথ তোযম্।

দৈত্যাচার্যস্তর খলু পরীক্ষার্থিনঃ প্রেরণাত্ত্বং

মা মা দেযং হরিরযমিতি র্যক্তমেরাবভাষে ॥ 31.4 ॥

318

যাচত্যেত্বং যদি স ভগরান্ পূর্ণকামোহস্মি সোহহং

দাস্যাম্যের স্থিরমিতি রদন্ কার্যশপ্তোহপি দৈত্যঃ।

- रिक्त्यारल्या निजदयितया दत्तपाद्याय तुभ्यं  
 चित्रं चित्रं सकलमपि स प्रार्पयतोयपूरम् ॥ 31.5 ॥ 319
- निस्सन्देहं दितिकुलपतौ र्वय्यशेषार्पणं तद् -  
 र्यातन्त्राने मुमुचुरृषयः सामराः पुष्परर्षम्।  
 दिर्यं रूपं तर च तदिदं पश्यतां रिश्वभजा -  
 मुच्चैरुच्चैरर्धदरधीकृत्य रिश्वभजाभुम् ॥ 31.6 ॥ 320
- र्वरपादाग्रं निजपदगतं पुञ्जीकोद्भरोहसौ  
 कुञ्जीतोयैरसिचदपुनाद्यज्जलं रिश्वलोकान्।  
 हर्षोत्कर्षां सुबहू ननुते खेचरैरुत्सरेहस्मिन्  
 डेरीं निघ्नन् डुरनमचरज्जाश्वरान् डक्तिशाली ॥ 31.7 ॥ 321
- तारदैत्यास्त्रनुमतिमृते डर्तुरारक्कयुक्ता  
 देरोपेतैर्डरदनुचरैस्सङ्गता डङ्गमापन्।  
 कालात्माहयं रसति पुरतो यद्वशां प्राङ्जिताः स्मः  
 किं रो युद्धैरिति बलिगिरा तेहथ पातालमापुः ॥ 31.8 ॥ 322
- पाशैर्बद्धं पतगपतिना दैत्यमुच्चैररादी -  
 स्तार्त्तीयिकं दिश मम पदं किं न रिश्वश्वरोहसि।  
 पादं मूर्ध्नि प्रणय डगरन्नित्यकम्पं रदन्तं  
 प्रह्लादन्तं श्वयमुपगतो मानयन्नस्तरीत्राम् ॥ 31.9 ॥ 323
- दर्पोच्छ्रित्यै रिहितमथिलं दैत्य सिद्धोहसि पुण्यै -  
 लोकेस्तेहस्त त्रिदिररिजयी रासरवरं च पश्चात्।  
 मत्सायुज्यं डज च पुनरित्यन्त्रगृह्णा बलिं तं  
 रिप्रैस्सन्तानितमखररः पाहि रातालयेश ॥ 31.10 ॥ 324

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकत्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये द्वात्रिंशं दशकम् ॥

मत्स्यारतारर्णनम्

पुरा हयग्रीरमहासुरेण

षष्ठान्तरान्तोद्यदकाङ्कले ।

निद्रोन्मुखब्रह्ममुखाद्भूतेषु

रेदेश्वरधिंसः किल मत्स्यरूपम् ॥ 32.1 ॥

325

सत्यव्रतस्य द्रमिलाधिभर्तु -

नदीजले तर्पयतस्तदानीम् ।

कराङ्गलौ सङ्ग्रलितकृतिस्तु -

मदृश्याः कश्चन बालमीनः ॥ 32.2 ॥

326

स्फिप्तं जले एरां चकितं रिलोक्य

निन्येहम्बुपात्रेण मुनिः स्वगेहम् ।

स्त्रैरहोभिः कलशीं च कुपं

रापीं सरश्चानशिषे रिभो एरम् ॥ 32.3 ॥

327

योगप्रभारान्तरदाञ्जयैर

नीतस्ततस्तुं मुनिना पयोधिम् ।

पृष्ठोहमुना कल्पदिदृम्भुमेनं

सप्तहमास्त्रेति रदन्नयासीः ॥ 32.4 ॥

328

प्राप्ते एरदुक्तेहनि रारिधारा -

परिप्लुते भूमितले मुनीन्द्रः ।

सप्तर्षिभिः सार्धमपाररारि -

गुन्दमूर्णमानः शरणं यथौ व्राम् ॥ 32.5 ॥

329

धरां व्रदादेशकरीमराप्तां  
नौरूपिणीमारुरुहस्तदा ते।

तंकम्पकम्पेषु च तेषु ভূয -

স্বমম্বুধেরারিরভূমহীযান্ ॥ 32.6 ॥

330

व्याकृतिं योजनलक्षदीर्घां  
दधानमुच्चैस्तरतेजसं व्राम्।

নিরীক্ষ্য তুষ্ঠা মুনযস্তুদুক্ত্যা

ব্রতুঙ্গশৃঙ্গে তরণিং ববন্ধুঃ ॥ 32.7 ॥

331

आकृष्टनौको मुनिमण्डलाय  
प्रदर्शयन् विश्वजगद्विभागान्।

সংস্তুযমানো নূররেণ তেন

জ্ঞানং পরং চোপদিশন্নচারীঃ ॥ 32.8 ॥

332

कन्नारधौ सप्तमुनीन् पुरोरं  
प्रस्थाप्य सत्यव्रतभूमिपं तम्।

রৈরস্বতাখ্যং মনুমাদধানঃ

ক্রোধাদ্বযগ্রীরমভিদ্ধতোহভূঃ ॥ 32.9 ॥

333

स्वतुङ्गशृङ्गस्ततरङ्गसं तं

নিপাত্য দৈত্যং নিগমান্ গৃহীৎরা।

বিরিঞ্চয়ে প্রীতহৃদে দদানঃ

প্রভঞ্জনাগারপতে প্রপাযাঃ ॥ 32.10 ॥

334

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्वात्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये त्रयस्त्रिंशं दशकम् ॥

अम्बरीषोपाख्यानम्

রৈরস্বতাখ্যমনুপুত্রনভাগজাত -

নাভাগনামকনরেন্দ্রসুতোহম্বরীষঃ।

সপ্তার্ণরারূতমহীদযিতোহপি রেমে

৳৳সঙ্গিষু ৳৳যি চ মগ্নমনাস্সদৈর ॥ 33.1 ॥

335

৳৳প্ৰীতযে সকলমের রিতন্৳তোহস্য

ভক্ত্যে৳ দে৳ নচি৳াদভূথাঃ প্রসাদম্।

যেনাস্য যাচনমূতেহপ্যভি৳ক্ষণার্থং

চক্রং ভ৳ান্ প্র৳িততার সহস্রধারম্ ॥ 33.2 ॥

336

স দ্বাদশী৳৳তমথো ভ৳দর্চনার্থং

৳র্ষং দধৌ মধুরনে যমুনোপকণ্ঠে।

পত্ন্যা সমং সুমনসা মহতীং রিতন্৳ন্

পূজাং দ্বিজেষু রিসৃজন্ পশুষষ্টিকোটিম্ ॥ 33.3 ॥

337

তত্রাথ পারণদিনে ভ৳দর্চনাণ্ঠে

দু৳াসসাহস্য মুনিনা ভ৳নং প্রপেদে।

ভোক্তুং ৳ৃতশ্চ স নূপেণ প৳ার্তিশীলো

মন্দং জগাম যমুনাং নিযমান্৳িধাস্যন্ ॥ 33.4 ॥

338

৳াজ্জাহথ পারণমুহূর্তসমাপ্তিখেদা -

দ্বা৳ৈ৳ পারণমকারি ভ৳প৳েণ।



- प्राप्तो मुनिस्तदथ दिर्यदृशा रिजानन्  
 क्षिप्यन् क्रुधोद्भुतजटो रिततान कृत्याम् ॥ 33.5 ॥ 339
- कृत्यां च तामसिधरां डुरनं दहन्ती -  
 मग्रेह्भिर्रीक्ष्य नृपतिर्न पदाच्छकम्पे।  
 र्दुक्तबाधमभिर्रीक्ष्य सुदर्शनं ते  
 कृत्यानलं शलभयन् मुनिमन्त्रधारीं ॥ 33.6 ॥ 340
- धारणशेषडुरनेषु भिया स पश्यान्  
 रिश्रत्र चक्रमपि ते गतरान् रिरीक्षम्।  
 कः कालचक्रमतिलङ्घयतीत्यपास्तः  
 शर्रं यथौ स च डुरन्तमरन्दतैर ॥ 33.7 ॥ 341
- डूयो डुरन्निलयमेत्य मुनिं नमस्तं  
 प्रोचे डुरानहमृषे ननु डुक्तदासः।  
 ज्ञानं तपश्च रिनयान्रितमेर मान्यं  
 याह्यम्भरीषपदमेर डुजेति डूमन् ॥ 33.8 ॥ 342
- तारंसमेत्य मुनिना स गृहीतपादो  
 राजाहपसृत्य डुरदम्भमसारनौषीं।  
 चक्रे गते मुनिरदादथिलाशिषोह्मै  
 र्दुक्तिमागसि कृतेहपि कृपां च शंसन् ॥ 33.9 ॥ 343
- राजा प्रतीक्ष्य मुनिमेकसमामनाश्रान्  
 सञ्जोड्य साधु तमृषिं रिसृजन् प्रसन्नम्।  
 डुकृत्वा स्वयं र्दुषि ततोहपि दृढं रतोहडू  
 सायुज्याप च स मां परनेश पायाः ॥ 33.10 ॥ 344

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रयस्त्रिंशत् दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুস্ত্রিংশং দশকম্ ॥

শ্রীরামচরিতর্পণনম্

গীর্গাণৈরর্থ্যমানো দশমুখনিধনং কোসলেহ্শ্ৰুশ্যশৃঙ্গে  
পুত্রীযামিষ্টিমিষ্টরা দদুষি দশরথক্ষ্মাভূতে পায়সাগ্র্যম্।  
তদ্ভুক্ত্যা তৎপুরক্ষীশ্ৰপি তিসৃষু সমং জাতগর্ভাসু জাতো  
রামস্ত্বং লক্ষ্মণেন স্বয়মথ ভরতেনাপি শক্রঘ্ননাম্মা ॥ 34.1 ॥

345

কোদণ্ডী কৌশিকস্য ক্রতুররমরিতুং লক্ষ্মণেনানুযাতো  
যাতোহ্ভূস্তাতরাচা মুনিকথিতমনুদ্বন্দ্বশান্তাধ্বখেদঃ।  
নূণাং ত্রাণায় বাণৈর্মুনি রচনবলাত্তাটকাং পাটযিৎরা  
লঙ্করাস্মাদস্ত্রজালং মুনিরনমগমো দেব সিদ্ধাশ্রমাখ্যম্ ॥ 34.2 ॥

346

মারীচং দ্রারযিৎরা মখশিরসি শরৈ -  
রন্যরক্ষাংসি নিঘ্নন্  
কল্যাং কুর্নহল্যাং পথি পদরজসা  
প্রাপ্য রৈদেহগেহম্।  
ভিন্দানশ্চান্দ্রচূডং ধনুররনিসুতা -  
মিন্দিরামের লঙ্করা  
রাজ্যং প্রাতিষ্ঠথাস্ত্বং ত্রিভিরপি চ সমং  
ভ্রাতৃরীরৈস্সদারৈঃ ॥ 34.3 ॥

347

আরুন্ধানে রুষাক্ষে ভৃগুকুলতিলকে সঙ্কময্য স্বতেজো  
যাতে যাতোহস্যযোধ্যাং সুখমিহ নিরসন্ কান্তযা কান্তমূর্তে।

शक्रघ्नैनैकदाथो गतरति भरते मातुलस्याधिरासं  
तातारक्नोहभिषेकस्तर किल रिहतः केकयाधीशपुत्र्या ॥ 34.4 ॥ 348

तातोक्त्या यातुकामो र्नमनुज र्धूसंयुतश्चापधारः  
पौरानारुध्य मार्गे गुहनिलयगतस्त्रुं जटाचीरधारी।  
नारा सन्तीर्य गङ्गामधि पदरि पुनस्तं भरद्वाजमारा -  
नृरा तद्वाक्यहेतोरतिसुखमरसश्चिद्रकुटे गिरीन्द्रे ॥ 34.5 ॥ 349

श्रृंरा पुत्रार्तिखिन्नं खलु भरतमुखां  
स्वर्गयातं स्वतातं  
तप्तो दंराहश्चु तस्मै निदधिथ भरते  
पादुकां मेदिनीं च।  
अत्रिं नंराहथ गंरा र्नमतिरिपुलं  
दणुकं चणुकायं  
हंरा दैत्यं रिराधं सुगतिमकलय -  
शारु भोः शारभस्रीम् ॥ 34.6 ॥ 350

नंराहगस्यं समस्ताशरनिकर सपत्राकृतिं तापसेभ्यः  
प्रत्यश्रीषीः प्रियैषी तदनु च मुनिना रैश्वरे दिर्याचापे।  
ब्रह्मास्त्रे चापि दत्ते पथि पितृसुहृदं रीक्ष्य डूयो जटायुं  
मोदां गोदातटांते परिरमसि पूरा पञ्चरट्यां र्धुट्या ॥ 34.7 ॥ 351

प्राप्तायाः शूर्पणख्या मदनचलधृतेरथनैर्निस्सहात्वा  
तां सौमित्रौ रिसृज्य प्रबलतमरुषा तेन निर्लूननासाम्।  
दृष्टैरनां रुष्टचित्तं खरमभिपतितं दूषणं च त्रिमूर्धं  
र्याहिंसीराशरानप्ययुत समधिकांस्तुंक्षणादक्कतोष्मा ॥ 34.8 ॥ 352

सोदर्या प्रोक्तुरार्तारिरशदशमुखादिष्टमारीचमाया -  
सारङ्गं सारसाम्क्या स्पृहितमनुगतः प्रारधीर्वाणघातम्।

तन्मायाक्रन्दनिर्घापितभ्रदनुजां रारणस्तामहार्षी -

वेनार्तोहपि वरमन्तः किमपि मुदमधास्तद्रोधोपायलाभात् ॥ 34.9 ॥ 353

डूयस्तन्त्रीं रिचिन्नरुहत् दशमुखस्तद्रधुं मद्रुधेने -

तुक्त्वा याते जटायौ दिरमथ सुहृदः प्रातनोः प्रेतकार्यम्।

गृह्णानं तं कवक्कं जघनिथ शवरीं प्रेक्ष्य पम्पातटे वरं

सम्प्राप्तो रातसूनुं भृशमुदितमनाः पाहि रातालयेष ॥ 34.10 ॥ 354

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुस्त्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে পঞ্চত্রিংশং দশকম্ ॥

শ্রীরামচরিতর্ননম্

নীতস্সুগ্রীরমৈত্রীং তদনু হনুমতা দুন্দুভেঃ কাযমুচ্চৈঃ

ক্ষিপ্ত্বাস্তুর্থেন ভূযো লুলুরিথ যুগপৎ পত্রিণা সপ্ত সালান্।

হংরা সুগ্রীরঘাতোদ্যতমতুলবলং বালিনং র্যাজবৃত্ত্যা

রর্ষারেলামনৈষীর্ষিরহতরলিতস্ত্বং মতঙ্গাশ্রমাস্তে ॥ 35.1 ॥

355

সুগ্রীরেণানুজোক্ত্যা সভযমভিযতা

ব্যুহিতাং রাহিনীং তা -

মৃক্ষাণাং রীক্ষ্য দিক্ষু দ্রুতমথ দযিতা -

মার্গণাযারনভ্রাম্।

সন্দেশং চাস্তুলীযং পরনসুতকরে

প্রাদিশো মোদশালী

মার্গে মার্গে মমার্গে কপিভিরপি তদা

ৎরৎপ্রিয়া সপ্রযাসৈঃ ॥ 35.2 ॥

356

ৎরদ্বার্তাকর্ণনোদ্যদগরুদুরুজরস -

স্পাতিসম্পাতিরাক্য -

প্রোত্তীর্ণার্ণোধিরন্তর্নগরি জনকজাং

রীক্ষ্য দৎরাহস্তুলীযম্।

প্রক্ষুদ্যোদ্যানমক্ষক্ষপণচণরণঃ

সোচবন্ধো দশাস্যং

দৃষ্টরা প্লুষ্টরা চ লক্ষাং ঝটিতি স হনুমান্

মৌলিরত্নং দদৌ তে ॥ 35.3 ॥

357

९रं सुग्रीराङ्गदादिप्रबल कपिचमूचक्ररिक्त्राङ्गुडूमि -

चक्रोहडिक्रम्य पारेजलधि निशिचरेन्द्रानुजाश्रीयमाणः।

तत्प्रोक्तां शक्ररार्तां रहसि निशमयन् प्रार्थनापार्थ्यरोष -

प्रास्ताग्नेयास्त्रतेजस्त्रसदुदधिगिरा लङ्करान् मध्यमार्गम् ॥ 35.4 ॥

358

कौशैराशान्तरुपाहृत गिरिनिकरैः सेतुमाधाप्य यातो

यातून्यामर्द्य दंष्ट्रानखशिखरिशिलासालशस्त्रैः स्वसैन्यैः।

र्याकुर्रन् सानुजस्त्रं समरभुरि परं रिक्रमं शक्रजेद्रा

रेगान्नागास्त्रवद्भः पतगपतिगरुन्मारुतैर्मोचितोहडूः ॥ 35.5 ॥

359

सौमित्रिस्त्रुत्र शक्तिप्रहृतिगलदसुरातजानीतशैल -

घ्राणां प्राणानुपेतो र्यकृणुत कुसृतिस्त्राघिनं मेघनादम्।

मायाक्फोभेषु रैडीषणरचनहृतस्तुम्भनः कुम्भकर्णं

सम्प्राप्तं कम्पितोर्नीतलमखिलचमूभक्किणं र्यक्किणोस्त्रुम् ॥ 35.6 ॥

360

गुह्णन् जम्भारिसम्प्रेषितरथकरटौ रारणेनाभियुद्ध्यन्

ब्रम्भास्त्रेणस्य भिन्दन् गलततिमबलामग्निशुद्धां प्रगुह्णन्।

देरश्रेणीररोज्जीरितसमरमृतैरम्भतैरुम्भसङ्घै -

र्लङ्काभर्त्रा च साकं निजनगरमगाः सप्रियः पुष्पकेण ॥ 35.7 ॥

361

प्रीतो दिर्याभिषेकैरयुतसमधिकान् रंसरान् पर्यरंसौ -

मैथिल्यां पापराचा शिर ! शिर ! किल तां गर्भिणीमभ्यहासीः।

शक्रघ्नेनार्दयित्वा लरणनिशिचरं प्रार्दयः शुद्रपाशं

तारद्गाल्मीकिगेहे कृतसतिरुपासूत सीता सूतो ते ॥ 35.8 ॥

362

राल्मीकेस्त्रुत्सुतोदगापितमधुरकृतेराङ्गया यङ्गराटे

सीतां ९रय्याप्सुकामे ऋतिमरिशदसौ ९रं च कालार्थितोहडूः।

हेतोः सौमित्रिघाती स्वयमथ सरयूमग्ननिशेषभृत्यैः

साकं नाकं प्रयातो निजपदमगमो देर रैकुठ्ठमाद्यम् ॥ 35.9 ॥

363

सोहयं मर्त्यारतारसुत्रं खलु नियतं मर्त्यशिक्षार्थमेव  
रिक्लेशार्तिर्निरागस्त्यजनमपि भवेत् कामधर्मातिसक्त्या।  
नो चेत् स्वात्मानुभूतेः क्व नु तत्र मनसो रिक्रिया चक्रपाणे  
स एव सत्त्वैकमूर्ते परनपुरपते व्याधुनु व्याधितापान् ॥ 35.10 ॥ 364

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चत्रिंशत् दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये षट्त्रिंशं दशकम् ॥

परशुरामारतारर्णनम्

अत्रेः पुत्रतया पुरा एरमनसूयायां हि दत्ताभिधो  
जातः शिष्यनिबन्धतन्द्रितमनाः स्वस्वचरन् कान्तया।  
दृष्टो भक्ततमेन हेहयमहीपालेन तस्मै ररा -  
नष्टैश्वर्यमुखान् प्रदाय ददिथ स्वैनैर चाप्ते रधम् ॥ 36.1 ॥

365

सत्यं कर्तुमथार्जुनस्य च ररं तच्छक्तिमात्रानतं  
ब्रह्मद्वेषि तदाथिलं नृपकुलं हस्तं च भुमेर्भरम्।  
सञ्जातो जमदग््नितो भृगुकुले एरं रेणुकायां हरे  
रामो नाम तदाञ्जेश्वररजः पित्रोरधाः सम्मदम् ॥ 36.2 ॥

366

लक्काम्नायगणश्चतुर्दशरया गन्धर्वराजे मना -  
गासन्तां किल मातरं प्रति पितुः क्रोधाकुलस्याञ्जया।  
ताताञ्जातिगसोदरैः सममिमां छिंराहथ शान्तां पितु -  
स्तेषां जीरनयोगमापिथ ररं माता च तेहदाद्भरान् ॥ 36.3 ॥

367

पित्रा मातृमुदे सुराहतरियद्वेनोर्निजादाश्रमां  
प्रस्थायाथ भृगोर्गिरा हिमगिराराराध्य गौरीपतिम्।  
लङ्करा तंपरशुं तदुक्तदनुजच्छेदी महाञ्जादिकं  
प्राप्तो मित्रमथाकृतब्रणमुनिं प्राप्यागमः स्वाश्रमम् ॥ 36.4 ॥

368

आखेटोपगतोहर्जुनः सुरगरीसम्प्राप्तसम्पदागै -  
स्त्रुपित्रा परिपूजितः पुरगतो दुर्मन्त्रिराचा पुनः।



- गां क्रेतुं सचिरं न्ययुञ्जत कुधिया तेनापि रुक्मन्मुनि -  
 प्राणक्लेशसरोषगोहतचमूचक्रेण रंसो हतः ॥ 36.5 ॥ 369
- शुक्रेज्जीरितताराक्यचलितक्रोधोत्थ सख्या समं  
 विभ्रद्व्यातमहोदरोपनिहितं चापं कुठारं शरान्।  
 आरूढः सह्राहयन्तुकरथं माहिष्मतीमारिशन्  
 राग्भिर्ब्रह्मसमदाशुषि क्षितिपतौ सम्प्राप्तुथास्सङ्गरम् ॥ 36.6 ॥ 370
- पुत्राणामयुतेन सप्तदशभिश्चाक्लेशिणीभिर्महा -  
 सेनानीभिरनेकमिद्विनिरहैर्याजृम्भितायोधनः।  
 सदयस्त्र्यंशकुठारवाणरिदलनिःशेषसैन्योत्करो  
 डीतिप्रद्रुतनष्टशिष्टतनयस्त्रामापतद्वेहयः ॥ 36.7 ॥ 371
- लीलारारितनर्मदाजलरलल्लक्षेशगरापह -  
 श्रीमद्ब्राह्मसहस्रमुक्तबलशस्त्रास्त्रं निरुक्कन्नमुम्।  
 चक्रे व्रय्यथ रैष्यरेहपि रिफले बुध्रा हरिं वरां मुदा  
 ध्यायन्तं हितसर्दोषमरधीः सोहगां परं ते पदम् ॥ 36.8 ॥ 372
- भूयोहर्षितहेहयात्त्रजगणैस्ताते हते रेणुका -  
 माह्वानां हृदयं निरीक्ष्य बलशो घोरां प्रतिष्ठां रहन्।  
 ध्यानानीतरथायुधस्त्रमकृथा रिप्रद्रुहः क्षत्रियान्  
 दिक्चक्रेषु कुठारयन् रिशिखयन् निःक्षत्रियां मेदिनीम् ॥ 36.9 ॥ 373
- तातोऽज्जीरनकृन्पालककुलं त्रिस्सप्तकृत्तरो जयन्  
 सन्तर्प्याथ समन्तपङ्ककमहारक्तहृदोघे पितृन्।  
 यजेत् क्षामपि काश्यपादिषु दिशन् साल्लेन युध्यन् पुनः  
 कृष्णोऽहमुं निहनिष्यतीति शमितो युद्धां कुमारैर्भरान् ॥ 36.10 ॥ 374

न्यस्याञ्जाणि महेन्द्रभूति तपस्त्रन् पुनर्मज्जितां  
गोकर्णारधि सागरेण धरणीं दृष्टरार्थितस्तापसैः।  
ध्यातेष्वसधृतानलाञ्चकितं सिक्नुं ऋरक्षेपणा -  
दुंसार्योद्धृतकेरलो भृगुपते रातेश संरक्ष माम् ॥ 36.11 ॥

375

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षट्त्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে সপ্তত্রিংশং দশকম্ ॥

শ্রীকৃষ্ণারতারপ্রসঙ্গবর্ণনম্

সান্দ্রানন্দতনো হরে ননু পুরা দৈরাসুরে সঙ্গরে

ৎরৎকৃত্তা অপি কর্মশেষ বশতো যে তে ন যাতা গতিম্।

তেষাং ভূতলজন্মনাং দিতিভুরাং ভারেণ দুরাদিতা

ভূমিঃ প্রাপ ব্রিষ্ণমাশ্রিতপদং দেবৈঃ পুরৈরাগতৈঃ ॥ 37.1 ॥

376

হা হা দুর্জনভূরিভারমথিতাং পাথোনিধৌ পাতুকা -

মেতাং পালয হস্ত মে ব্রিষ্ণতাং সম্পৃচ্ছ দেবানিমান্।

ইত্যাদি প্রচুরপ্রলাপব্রিষ্ণামালোক্য ধাতা মহীং

দেবানাং বদনানি ব্রীক্ষ্য পরিতো দধৌ ভরন্তং হরে ॥ 37.2 ॥

377

উচে চাম্বুজভূরমুনযি সুরাঃ সত্যং ধরিত্র্যা বচো

নন্রস্যা ভরতাং চ বক্ষণরিধৌ দক্ষো হি লক্ষ্মীপতিঃ।

সর্বে শর্পপুরস্সরা ব্রযমিতো গংরা পযোরারিধিং

নংরা তং স্তমহে জরাদিতি যযুঃ সাকং তরাকেতনম্ ॥ 37.3 ॥

378

তে মুঞ্চানিলশালি দুগ্ধজলধেস্তীরং গতাঃ সঙ্গতা

যারভ্ৰুৎপদচিন্তনৈকমনসস্তারং স পাথোজভূঃ।

ৎরদ্বাচং হৃদযে নিশম্য সকলানানন্দযনুচিরা -

নাখ্যাতঃ পরমাত্মনা স্বযমহং বাক্যং তদাকর্ণ্যতাম্ ॥ 37.4 ॥

379

জানে দীনদশামহং দিব্রিষ্ণদাং ভূমেশ্চ ভীমৈনৃপৈ -

স্তৎক্ষেপায় ভরামি যাদবকুলে সোহহং সমগ্রাত্মনা।

- देरा वृष्णिकुले भरुतु कलया देराङ्गनाशचारनौ  
मंसेरार्थमिति एरदीयरचनं पाथोजडूरुचिरान् ॥ 37.5 ॥ 380
- श्रुंरा कर्णरसायनं तर रचः सरैषु निर्रापित -  
स्वान्तेर्रीश गतेषु तारककृपापीयूषतृष्ठात्सु।  
रिख्याते मधुरापुणे किल भरुंसान्निध्यपुण्योत्तरे  
धन्यां देरकनन्दनामुदरहद्राजा स शूरात्तजः ॥ 37.6 ॥ 381
- उद्वाहारसितौ तदीयसहजः कंसोहथ सम्मानय -  
न्नेतौ सूततया गतः पथि रथे र्योमोथया एरदिगिरा।  
अस्यास्त्रामतिदुष्टमष्टमसुतो हन्तेति हन्तेरितः  
सन्नासां स तु हन्तमन्तिकगतां तन्नीं कृपाणीमधां ॥ 37.7 ॥ 382
- गुहानश्चिकुरेषु तां खलमतिः शौरेश्चिरं सान्द्रनैः  
नो मुष्णन् पुनरात्तजार्पणगिरा प्रीतोहथ यातो गुहान्।  
आद्यां एरुंसहजं तथाहर्पितमपि स्नेहेन नाहन्नसौ  
दुष्टानामपि देर पुष्टकरुणा दृष्टा हि धीरेकदा ॥ 37.8 ॥ 383
- तारत्तुन्ननसैर नारदमुनिः प्रोचे स भोजेश्वरं  
यूयं नन्नसुराः सुराश्च यदरो जानासि किं न प्रभो।  
मायारी स हरिर्भरद्भुक्ते भारी सुरप्रार्थना -  
दित्याकर्ण्य यदूनदुधुनदसौ शौरेश्च सूनुनहन् ॥ 37.9 ॥ 384
- प्राप्ते सप्तमगर्भतामहिपतौ एरुंप्रेरणान्मायया  
नीते माधर रोहिणीं एरमपि भोः सच्चिंसुखैकात्मकः।  
देरक्या जठरं रिरेशिथ रिभो संस्रुयमानः सुरैः  
स एरुं कृष्ण रिधुय रोगपटलीं भक्तिं परां देहि मे ॥ 37.10 ॥ 385

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तत्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये अष्टात्रिंशं दशकम् ॥

श्रीकृष्णरतारर्णनम्

আনন্দরূপ ভগবন্নযি তেহরতারে

প্রাপ্তে প্রদীপ্তভবদঙ্গনিরীযমণৈঃ।

কান্তিব্রজৈরির ঘনাঘনমগুলৈর্দ্যা -

মার্ৎয়তী বিরুরুচে কিল বর্ষরেলা ॥ 38.1 ॥

386

আশাসু শীতলতরাসু পযোদতোযৈ -

রাশাসিতাপ্তিরিশেষু চ সজ্জনেষু।

নৈশাকরোদযরিধৌ নিশি মধ্যমাযাং

ক্লেশাপহস্ত্রিজগতাং ৎরমিহাহরিরাসীঃ ॥ 38.2 ॥

387

বাল্যস্পৃশাহপি বপুষা দধুষা বিভূতীঃ

উদ্যৎকিরীটকটকাস্তদহারভাসা।

শঙ্খারিয়ারিজগদাপরিভাসিতেন

মেঘাসিতেন পরিলেসিথ সূতিগেহে ॥ 38.3 ॥

388

বক্ষঃস্থলীসুখনিলীনরিলাসিলক্ষ্মী -

মন্দাক্ষলক্ষিতকটাক্ষরিমোক্ষভেদৈঃ।

তন্মান্দিরস্য খলকংসকৃতামলক্ষ্মী -

মুন্মার্জযন্নির বিরেজিথ রাসুদের ॥ 38.4 ॥

389

শৌরিস্ত ধীরমুনিমগুলচেতসোহপি

দূরস্থিতং বপুরুদীক্ষ্য নিজেক্ষণাভ্যাম্।

आनन्दवाष्पपुलकोदणमगदणदार्द्र -

सुष्ठार दृष्टिमकरन्दरसं भरुतम् ॥ 38.5 ॥

390

देर प्रसीद परपूरुष तापरल्ली -

निलूनदात्र समनेत्र कलारिलासिन्।

खेदानपाकुरु कृपागुरुभिः कटाम्फै -

रित्यादि तेन मुदितेन चिरं नुतोहडुः ॥ 38.6 ॥

391

मात्रा च नेत्रसलिलासुतगात्ररल्या

स्तोत्रैरभिष्टुतगुणः करुणालयसुम्।

प्राचीनजन्मयुगलं प्रतिबोध्य ताभ्यां

मातुर्गिरा दधिथ मानुषबालरेशम् ॥ 38.7 ॥

392

एरंप्रेरितसुदनु नन्दतनूजया ते

र्यत्यासमारचयितुं स हि शूरसूनुः।

एरां हस्तयोरधृत चित्तोरिधार्यमार्यै -

रञ्जोरुहसुकलहंसकिशोररम्यम् ॥ 38.8 ॥

393

जाता तदा पशुपसद्वनि योगनिद्रा

निद्रारिमुद्रितमथाकृत पौरलोकम्।

एरंप्रेरणां किमिर चित्रमचेतनैर्यद् -

द्वारैः स्वयं र्यघटि सङ्घटितैः सुगाटम् ॥ 38.9 ॥

394

शेषेण भूरिफणरारितरारिणाहथ

स्त्रैरं प्रदर्शितपथो मणिदीपितेन।

एरां धारयन् स खलु धन्यतमः प्रतस्त्रे

सोहयं एरमीश मम नाशय रोगरेगान् ॥ 38.10 ॥

395

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टात्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে একোনচৎরারিংশং দশকম্ ॥

যোগমাযানযনাদির্ণনম্

ভরন্তমযমুদ্রহন্ যদুকুলোদ্রহো নিস্সরন্  
দদর্শ গগনোচ্চলজ্জলভরাং কলিন্দাঅজাম্।  
অহো সলিলসঞ্চয়ঃ স পুনরৈন্দ্রজালোদিতো  
জলৌঘ ইর তৎক্ষণাৎ প্রপদমেঘতামাযযৌ ॥ 39.1 ॥

396

প্রসুপ্তপশুপালিকাং নিভৃতমারুদদ্বালিকা -  
মপার্বতকরাটিকাং পশুপরাটিকামারিশন্।  
ভরন্তমযমর্পযন্ প্রসরতল্লকে তৎপদা -  
দ্রহন্ কপটকন্যকাং স্বপুরমাগতো রেগতঃ ॥ 39.2 ॥

397

ততস্তুদনুজাররক্ষপিতনিদ্ররেগদ্রদ -  
ভটোৎকরনিরেদিতপ্রসররার্তৈরার্তিমান্।  
রিমুক্তচিকুরোৎকরস্তুরিতমাপতন্ ভোজরা -  
ডতুষ্ট ইর দৃষ্টরান্ ভগিনিকাকরে কন্যকাম্ ॥ 39.3 ॥

398

ধ্রুং কপটশালিনো মধুহরস্য মাযা ভরে -  
দসারিতি কিশোরিকাং ভগিনিকাকরালিঙ্গিতাম্।  
দ্বিপো নলিনিকান্তরাদির মৃণালিকামাক্ষিপ -  
ন্নয়ং ৎরদনুজামজামুপলপট্টকে পিষ্টরান্ ॥ 39.4 ॥

399

ততো ভরদুপাসকো ঝটিতি মৃত্যুপাশাদির  
প্রমুচ্য তরসৈর সা সমধিরূচরূপান্তরা।

- अधस्तलमजगुषी रिकसदष्टवाल्लुस्फुर -  
 न्माहायुधमहो गता किल रिहायसा दिद्युते ॥ 39.5 ॥ 400
- नृशंसतर कंस ते किमु मया रिनिष्पिष्टया  
 बभूर भरदन्तकः क्लृचन चिन्त्यतां ते हितम्।  
 इति र्दनुजा रिभो खलमुदीर्य तं जगुषी  
 मरुदणपणायिता डुरि च मन्दिराण्येषुषी ॥ 39.6 ॥ 401
- प्रगे पुनरगात्प्रजारचनमीरिता डुडुजा  
 प्रलम्बकपूतनाप्रमुखदानरा मानिनः।  
 डरन्निधनकाम्या जगति बद्रमुर्निर्भयाः  
 कुमारकरिमारकाः किमिर दुक्करं निष्कृपैः ॥ 39.7 ॥ 402
- ततः पशुपमन्दिरे र्दयि मुकुन्द नन्दप्रिया -  
 प्रसूतिशयनेशये रुदति किष्किदक्षपदे।  
 रिबुध्य रनितानैस्तनयसञ्चरे घोषिते  
 मुदा किमु रदाम्यहो सकलमाकुलं गोकुलम् ॥ 39.8 ॥ 403
- अहो खलु यशोदया नरकलायचेतोहरं  
 डरन्तमलमन्तिके प्रथममापिबन्त्या दृशा।  
 पुनः स्तनडरं निजं सपदि पाययन्त्या मुदा  
 मनोहरतनुस्पृशा जगति पुण्यरन्तो जिताः ॥ 39.9 ॥ 404
- डरंकुशलकाम्या स खलु नन्दगोपस्तदा  
 प्रमोदडरसङ्कुलो द्विजकुलाय किन्नाददात्।  
 तथैर पशुपालकाः किमु न मङ्गलं तेनिरे  
 जगत्त्रितयमङ्गल र्दमिह पाहि मामामयात् ॥ 39.10 ॥ 405

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकानचत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥



श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये चत्वारिंशं दशकम् ॥

पूतनामोक्तरर्णनम्

तदनु नन्दममन्दशुभास्पदं

नृपपुरीं करदानकृते गतम्।

समरलोक्य जगद भरंपिता

रिदितकंससहायजनोद्यमः ॥ 40.1 ॥

406

अथि सखे तत्र बालकजन्म मां

सुखयतेह्य निजाञ्जजन्मरं।

इति भरंपितृतां ब्रजनायके

समधिरोप्य शशंस तमादरां ॥ 40.2 ॥

407

इह च सन्त्यनिमित्तशतानि ते

कटकसीम्नि ततो लघु गम्यताम्।

इति च तद्रुचसा ब्रजनायको

भरदपायभिया द्रुतमायथौ ॥ 40.3 ॥

408

अरसरे खलु तत्र च काचन

ब्रजपदे मधुराकृतिरङ्गना।

तरलषटपदलालितकुण्डला

कपटपोतक ते निकटं गता ॥ 40.4 ॥

409

सपदि सा हतबालकचेतना

निशिचरान्त्रयजा किल पूतना।

- ब्रजरधृष्टिह केयमिति ऋणं  
रिमृशतीषु भरन्तमुपाददे ॥ 40.5 ॥ 410
- ललितभाररिलासहतात्माभि -  
यूरतिभिः प्रतिरोद्धुमपारिता।  
स्तनमसौ भरनास्तनिषेदुषी  
प्रददुषी भरते कपटात्तने ॥ 40.6 ॥ 411
- समधिरुह्य तदक्कमशक्ति -  
स्तुमथ बालकलोपनरोषितः।  
महदिराप्रफलं कुचमगुलं  
प्रतिचुचुषिथ दुरिषदुषितम् ॥ 40.7 ॥ 412
- असुभिरेर समं धयति ररयि  
स्तनमसौ स्तनितोपमनिस्वना।  
निरपतद्धयदायि निजं रपुः  
प्रतिगता प्ररिसार्य डुजारुडौ ॥ 40.8 ॥ 413
- भयदघोषणतीषणरिग्रह -  
श्ररणदर्शनमोहितरल्लरे।  
ब्रजपदे तदुरः श्लखेलनं  
ननु भरन्तमगूहृत गोपिकाः ॥ 40.9 ॥ 414
- डुरनमग्लनामभिरेर ते  
यूरतिभिर्वह्धा कृतरऋणः।  
ररमयि रातनिकेतननाथ मा -  
मगदयन् कुरु तारकसरकम् ॥ 40.10 ॥ 415

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चरारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে একচত্রারিংশং দশকম্ ॥

পূতনাশরীরদাহরণনম্, গোপীনাং বালাললনকৌতুকরণনম্ চ  
ব্রজেশ্বরঃ শৌরিরচো নিশম্য  
সমাব্রজন্নধ্রনি ভীতচেতাঃ।  
নিষ্পিষ্টনিশেষতরুং নিরীক্ষ্য  
কঞ্চিৎপদার্থং শরণং গতস্ত্বাম্ ॥ 41.1 ॥

416

নিশম্য গোপীরচনাদুদন্তং  
সর্বেহপি গোপা ভয়রিস্মযাক্ষাঃ।  
ত্রংপাতিতং ঘোরপিশাচদেহং  
দেহুর্দিদুরেহথ কুঠারকৃতম্ ॥ 41.2 ॥

417

ত্রংপীতপূতস্তনতচ্ছরীরাত্  
সমুচ্চলনুচ্চতরো হি ধুমঃ।  
শঙ্কামধাদাগররঃ কিমেষ  
কিং চান্দনো গৌল্লুলরোহথরেতি ॥ 41.3 ॥

418

মদঙ্গসঙ্গস্য ফলং ন দূরে  
ক্ষণেন তারং ভরতামপি স্যাৎ।  
ইত্যুল্পপন্ রল্লরতল্লজেভ্যঃ  
ত্রং পূতনামাতনুথাঃ সুগন্ধিম্ ॥ 41.4 ॥

419

চিত্রং পিশাচ্যা ন হতঃ কুমারঃ  
চিত্রং পুরৈরাকথি শৌরিণেদম্।

- इति प्रशंसन् किल गोपलोको  
 भ्रनुखालोकरसे न्यमाङ्गी ॥ 41.5 ॥ 420
- दिने दिनेहथ प्रतिबृद्धलक्ष्मी -  
 रक्षीणमाङ्गल्यशतो ब्रजोहयम्।  
 भ्रन्निरासादधि रासुदेर  
 प्रमोदसान्द्रः परितो रिरेजे ॥ 41.6 ॥ 421
- गृहेषु ते कोमलरूपहास -  
 मिथः कथासङ्कुलिताः कमन्यः।  
 ब्रुवेषु कृत्येषु भ्रन्निरीक्षा -  
 समागताः प्रत्यहमत्यनन्दन् ॥ 41.7 ॥ 422
- अहो कुमारो मधि दण्डदृष्टिः  
 स्मितं कृतं मां प्रति रत्सकेन।  
 एह्येहि मामित्युपसार्य पाणी  
 र्वशीश किं किं न कृतं रधुभिः ॥ 41.8 ॥ 423
- भ्रद्रुपुः स्पर्शनकौतुकेन  
 कराकरं गोपरधुजनेन।  
 नीतस्त्रुमाताम्रसरोजमाला -  
 र्यालम्बिलोलम्बतुलामलासीः ॥ 41.9 ॥ 424
- निपाययन्ती स्तनमङ्गलं र्व्रां  
 रिलोकयन्ती रदनं हसन्ती।  
 दशां यशोदा कतमान् भेजे  
 स तादृशः पाहि हरे गदान्नाम् ॥ 41.10 ॥ 425

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकचत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये द्विचत्वारिंशं दशकम् ॥

शकटासुररधरणम्

कदापि जन्मर्क्षदिने तर प्रभो

निमल्लितज्जातिरधूमहीसुरा।

महानसङ्गां सरिधे निधाय सा

महानसादौ ररुते ब्रजेश्वरी ॥ 42.1 ॥

426

ततो भरत्राणनियुक्तबालक -

प्रतीतिसङ्कन्दनसङ्कुलाररैः।

रिमिश्रमश्रारि भरसमीपतः

परिस्फुटदारुचट्टाररः ॥ 42.2 ॥

427

ततस्तदाकर्णनसङ्ग्रमश्रम -

प्रकम्पिरम्फोजभरा ब्रजासनाः।

भरुतुमनुर्ददुशुस्समनुतो

रिनिष्पतदारुणदारुमध्यगम् ॥ 42.3 ॥

428

शिशोरहो किं किमडुदिति द्रुतं

प्रधार्य नन्दः पशुपाश्च डूसुराः।

भरुतुमालोक्य यशोदया धुतं

समाश्रसन्नश्रुजलार्द्रलोचनाः ॥ 42.4 ॥

429

कस्को नु कौतस्कुत एष रिस्मयो

रिशक्कटं यच्छकटं रिपाटितम्।

- न कारणं किञ्चिदिहेति ते स्थिताः  
 स्वनासिकादुक्तरास्त्रुदीक्षकाः ॥ 42.5 ॥ 430
- कुमारकस्यास्य पयोधरार्थिनः  
 प्ररोदने लोलपदाम्बुजाहतम्।  
 मया मया दृष्टमनो रिपर्यगा -  
 दितीश ते पालकबालका जगुः ॥ 42.6 ॥ 431
- भिया तदा किञ्चिदजानतामिदं  
 कुमारकाणामतिदुर्घटं रचः।  
 भ्रंभ्रभारिदुरैरितीरितं  
 मनागिराशक्त्यत दृष्टपूतनैः ॥ 42.7 ॥ 432
- प्ररालताम्रं किमिदं पदं ऋतं  
 सरोजरम्यौ नु करौ रिरोजितौ।  
 इति प्रसर्पंकरुणातरङ्गिता -  
 स्त्रुदसमापस्पृशुरसनाजनाः ॥ 42.8 ॥ 433
- अथे सुतं देहि जगत्पतेः कृपा -  
 तरसपातांपरिपातमद्य मे।  
 इति स्म ससृह्य पिता व्रदसकं  
 मुहूर्मुहः श्लिष्यति जातकण्ठकः ॥ 42.9 ॥ 434
- अनोनिलीनः किल हस्तमागतः  
 सुरारिरेरं भ्रता रिहिंसितः।  
 रजोहपि नो दृष्टममुष्य तंकथं  
 स शुद्धसत्त्वे व्रथि लीनरान् ध्रुवम् ॥ 42.10 ॥ 435
- प्रपूजितैस्तत्र ततो द्विजातिभि -  
 र्रिशेषतो लम्बितमङ्गलाशिसः।

ब्रजं निजैर्बाल्यरसैरिमोहयन्  
मरुत्पुराधीश रुजां जहीहि मे ॥ 42.11 ॥

436

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्विचत्वारिंशत् दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে ত্ৰিচৎরারিংশং দশকম্ ॥

তৃণারতঁরধরণনম্

ৎরামেকদা গুরুমরুৎপূরনাথ রোঢ়ুং

গাঢ়াধিরুঢ়গরিমাণমপারযন্তী।

মাতা নিধায় শযনে কিমিদং বতেতি

ধ্যায়ন্ত্যচেষ্টত গৃহেষু নিরিষ্টশঙ্কা ॥ 43.1 ॥

437

তারদ্বিদূরমুপকর্ণিতঘোরঘোষ -

র্যাজ্জ্বল্টিপাংসুপটলীপরিপূরিতাশঃ।

রাত্যারপুস্স কিল দৈত্যররস্তুণার -

র্তাখ্যো জহার জনমানসহারিণং ত্ৱরাম্ ॥ 43.2 ॥

438

উদ্দামপাংসুতিমিরাহতদৃষ্টিপাতে

দ্রষ্টুং কিমপ্যকুশলে পশুপাললোকে।

হা বালকস্য কিমিতি ত্ৱদুপান্তমাপ্তা

মাতা ভরন্তমরিলোক্য ভৃশং রুরোদ ॥ 43.3 ॥

439

তারং স দানরররোহপি চ দীনমূর্তি -

র্ভারৎকভারপরিধারণলুনরেগঃ।

সঙ্কোচমাপ তদনু ক্ষতপাংসুঘোষে

ঘোষে র্যতায়ত ভরজ্জননীনিদাঃ ॥ 43.4 ॥

440

রোদোপকর্ণনরশাদুপগম্য গেহং

ক্রন্দৎসু নন্দমুখগোপকুলেষু দীনঃ।



- ॐरां दानरञ्जुखिलमुक्तिकरं मुमुक्षु -  
 स्त्रुयप्रमुञ्जति पपात रिषत्प्रदेशात् ॥ 43.5 ॥ 441
- रोदाकुलास्तदनु गोपगणा बहिष्ठ -  
 पाषाणपृष्ठभुरि देहमतिस्त्रुरिष्ठम्।  
 प्रैम्फुत्त हत्त निपतत्तममुष्य रम्फ -  
 स्यम्कीणमेर च भरत्तमलं हसत्तम् ॥ 43.6 ॥ 442
- ग्रारप्रपातपरिपिष्ठगरिष्ठदेह -  
 त्रष्टासुदुष्टदनुजोपरि धृष्टहासम्।  
 आह्वानमम्बुजकरेण भरत्तमेत्य  
 गोपा दधुर्गिरिररादिर नीलरत्नम् ॥ 43.7 ॥ 443
- एकैकमाशु परिगृह्य निकामनन्द -  
 न्नादिगोपपरिरक्करिचुषिताम्।  
 आदातुकामपरिशक्तिगोपनारी -  
 हस्ताम्बुजप्रपतितं प्रणुमो भरत्तम् ॥ 43.8 ॥ 444
- डूयोहपि किन्नु कृणुमः प्रणतार्तिहारी  
 गोरिन्द एर परिपालयतां सुतं नः।  
 इत्यादि मातरपितृप्रमुत्थैस्तदानीं  
 सम्प्रार्थितस्त्रुदरनाय रिभो ॐमेर ॥ 43.9 ॥ 445
- राताम्बुकं दनुजमेरमयि प्रधुन्वन्  
 रातोद्भरान् मम गदान् किमु नो धुनोषि।  
 किं वा करोमि पुनरप्यनिलालयेश  
 निश्शेषरोगशमनं मुहुरर्थये ॐराम् ॥ 43.10 ॥ 446

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रिचत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये चतुश्चत्वारिंशं दशकम् ॥ जातकर्मनामकरणवर्णनम्

गूढं रसुदेरगिरा

कर्तुं ते निष्क्रियस्य संस्कारान्।

हृदगतहोरातत्रो

गर्गमुनिस्त्रुदगृहं रिभो गतरान् ॥ 44.1 ॥

447

नन्दोहथ नन्दिताम्ना

बृन्दिष्टं मानयन्नमुं यमिनाम्।

मन्दस्मितार्द्रमूचे

एरंसंस्कारान् रिधातुमुंसुकधीः ॥ 44.2 ॥

448

यदुरंशाचार्यंरां

सुनिभृतमिदमार्यं कार्यमिति कथयन्।

गर्गो निर्गतपुलक -

श्चक्रे तत्र साग्रजस्य नामानि ॥ 44.3 ॥

449

कथमस्य नाम कुरे

सहस्रनाम्नो ह्यनन्तनाम्नो रा।

इति नूनं गर्गमुनि -

श्चक्रे तत्र नाम नाम रहसि रिभो ॥ 44.4 ॥

450

कृषिधातुणकाराभ्यां

सन्तानन्दात्पतां किलाडिलपं।

जगदघकर्षिंरं रा

कथयदृषिः कृष्णनाम ते र्यतनोत् ॥ 44.5 ॥

451

अन्यांश्च नामभेदान्

र्याकुरर्न्नग्रजे च रामादीन्।

अतिमानुषानुभारं

न्यगदत्तामप्रकाशयन् पित्रे ॥ 44.6 ॥

452

स्निह्यति यस्तर पुत्रे

मुह्यति स न मायिकैः पुनः शोकैः।

द्रुह्यति यस्स तु नश्ये -

दित्यरदत्ते महत्तुमृषिर्यः ॥ 44.7 ॥

453

जेष्यति बहतरदैत्यान्

नेष्यति निजबन्धुलोकममलपदम्।

श्रोष्यति सुरिमलकीर्ती -

रस्येति भरद्भिभूतिमृषिरुचे ॥ 44.8 ॥

454

अमुनैर सरदुर्गं

तरितासु कृतासुमत्र तिष्ठध्रम्।

हरिरेरेत्यनभिलप -

नित्यादि ररामरण्यत् स मुनिः ॥ 44.9 ॥

455

गर्गेहथ निर्गतेहस्मिन्

नन्दितनन्दादिनन्द्यामानसुम्।

मदगदमुदगतकरुणो

निर्गमय श्रीमरुत्पुराधीश ॥ 44.10 ॥

456

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुश्चत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে পঞ্চচত্রারিংশং দশকম্ ॥

কৃষ্ণস্য বালক্রীডারর্ণনম্

অযি সবল মুরারে পাণিজানুপ্রচারৈঃ

কিমপি ভরনভাগান্ ভুষযন্তৌ ভরন্তৌ।

চলিতচরণকঞ্জৌ মঞ্জুমঞ্জীরশিঞ্জা -

শ্ররণকুতুকভাজৌ চেরতুশচারুরেগাৎ ॥ 45.1 ॥

457

মৃদু মৃদু রিহসন্তাবুন্মিষদন্তরন্তৌ

রদনপতিতকেশৌ দৃশ্যপাদাজ্জদেশৌ।

ভুজগলিতকরান্তর্যালগৎ কঙ্কণাক্ষৌ

মতিমহরতমুচ্চৈঃ পশ্যতাং রিশ্রনূণাম্ ॥ 45.2 ॥

458

অনুসরতি জনৌঘে কৌতুকর্যাকুলাক্ষে

কিমপি কৃতনিদাদং র্যাহসন্তৌ দ্ররন্তৌ।

রলিতরদনপদ্মং পৃষ্ঠতো দত্তদৃষ্টী

কিমির ন রিদধাথে কৌতুকং রাসুদের ॥ 45.3 ॥

459

দ্রুতগতিষু পতন্তাবুখিতৌ লিপ্তপঙ্কৌ

দিরি মুনিভিরপঙ্কৈঃ সস্মিতং রন্দ্যমানৌ।

দ্রুতমথ জননীভ্যাং সানুকম্পং গৃহীতৌ

মুহুরপি পরিরক্কৌ দ্রাগ্যরাং চুষ্ণিতৌ চ ॥ 45.4 ॥

460

স্মুতকুচভরমঙ্কৈ ধারযন্তী ভরন্তং

তরলমতি যশোদা স্তন্যদা ধন্যধন্যা।

- कपटपशुप मध्ये मुक्कहासाक्कुरं ते  
दशनमुकुलहृद्यं रीम्क्य रक्त्रं जहर्ष ॥ 45.5 ॥ 461
- तदनु चरणचारी दारकैस्साकमारा -  
निलयततिषु खेलन् बालचापल्यशाली।  
भरनशुकरिलालान् रंसकांश्चानुधारन्  
कथमपि कृतहासैर्गोपकैर्रारितोहडूः ॥ 45.6 ॥ 462
- हलधरसहितस्त्रुं यत्र यत्रोपयातो  
रिरशपतितनेत्रास्तत्र तत्रैर गोप्यः।  
रिगलितगृहकृत्या रिस्मृतापत्यडृत्या  
मुरहर मुहरतयन्ताकुला नित्यमासन् ॥ 45.7 ॥ 463
- प्रतिनरनरनीतं गोपिकादत्तमिच्छन्  
कलपदमुपगायन् कोमलं क्लापि नृत्यन्।  
सदययुरतिलोकैरर्पितं सर्पिरश्वन्  
क्लचन नररिपक्कं दुक्कमप्यापिवस्त्रुम् ॥ 45.8 ॥ 464
- मम खलु बलिगेहे याचनं जातमास्ता -  
मिह पुनरवलानामग्रतो नैर कुरे।  
इति रिहितमतिः किं देर सन्त्यज्य याच्छ्रां  
दधिघृतमहरस्त्रुं चारुणा चोरणेन ॥ 45.9 ॥ 465
- तर दधिघृतमोषे घोषयोषाजनाना -  
मभजत हृदि रोषो नारकाशं न शोकः।  
हृदयमपि मुषिंरा हर्षसिक्को न्यधास्त्रुं  
स मम शमय रोगान् रातगेहाधिनाथ ॥ 45.10 ॥ 466

शाखाग्रेहथ रिधुं रिलोक्य फलमित्यथां च तातं मुहः  
सम्प्रार्थ्याथ तदा तदीय रचसा प्रोत्क्षिप्त बाहौ व्रथि।  
चित्रं देव शशी स ते करमगां किं ब्रूमहे सम्पत -  
ज्ज्यातिर्मण्डलपुरिताखिलरपुः प्रागा रिराद्रूपताम् ॥ 45.11 ॥

467

किं किं वतेदमिति सद्भ्रम भाजमेनं  
ब्रह्मार्णवे ऋणममुं परिमज्य तातम्।  
मायां पुनस्तनयमोहमयीं रितन्त्र -  
नानन्दचिन्मय जगन्मय पाहि रोगां ॥ 45.12 ॥

468

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चचत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে ষট্চত্রারিংশং দশকম্ ॥

বিশ্বরূপপ্রদর্শনবর্ণনম্

অযি দেব পুরা কিল ত্রযি

স্বয়মুত্তানশযে স্তনক্ৰযে।

পরিজৃম্ভণতো ব্যপার্বতে

বদনে বিশ্বমচষ্ট বল্লরী ॥ 46.1 ॥

469

পুনরপ্যথ বালকৈঃ সমং

ত্রযি লীলানিরতে জগৎপতে।

ফলসঞ্চয়বঞ্চনক্রুধা

তব মৃদ্বোজনমুচুরভকাঃ ॥ 46.2 ॥

470

অযি তে প্রলযারধৌ ব্রিভো

ক্ষিতিতোযাদিসমস্তভক্ষিণঃ।

মৃদুপাশনতো রুজা ভরে -

দিতি ভীতা জননী চুকোপ সা ॥ 46.3 ॥

471

অযি দুর্দিনযাত্মক ত্রযা

কিমু মৃৎসা বত বৎস ভক্ষিতা।

ইতি মাতৃগিরং চিরং ব্রিভো

ব্রিতথাং ত্রং প্রতিজঞ্জিষে হসন্ ॥ 46.4 ॥

472

অযি তে সকলৈর্ব্রিনিশ্চিতে

ব্রিমতিশ্চেদ্বদনং ব্রিদার্যতাম্।

- इति मातृरिभर्त्सितो मुखं  
 रिकसंपद्मनिभं र्यदारयः ॥ 46.5 ॥ 473
- अपि मृल्लरदर्शनोऽसुकां  
 जननीं तां बहू तर्पयन्निर।  
 पृथिवीं निथिलां न केरलं  
 डुरनान्यप्यथिलान्यदीदृशः ॥ 46.6 ॥ 474
- कुहचिद्भनमम्बुधिः क्लृचिं  
 क्लृचिदभ्रं कुहचिद्रसातलम्।  
 मनुजा दनुजाः क्लृचिं सुरा  
 ददृशे किं न तदा र्ददाने ॥ 46.7 ॥ 475
- कलशाम्बुधिशायिनं पुनः  
 पररैकुष्ठपदाधिरासिनम्।  
 स्वपुरश्च निजार्भकात्प्रकं  
 कतिधा र्वां न ददर्श सा मुखे ॥ 46.8 ॥ 476
- रिकसद्भुरने मुखोदरे  
 ननु डूयोऽपि तथारिधाननः।  
 अनया स्फुटमीक्षितो भरा -  
 ननरस्त्रां जगतां वतातनोः ॥ 46.9 ॥ 477
- धृततद्भुधियं तदा ऋणं  
 जननीं तां प्रणयेन मोहयन्।  
 स्तनमम्बु दिशेत्युपासजन्  
 डगरन्नद्भुतबाल पाहि माम् ॥ 46.10 ॥ 478

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षट्चत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥



শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये सप्तचत्वारिंशं दशकम् ॥

উলুখলবন্ধনবর্ণনম্

একদা দধিরিমাথকারিণীং

মাতরং সমুপসেদিরান্ ভরান্।

স্তন্যলোলুপতয়া নিরারয -

ব্ৰহ্মমেত্য পপিরান্ পযোধরৌ ॥ 47.1 ॥

479

অর্ধপীতকুচকুড্মলে ংরযি

স্নিগ্ধহাসমধুরাননাধ্বুজে।

দুগ্ধমীশ দহনে পরিস্ফুতং

ধর্তুমাশু জননী জগাম তে ॥ 47.2 ॥

480

সামিপীতরসভঙ্গসঙ্গত -

ক্রোধভারপরিভূতচেতসা।

মহুদগুমুপগৃহ্য পাটিতং

হস্ত দেব দধিভাজনং ংরযা ॥ 47.3 ॥

481

উচ্চলদ্ধুরনিতমুচ্চকৈস্তুদা

সন্নিশম্য জননী সমাদ্ৰুতা।

ংরদ্যশোরিসররদ্ দদর্শ সা

সদ্য এর দধি রিস্তৃতং ক্ষিতৌ ॥ 47.4 ॥

482

বেদমার্গপরিমার্গিতং রুষা

ংরামরীক্ষ্য পরিমার্গযন্ত্যসৌ।

- सन्ददर्श सुकृतिन्युलूखले  
दीयमाननरनीतमोतरे ॥ 47.5 ॥ 483
- ९रां प्रगृह्य वत डीतिडारना -  
डसुराननसरोजमाशु सा।  
रोषरुषितमुथी सथीपुरो  
वक्कनाय रशनामुपाददे ॥ 47.6 ॥ 484
- वक्कुमिच्छति यमेर सडजन -  
सुतं डरनुतमयि वक्कुमिच्छती।  
सा नियुड्य रशनागुणान् वहुन्  
द्व्यसुलोनमथिलं किलैक्कत ॥ 47.7 ॥ 485
- रिस्मितोऽस्मितसथीजनेक्कितां  
स्त्रिनसन्नरपुषं निरीक्क्य ताम्।  
नित्यमुक्कुरपुरप्यहो हरे  
वक्कमेर कूपयाहन्नरन्यथाः ॥ 47.8 ॥ 486
- स्त्रीयतां चिरमुलूखले खले -  
त्यागता डरनमेर सा यदा।  
प्रागुलूखलविलान्तरे तदा  
सर्पिरर्पितमदन्नरास्थिथाः ॥ 47.9 ॥ 487
- यद्यपाशसुगमो रिडो डरान्  
संयतः किमु सपाशयाहनया।  
एरमादि दिरिजैरडिडुतो  
रातनाथ परिपाहि मां गदात् ॥ 47.10 ॥ 488

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तचत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये अष्टचत्वारिंशं दशकम् ॥

যমলার্জুনভঞ্জনৰ্ণনম্

মুদা সুরৌঘৈস্ত্ৰমুদারসম্মদৈ -

রুদীৰ্য দামোদর ইত্যভিষ্টুতঃ।

মৃদুদরঃ স্নৈরমুলুখলে লগ -

ন্নদুরতো দ্বৌ ককুভারুদৈক্ষথাঃ ॥ 48.1 ॥

489

কুবেরসুনুর্নলকুবরাভিধঃ

পরো মণিগ্রীর ইতি প্রথাং গতঃ।

মহেশসেরাধিগতশ্রিয়োন্মদৌ

চিরং কিল ৎরদ্বিমুখারখেলতাম্ ॥ 48.2 ॥

490

সুরাপগায়াং কিল তৌ মদোৎকটৌ

সুরাপগাযদ্বহুযৌরতারুতৌ।

রিরাসসৌ কেলিপরৌ স নারদৌ

ভরৎপদৈকপ্ররণৌ নিরৈক্ষত ॥ 48.3 ॥

491

ভিযা প্রিয়ালোকমুপাত্তরাসসং

পুরৌ নিরীক্ষ্যাপি মদান্কেচেতসৌ।

ইমৌ ভরদ্ব্যন্ত্যপশান্তিসিদ্ধযে

মুনির্জগৌ শান্তিমৃতে কুতঃ সুখম্ ॥ 48.4 ॥

492

যুরামরাপ্তৌ ককুভাত্মতাং চিরং

হরিং নিরীক্ষ্যাথ পদং স্বমাপ্নুতম্।

- इतीरितौ तौ भरदीक्षणस्पृहां  
 गतौ ब्रजान्ते ककुभौ बभूरतुः ॥ 48.5 ॥ 493
- अतन्द्रमिन्द्रद्रुगुगं तथारिधं  
 समेषुषा मन्त्रगामिना व्रया।  
 तिराषितोलूखलरोधनिधुतौ  
 चिराय जीर्णौ परिपातितौ तरु ॥ 48.6 ॥ 494
- अभाजि शाथिद्वितयं यदा व्रया  
 तदैर तदर्गतलान्निरेषुषा।  
 महाव्रिषा यक्षयुगेन तक्षणा -  
 दभाजि गोरिन्द भरानपि स्तरैः ॥ 48.7 ॥ 495
- इहान्यभक्तोऽपि समेष्यति क्रमां  
 भरुमेतौ खलु रुद्रसेरकौ।  
 मुनिप्रसादान्तरदङ्घ्रिमागतौ  
 गतौ वृणानौ खलु भक्तिमुत्तमाम् ॥ 48.8 ॥ 496
- ततस्तरुन्दारणदारुणारर -  
 प्रकम्पिसम्पातिनि गोपमणुले।  
 रिलज्जितव्रज्जननीमुखेष्णिणा  
 र्यमोष्णि नन्देन भरान् रिमोक्षदः ॥ 48.9 ॥ 497
- महीरुहोर्मध्यगतो वतार्भको  
 हरेः प्रभारदपरिष्कतोऽधुना।  
 इति व्रराणैर्गमितो गृहं भरान्  
 मरुत्पुराधीश्वर पाहि मां गदां ॥ 48.10 ॥ 498

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टचत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये एकानपञ्चाशं दशकम् ॥

बुन्दारनगमनरर्णनम्

ভরৎপ্রভারারিদুরা হি গোপা -

স্বরুপ্রপাতাদিকমত্র গোষ্ঠে।

অহেতুমুৎপাতগণং রিশঙ্ক্য

প্রযাতুমন্যত্র মনো রিতেনুঃ ॥ 49.1 ॥

499

তত্রোপনন্দাভিধগোপরর্থো

জগৌ ভরৎপ্রেরণ্যৈর নুনম্।

ইতঃ প্রতীচ্যাং রিপিনং মনোজ্ঞং

বুন্দারনং নাম রিরাজতীতি ॥ 49.2 ॥

500

বৃহদ্বনং তৎ খলু নন্দমুখ্যা

রিধায় গৌষ্ঠীনমথ ক্ষণেন।

ৎরদন্বিতৎরজ্জননীনিরিষ্ট -

গরিষ্ঠযানানুগতা রিচেলুঃ ॥ 49.3 ॥

501

অনোমনোজ্ঞধ্রনিধেনুপালী -

খুরপ্রণাদান্তরতো রধুভিঃ।

ভরদ্বিনোদালপিতাক্ষরাণি

প্রপীয নাজ্জায়ত মার্গদৈর্ঘ্যম্ ॥ 49.4 ॥

502

নিরীক্ষ্য বুন্দারনমীশ নন্দ -

ৎপ্রসুনকুন্দপ্রমুখদ্রমৌঘম্।

अमोदथाः शाल्मलसाल्मलक्ष्म्या हरिन्मणीकुट्टिमपुष्टशोभम् ॥ 49.5 ॥	503
नरालनिर्बुटनिरासभेदे - श्रुशेषगोपेषु सुखासितेषु। रनप्रियं गोपकिशोरपाली - रिमिश्रितः पर्यगलोकथास्तुम् ॥ 49.6 ॥	504
अरालमार्गागतनिर्मलापां मरालकूजाकृतनर्मलापाम्। निरन्तरस्मैरसरोजरत्नां कलिन्दकन्यां समलोकयस्तुम् ॥ 49.7 ॥	505
मयूरकेकाशतलोभनीयं मयूखमालाशबलं मणीनाम्। रिरीङ्गलोकस्पृशमुच्छृङ्गे - गिरिं च गोरर्धनमैक्षथास्तुम् ॥ 49.8 ॥	506
समं ततो गोपकुमारकैस्तुं समन्ततो यत्र रनान्तमागाः। ततस्ततस्तां कुटिलामपश्यः कलिन्दजां रागरतीमिरैकाम् ॥ 49.9 ॥	507
तथारिधेस्मिन् रिपिने पश्ये समुंसुको रंसगणप्रचारे। चरन् सरामोहथ कुमारकैस्तुं समीरगेहाधिप पाहि रोगां ॥ 49.10 ॥	508

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकानपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে পঞ্চাশং দশকম্ ॥

রৎসাসুররধরণনম্, বকাসুররধরণনং চ

তরলমধুকৃদ্বন্দে বৃন্দারনেহথ মনোহরে

পশুপশিশুভিঃ সাকং রৎসানুপালনলোলুপঃ।

হলধরসখো দেব শ্রীমন্ রিচেরিথ ধারযন্

গরলমুরলীরেত্রং নেত্রাভিরামতনুদ্যুতিঃ ॥ 50.1 ॥

509

রিহিতজগতীরক্ষং লক্ষ্মীকরাধ্বজলালিতং

দদতি চরণদ্বন্দ্বং বৃন্দারনে ত্রয়ি পারনে।

কিমির ন বভৌ সম্পৎসম্পূরিতং তরুরল্লরী -

সলিলধরণীগোত্রক্ষেত্রাদিকং কমলাপতে ॥ 50.2 ॥

510

রিলসদুলপে কান্তারান্তে সমীরণশীতলে

রিপুলযমুনাতীরে গোরধনাচলমূর্ধসু।

ললিতমুরলীনাদঃ সঞ্চারণন্ খলু রাৎসকং

ক্ৰচন দিরসে দৈত্যং রৎসাকৃতিং ত্রমুদৈক্ষথাঃ ॥ 50.3 ॥

511

রভসরিলসৎপুচ্ছং রিচ্ছায়তোহস্য রিলোকযন্

কিমপি রলিতঙ্কঙ্কং রঙ্কপ্রতীক্ষমুদীক্ষিতম্।

তমথ চরণে বিভ্রদ্বিভ্রামযন্ মুহুরুচ্চকৈঃ

কুহচন মহারূক্ষে চিক্ষেপিথ ক্ষতজীরিতম্ ॥ 50.4 ॥

512

নিপততি মহাদৈত্যে জাত্যা দুরাত্মনি তৎক্ষণং

নিপতনজরক্ষুণ্ণক্ষোণীরুহক্ষতকাননে।

- दिरि परिमिलद्वन्दा बृन्दारकाः कुसुमोत्करैः  
शिरसि भरतो हर्षाद्द्वर्षन्ति नाम तदा हरे ॥ 50.5 ॥ 513
- सुरभिलतमा मूर्धन्यूर्ध्वं कुतः कुसुमारली  
निपतति तरेत्युक्तो बालैः सहेलमुदैरयः।  
व्यतिति दनुजक्लेशेणोर्ध्वं गतस्तुरुमगुलां  
कुसुमनिकरः सोहयं नूनं समेति शनैरिति ॥ 50.6 ॥ 514
- क्वचन दिरसे भूयो भूयस्तरे परुषातपे  
तपनतनयापाथः पातुं गता भरदादयः।  
चलितगरुतं प्रेक्षामासुर्वकं खलु रिस्यूतं  
क्लिधिधरगरुच्छेदे कैलासशैलमिरापरम् ॥ 50.7 ॥ 515
- पिबति सलिलं गोपब्राते भरन्तमभिक्रतः  
स किल निगिलन्नग्निप्रथ्यं पुनर्द्रुतमुद्रमन्।  
दलयितुमगां त्रोट्याः कोट्या तदाहहशु भरान् रिभो  
खलजनभिदाचुक्षुश्चक्षु प्रगृह्य ददार तम् ॥ 50.8 ॥ 516
- सपदि सहजां सन्द्रष्टुं रा मृतां खलु पूतना -  
मनुजमघमप्यग्रे गत्रा प्रतीक्लितुमेर रा।  
शमननिलयं याते तस्मिन् वके सुमनोगणे  
किरति सुमनोर्बुन्दं बृन्दारनां गृहमैयथाः ॥ 50.9 ॥ 517
- ललितमुरलीनादं दुरान्निशम्य रधुजनै -  
स्त्रुरितमुपगम्यारदारुचमोदमुदीक्लितः।  
जनितजननीनन्दानन्दः समीरणमन्दिर -  
प्रथितरसते शौरे दुरीकुरुष्वर ममामयान् ॥ 50.10 ॥ 518

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥



श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये एकपञ्चाशं दशकम् ॥

अघासुररधरणम्

कदाचन ब्रजशिशुभिः समं भवान्  
रनाशने रिहितमतिः प्रगेतराम्।  
समारूतो बहुररसमणैः  
सतेमनैर्निरगमदीश जेमनैः ॥ 51.1 ॥

519

रिनिर्यतस्तर चरणाम्बुजद्रया -  
दुदक्षितं त्रिभुरनपारनं रजः।  
महर्षयः पुलकधरैः कलेवरै -  
रुदुहिरे धृतभरदीक्षणोसराः ॥ 51.2 ॥

520

प्रचारयत्यरिलशान्दले तले  
पशुन् रिभो भरति समं कुमारकैः।  
अघासुरो न्यरुणदघाय रतनीं  
भयानकः सपदि शयानकाकृतिः ॥ 51.3 ॥

521

महाचलप्रतिमतनोर्गुहानिभ -  
प्रसारितप्रथितमुखस्य कानने।  
मुखोदरं रिहरणकौतुकदगताः  
कुमारकाः किमपि रिदुरगे ररषि ॥ 51.4 ॥

522

प्रमादतः प्ररिशति पन्नगोदरं  
रुथतनौ पशुपकुले सरासके।

- रिदन्निदं वरमपि रिरेशिथ प्रभो  
 सूहज्जनं रिशरणमाशु रम्भितुम् ॥ 51.5 ॥ 523
- गलोदरे रिपुलितरर्षणा वरया  
 महोरगे लुठति निरुद्धमारुते।  
 द्रुतं भरान् रिदलितकर्णमण्डलो  
 रिमोचयन् पशुपपशुन् रिनिर्ययौ ॥ 51.6 ॥ 524
- म्हणं दिरि वरदुपगमार्थमास्थितं  
 महासुरप्रभवरमहो महो महं।  
 रिनिर्गते वरयि तु निलीनमञ्जसा  
 नभःस्थले ननृतुरथो जगुः सुराः ॥ 51.7 ॥ 525
- सरिस्मयैः कमलभरादिभिः सुरै -  
 रनुद्रुतस्तदनु गतः कुमारकैः।  
 दिने पुनस्तुरुणदशामुपेयुषि  
 स्वकैर्भरानतनुत भोजनोत्सरम् ॥ 51.8 ॥ 526
- रिषाणिकामपि मुरलीं नितम्बके  
 निरेशयन् कवलधरः कराश्रुजे।  
 प्रहासयन् कलरचनैः कुमारकान्  
 बुभोजिथ त्रिदशगणैर्मुदा नुतः ॥ 51.9 ॥ 527
- सुखाशनं वरिह तर गोपमण्डले  
 मथाशनां प्रियमिर देरमण्डले।  
 इति स्तुतस्त्रिदशरैर्जगत्पते  
 मरुत्पुरीनिलय गदां प्रपाहि माम् ॥ 51.10 ॥ 528

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে দ্বিপঞ্চাশৎ দশকম্ ॥

ব্রহ্মকৃতরৎসাপহারৰ্ণনম্

অন্যাতারনিকরেণনিরীক্ষিতং তে

ভূমাতিরেকমভিরীক্ষ্য তদাঘমোক্ষে।

ব্রহ্মা পরীক্ষিতুমনাঃ স পরোক্ষভারং

নির্যেহথ রৎসকগণান্ প্ররিতত্য মাযাম্ ॥ 52.1 ॥

529

রৎসানরীক্ষ্য রিরশে পশুপোৎকরে তা -

নানেতুকাম ইর ধাতৃমতানুরতী।

ৎরং সামিভুক্তকবলো গতরাংস্তদানীং

ভুক্তাংস্তিরোহধিত সরোজভরঃ কুমারান্ ॥ 52.2 ॥

530

রৎসায়িতস্তদনু গোপগণায়িতস্ত্বং

শিক্যাদিভাওমুরলীগরলাদিরূপঃ।

প্রাণ্ণদ্বিহত্য রিপিনেষু চিরায় সাযং

ৎরং মাযযাহথ বহুধা ব্রজমাযযাথ ॥ 52.3 ॥

531

ৎরামের শিক্যগরলাদিমযং দধানো

ভূযস্ত্বমের পশুরৎসকবালরূপঃ।

গোরূপিণীভিরপি গোপরধুমযীভি -

রাসাদিতোহসি জননীভিরতিপ্রহর্ষাৎ ॥ 52.4 ॥

532

জীরং হি কঞ্চিদভিমানরশাৎস্বকীয়ং

মৎরা তনূজ ইতি রাগভরং রহন্ত্যঃ।

- आत्मानमेर तु भरुतुमराप्य सुनुं  
 प्रीतिं ययुर्न कियतीं रनितश्च गारः ॥ 52.5 ॥ 533
- एरं प्रतिष्णरिजृशुतहर्षभार -  
 निशेषषगोपगणलालितडूरिमूर्तिम्।  
 ९रामग्रजोहपि वुबुधे किल रंसरात्ते  
 ब्रह्मात्नोरपि महान् युरयोरिषेषः ॥ 52.6 ॥ 534
- रर्षारधौ नरपुरातनरंसपालान्  
 दृष्टरा रिरेकमसृणे द्रुहिणे रिमुटे।  
 प्रादीदृशः प्रतिनरान् मकुटाङ्गदादि -  
 डूषांश्चतुर्भुजयुजः सजलाशुदाभान् ॥ 52.7 ॥ 535
- प्रत्येकमेर कमलापरिलालिताङ्गान्  
 भोगीन्द्रभोगशयनान् नयनाभिरामान्।  
 लीलानिमिलितदृशः सनकादियोगि -  
 र्यासेरितान् कमलडूर्भरतो ददर्श ॥ 52.8 ॥ 536
- नारायणाकृतिमसङ्घ्यतमां निरीक्ष्य  
 सरत्र सेरकमपि स्मरेक्ष्य धाता।  
 मायानिमग्नहृदयो रिमुमोह यार -  
 देको बडूरिथ तदा कवलार्धपाणिः ॥ 52.9 ॥ 537
- नश्यन्मदे तदनु रिश्रपतिं मुहृशुत्वां  
 नंरा च नूतरति धातरि धाम याते।  
 पोतैः समं प्रमुदितैः प्ररिशन् निकेतं  
 रातालयाधिप रिभो परिपाहि रोगां ॥ 52.10 ॥ 538

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्विपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये त्रिपञ्चाशं दशकम् ॥

धेनुकासुररधरणम्

अतीत्य बाल्यं जगतां पते वर -

मुपेत्य पौगण्डुरयो मनोज्जम्।

उपेक्ष्य रत्नसारनमुत्सरेन

प्रार्थथा गोगणपालनायाम् ॥ 53.1 ॥

539

उपक्रमस्यानुगुणैर सेयं

मरुत्पुराधीश तत्र प्रवृत्तिः।

गोत्रापरित्राणकृतेहरतीर्ण -

स्तुदेर देराहहरभथास्तदा यत् ॥ 53.2 ॥

540

कदापि रामेण समं रनाञ्जे

रनश्रियं रीक्ष्य चरन् सुखेन।

श्रीदामनाम्नः स्वसखस्य राचा

मोदादगा धेनुककाननं वरम् ॥ 53.3 ॥

541

उत्तालतालीनिरहे वरदुक्त्या

बलेन धृतेहथ बलेन दोर्ढ्याम्।

मृदुः खरश्चाभ्यपतत्पुरस्तात्

फलोत्करो धेनुकदानरोहपि ॥ 53.4 ॥

542

समुद्यतो धैनुकपालनेहहं

कथं रधं धैनुकमद्य कुरे।

- ইতীর মংরা ধ্রমগ্রজেন  
সুরৌঘযোদ্ধারমজীঘনস্কুম্ ॥ 53.5 ॥ 543
- তদীযভৃত্যানপি জম্বুকংরে -  
নোপাগতানগ্রজসংযুতস্কুম্।  
জম্বুফলানীর তদা নিরাস্থ -  
স্তালেষু খেলন্ ভগরন্ নিরাস্থঃ ॥ 53.6 ॥ 544
- রিনিঘ্নতি ত্রয়্যথ জম্বুকৌঘং  
সনামকংরাদ্রুগস্তদানীম্।  
ভযাকুলো জম্বুকনামধেযং  
শ্রুতিপ্রসিদ্ধং ব্যধিতেতি মন্যে ॥ 53.7 ॥ 545
- তরারতারস্য ফলং মুরারে  
সঞ্জাতমদ্যেতি সুরৈর্নুতস্কুম্।  
সত্যং ফলং জাতমিহেতি হাসী  
বালৈঃ সমং তালফলান্যভুঙ্কথাঃ ॥ 53.8 ॥ 546
- মধুদ্ররক্ষন্তি বৃহন্তি তানি  
ফলানি মেদোভরভৃন্তি ভুকত্বা।  
তৃপ্তৈশ্চ দৃপ্তৈর্ভরনং ফলৌঘং  
রহন্দিরাগাঃ খলু বালকৈস্কুম্ ॥ 53.9 ॥ 547
- হতো হতো ধেনুক ইত্যুপেত্য  
ফলান্যদন্দির্মধুরাণি লোকৈঃ।  
জযেতি জীরেতি নুতো রিভো ত্রং  
মরুৎপুরাধীশ্বরর পাহি রোগাৎ ॥ 53.10 ॥ 548

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये त्रिपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये चतुःपञ्चाशं दशकम् ॥

कालियमर्दने गोगोपानामुज्जीरनवर्णनम्

९र९सेरो९कस्सेसौभरिर्नाम पूरुं

कालिन्द्युत्तुर्द्वादशाब्दं तपस्यन्।

मीनब्रूते स्नेहरान् भोगलोले

तार्क्ष्यं साम्कादैक्कताग्रे कदाचिं ॥ 54.1 ॥

549

९रद्वाहं तं सक्कुधं तृक्कसूनुं

मीनं कक्किज्जक्कतं लक्कयन् सः।

तप्तश्चित्ते शप्तरानत्र चे९ ९रं

जत्तुन् भोज्जा जीरितं चापि मोक्त्ता ॥ 54.2 ॥

550

तस्मिन् काले कालियः क्कुरेलदर्पां

सर्पारातेः कक्कितं भागमप्पन्।

तेन क्रोधां ९र९पदाञ्चोज्जाभाजा

पक्कक्किप्पुत्तदुरापं पयोहगां ॥ 54.3 ॥

551

घोरे तस्मिन् सूरजानीररासे

तीरे वृक्का रिक्कताः क्कुरेलरेगां।

पक्किब्रूताः पेतुरत्रे पतन्तः

कारुण्यार्द्रं ९रन्मनस्तेन जातम् ॥ 54.4 ॥

552

काले तस्मिन्नेकदा सीरपाणिं

मुक्त्वा याते यामुनं काननात्तम्।

९रयुद्दामग्रीष्मडीष्मोष्मतप्ता

गोगोपाला र्यापिवन् ऋरेलतोयम् ॥ 54.5 ॥

553

नश्यज्जीरान् रिच्यतान् ऋातले तान्

रिश्नान् पश्यन्नच्युत ९रं दयार्द्रः।

प्राप्योपान्तं जीरयामासिथ द्राक्

पीयूषाम्भोरर्षिभिः श्रीकटाक्लैः ॥ 54.6 ॥

554

किं किं जातो हर्षरर्षातिरेकः

सर्वाङ्गेष्वित्युथिता गोपसङ्घाः।

दृष्टराहग्रे ९रां ९रंकृतं तद्विदन्त -

स्त्रामालिङ्गन् दृष्टनानाप्रभाराः ॥ 54.7 ॥

555

गारशैचरं लङ्कजीराः ऋणेन

स्त्रीतानन्दास्त्रां च दृष्टरा पुरस्तां।

द्रागारब्रुः सरतो हर्षवाष्पं

र्यामुष्णेत्या मन्दमुद्यन्निनादाः ॥ 54.8 ॥

556

रोमाङ्गैश्च ९रं सरतो नः शरीरे

डूयस्यन्तः काचिदानन्दमूर्छा।

आश्चर्योश्च ९रं ऋरेलरेगो मुकुन्दे -

तुञ्जो गोपैर्नन्दितो रन्दितोहडुः ॥ 54.9 ॥

557

९रं डक्तान् मुक्तजीरानपि ९रं

मुक्तापाङ्गैरसुरोगाङ्गुनोषि।

ताद्गडूतस्त्रीतकारुण्यडूमा

रोगां पाया रायुगेहाधिरास ॥ 54.10 ॥

558

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुःपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥



श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चपञ्चाशं दशकम् ॥

कालियमर्दने भगवन्नर्तनवर्णनम्

अथ वारिणि घोरतरं फणिनं

प्रतिवारयितुं कृतधीर्भगवन्।

द्रुतमारिथ तीरगनीपतरुं

विषमारुतशोषितपर्णचयम् ॥ 55.1 ॥

559

अधिरुह्य पदाम्बुरुहेण च तं

नरपल्लवतुल्यमनोज्जरुचा।

हृदवारिणि दूरतरं न्यपतः

परिघूर्णितघोरतरङ्गणे ॥ 55.2 ॥

560

धुरनप्रयत्नभूतो भवतो

गुरुभारिकम्पिजृम्भितजला।

परिमज्जयति स्म धनुश्शतकं

तटिनी वृत्ति स्फुटघोषरती ॥ 55.3 ॥

561

अथ दिक्कु रिदिक्कु परिक्कुभित -

अमितोदरवारिनिनादभरैः।

उदकादुदगादुरगाधिपति -

स्रुदुपान्तमशान्तरुषाह्वमनाः ॥ 55.4 ॥

562

फणशृङ्गसहस्ररिनिस्समर -

ज्वलदग्निगोत्रविषामुधरम्।

- पुरतः फणिनं समलोकयथा  
 बहृशृङ्गिणमञ्जनशैलमिर ॥ 55.5 ॥ 563
- ज्वलदम्भि परिष्करदुग्रविष -  
 श्रसनोष्मभरः स महाडुजगः।  
 परिदश्य भरन्तमनन्तबलं  
 परिरेष्टयदस्फुटचेष्टमहो ॥ 55.6 ॥ 564
- अरिलोक्य भरन्तमथाकुलिते  
 तटगामिनि बालकधेनुगणे।  
 ब्रजगेहतलेहप्यनिमित्तशतं  
 समुदीक्ष्य गता यमुनां पशुपाः ॥ 55.7 ॥ 565
- अखिलेषु रिभो भरदीयदशा -  
 मरलोक्य जिहासुषु जीरभरम्।  
 फणिवक्त्रनमाशु रिमुच्य जरा -  
 दूदगम्यत हासजूषा भरता ॥ 55.8 ॥ 566
- अधिरुह्य ततः फणिराजफणान्  
 नन्ते भरता मृदुपादरुचा।  
 कलशिञ्जितनूपुरमञ्जुमिल -  
 ँकरकङ्कणसङ्कुलसङ्क्रुणितम् ॥ 55.9 ॥ 567
- जहृषुः पशुपास्तुतुषुर्मनयो  
 ररृषुः कुसुमानि सुरेन्द्रगणाः।  
 ँरयि नृत्यति मारुतगेहपते  
 परिपाहि स मां ँरमदान्तगदां ॥ 55.10 ॥ 568

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये षटपञ्चाशं दशकम् ॥

কালিযমর্দনে ভগবদনুগ্রহর্ষণনম্

রুচিরকম্পিতকুণ্ডলমণ্ডলঃ

সুচিরমীশ ননর্তিথ পন্নগে।

অমরতাডিতদুন্দুভিসুন্দরং

রিয়তি গাযতি দৈরতযৌরতে ॥ 56.1 ॥

569

নমতি যদ্যদমুষ্য শিরো হরে

পরিরিহায তদুন্নতমুন্নতম্।

পরিমথন্ পদপঙ্করুহা চিরং

র্যহরথাঃ করতালমনোহরম্ ॥ 56.2 ॥

570

ৎরদরভগ্নরিভুগ্নফণাগণে

গলিতশোণিতশোণিতপাথসি।

ফণিপতাররসীদতি সন্নতা -

স্তদবলাস্তর মাধর পাদযোঃ ॥ 56.3 ॥

571

অযি পুরৈর চিরায পরিশ্রুত -

ৎরদনুভাররিলীনহদো হি তাঃ।

মুনিভিরপ্যনরাপ্যপথৈঃ স্তরৈ -

নুন্নুরীশ ভরন্তমযন্ত্রিতম্ ॥ 56.4 ॥

572

ফণিরধুগণভক্তিরিলোকন -

প্ররিকসৎকরুণাকুলচেতসা।

ফণিপতিৰ্ভরতাহ্চ্যত জীৱিত -

স্তুযি সমৰ্পিতমূৰ্তিৱৱানমৎ ॥ 56.5 ॥

573

ৱমণকং ব্ৰজ ৱাৱিধিমধ্যগং

ফণিৱিপূৰ্ন কৰোতি ৱিৱোধিতাম্।

ইতি ভৱদ্বচনান্যতিমানযন্

ফণিপতিৰ্নিৱগাদূৱগৈঃ সমম্ ॥ 56.6 ॥

574

ফণিৱধুজনদত্তমণিব্ৰজ -

জ্বলিতহাৱদুকুলৱিভূষিতঃ।

তটগতৈঃ প্ৰমদাশ্ৰৱিমিশ্ৰিতৈঃ

সমগথাঃ স্বজনৈৰ্দিৱসাৱধৌ ॥ 56.7 ॥

575

নিশি পুনস্তমসা ব্ৰজমন্দিৱং

ব্ৰজিতুমক্ষম এৱ জনোৎকৰে।

স্বপতি তত্র ভৱচ্চৰণাশ্ৰযে

দৱকৃশানূৱকৃষ্ণ সমস্ততঃ ॥ 56.8 ॥

576

প্ৰবুধিতানথ পালয পালযে -

তু্যদযদাৰ্তৰৱান্ পশুপালকান্।

অৱিতুমাশু পপাথ মহানলং

কিমিহ চিত্ৰমযং খলু তে মুখম্ ॥ 56.9 ॥

577

শিখিনি ৱৰ্ণত এৱ হি পীততা

পৱিলসত্যধুনা ক্ৰিয়যাহপ্যসৌ।

ইতি নুতঃ পশুপৈৰ্মুদিতৈৰিভো

হৱ হৱে দুৱিতৈঃ সহ মে গদান্ ॥ 56.10 ॥

578

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये षट्पञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तपञ्चाशं दशकम् ॥

प्रलम्बासुररधरणम्

रामसखः क्वापि दिने

कामद भगवन् गतो भवान् रिपिनम्।

सूनुभिरपि गोपानां

धेनुभिरभिसंभृतो लसद्द्वेषः ॥ 57.1 ॥

579

सन्दर्शयन् बलाय

स्त्रैरं बृन्दारनश्रियं रिमलाम्।

काण्ठीरैः सह बालै -

र्डाण्ठीरकमागमो रटं क्रीडन् ॥ 57.2 ॥

580

तारतारकनिधन -

स्पृह्यालुर्गोपमूर्तिरदयालुः।

दैत्यः प्रलम्बनामा

प्रलम्बबाह्वं भरुमापेदे ॥ 57.3 ॥

581

जानन्नप्यरिजान -

न्निर तेन समं निबद्धसौहार्दः।

रटनिकटे पटुपशुप -

र्यावद्धं द्रुन्द्रयुद्धमारक्काः ॥ 57.4 ॥

582

गोपान् रिभज्य तन्नन्

सङ्घं बलभद्रकं भरुकमपि।

ॐरद्वलडीरुं दैतुं

ॐरद्वलगतमन्त्रमन्यथा डगरन् ॥ 57.5 ॥

583

कल्लितरिजेतूरहने

समरे परयूथगं सुदयिततरम्।

श्रीदामानमधथाः

परराजितो डकुदसतां प्रथयन् ॥ 57.6 ॥

584

एरं वहुषु रिडूमन्

बालेषु रहंसु राह्यमानेषु।

रामरिजितः प्रलषो

जहार तं दूरतो डरुडीत्या ॥ 57.7 ॥

585

ॐरदूरं गमयन्तुं

तं दृष्टरा हलिनि रिहितगरिमडरे।

दैतुः सरूपमागा -

दुदुपां स हि बलोहपि चकितोहडुं ॥ 57.8 ॥

586

उडतया दैतुतनो -

सुनुखमालोक्य दूरतो रामः।

रिगतडयो दृडमुष्ट्या

डुशदुष्टं सपदि पिष्टरानेनम् ॥ 57.9 ॥

587

हंरा दानररीरं

प्राप्तं बलमालिलिङ्गिथ प्रेम्णा।

तारन्मिलतोरुंरयोः

शिरसि कृता पुष्परुष्टिरमरगणैः ॥ 57.10 ॥

588

आलषो डुरनानां

प्रालम्भं निधनमेरमारचयन्।

कालं रिहाय सदो

लोलम्बरुचे हरे हरेः क्लेशान् ॥ 57.11 ॥

589

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये अष्टपञ्चाशं दशकम् ॥

दाराग्निमोक्षादिरर्णनम्

ৎরযি রিহরণলোলে বালজালৈঃ প্রলম্ব -

প্রমথনসরিলম্বে ধেনরঃ স্বেচারাঃ।

তৃণকুতুকনিরিষ্টা দূরদূরং চরন্ত্যঃ

কিমপি রিপিনমৈষীকাখ্যমীষাম্বভূরুঃ ॥ 58.1 ॥

590

অনধিগতনিদাঘক্রৌর্ঘ্বেন্দারনান্তাং

বহিরিদমুপযাতাঃ কাননং ধেনরস্তাঃ।

তর রিরহরিষণা উষ্মলগ্রীষ্মতাপ -

প্রসররিসরদন্তস্যাকুলাঃ স্তন্তমাপুঃ ॥ 58.2 ॥

591

তদনু সহ সহায়ৈর্দূরমন্ত্রিষ্য শৌরে

গলিতসরণি মুঞ্জারণ্যসঞ্জাতখেদম্।

পশুকুলমভিরীক্ষ্য ক্ষিপ্রমানেতুমারা -

ভ্রুযি গতরতি হী হী সর্বতোহগ্নির্জজ্জ্বন্তে ॥ 58.3 ॥

592

সকলহরিতি দীপ্তে ঘোরভাঙ্কারভীমে

শিখিনি রিহতমার্গা অর্ধদন্ধা ইরার্তাঃ।

অহহ ভুরনবন্ধো পাহি পাহীতি সর্বে

শরণমুপগতাস্ত্ৰাং তাপহর্তারমেকম্ ॥ 58.4 ॥

593

অলমলমতিভীত্যা সর্বতো মীলযধ্বং

ভৃশমিতি তর রাচা মীলিতাক্ষেষু তেষু।



- क्व नु दरदहनोहसौ कुत्र मुञ्जाटरी सा  
सपदि ररुतिरे ते हस्त भाण्ठीरदेशे ॥ 58.5 ॥ 594
- जय जय तर माया केयमीशेति तेषां  
नुतिभिरुदितहासो बद्धनानारिलासः।  
पुनरपि रिपिनास्ते प्राचरः पाटलादि -  
प्रसरनिकरमात्रग्राह्यघर्मानुभारे ॥ 58.6 ॥ 595
- एरुषि रिमुखमिरोच्छेस्तापभारं रहस्तं  
तर भजनरदस्तः पङ्कमुच्छाषयस्तम्।  
तर डुजरदुदङ्घ्रुरितेजःप्रराहं  
तपसमयमनैषीर्यामुनेषु श्लेषु ॥ 58.7 ॥ 596
- तदनु जलदजालैस्त्रुपुस्तुल्यभाभि -  
रिक्सदमलरिद्युत्पीतरासोरिलासैः।  
सकलधुरनभाजां हर्षदां रर्षरेलां  
क्लिधिधरकुहरेषु श्वैररासी र्यनैषीः ॥ 58.8 ॥ 597
- कुहरतलनिरिष्टं एरां गरिष्ठं गिरीन्द्रः  
शिथिकुलनरकेकुकुभिः स्तोत्रकारी।  
श्रुटकुटजकदम्बस्तोमपुष्पाञ्जलिं च  
प्रिदधदनुभेजे देर गोरर्धनोहसौ ॥ 58.9 ॥ 598
- अथ शरदमुपेतां तां भरदुक्तचेतो -  
रिमलसलिलपुरां मानयन् काननेषु।  
तृणमलरनास्ते चारु सङ्गारयन् गाः  
परनपुरपते एरं देहि मे देहसौख्यम् ॥ 58.10 ॥ 599

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये एकानवष्टितमं दशकम् ॥ रेणुगानर्णनम्

९रद्वपुर्नरकलायकोमलं

प्रेमदोहनमशेषमोहनम्।

ब्रह्मा तद्वुपरचिनुदात्मकं

रीक्ष्य सम्मुहुरन्वहं स्त्रियः ॥ 59.1 ॥

600

मन्मथोन्मथितमानसाः क्रमा -

द्वुद्विलोकनरतास्तुतस्तुतः।

गोपिकासुर न सेहरे हरे

काननोपगतिमप्यहर्मुখে ॥ 59.2 ॥

601

निर्गते भरति ददुदृष्टय -

सुदगतेन मनसा मृगेक्षणाः।

रेणुनादमुपकर्ण्य दूरत -

सुद्विलासकथयाहभिरेमिरे ॥ 59.3 ॥

602

काननान्तमितरान् भरानपि

स्निग्धपादपतले मनोरमे।

र्यत्याकलितपादमास्थितः

प्रत्यपूरयत रेणुनालिकाम् ॥ 59.4 ॥

603

मारवाणधुतखेचरीकुलं

निर्विकारपशुपम्फिमगुलम्।

- द्रारणं च दृषदामपि प्रभो  
 तारकं रयजनि रेणुकुजितम् ॥ 59.5 ॥ 604
- रेणुरक्त्रतरलाङ्गुलीदलं  
 तालसङ्गलितपादपल्लरम्।  
 तं स्थितं तर परोक्कमप्यहो  
 संरिचित्य मुमुहूर्त्तजासनाः ॥ 59.6 ॥ 605
- निर्लिशक्त्रदग्ददर्शिनीः  
 खेचरीः खगमृगान् पशूनपि।  
 एरुपदप्रणयि काननं च ताः  
 धन्यधन्यमिति नन्त्रमानयन् ॥ 59.7 ॥ 606
- आपिवेषमधरामृतं कदा  
 रेणुडुक्त्रसशेषमेकदा।  
 दूरतो बत कृतं दुराशये -  
 त्याकुला मुहुरिमाः समामुहन् ॥ 59.8 ॥ 607
- प्रत्यहं च पुनरिथमसना -  
 श्चिउयोनिजनितादनुग्रहात्।  
 बद्धरागरिरशाङ्गुयि प्रभो  
 नित्यमापुरिह कृत्यमुत्ताम् ॥ 59.9 ॥ 608
- रागस्तारज्जायते हि स्वभारा -  
 न्मोक्त्रोपायो यत्नतः स्यान्न रा स्यात्।  
 तासां एरेकं तदद्वयं लक्त्रमासीत्  
 भाग्यं भाग्यं पाहि मां मारुतेश ॥ 59.10 ॥ 609

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकानवष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये षष्टितमं दशकम् ॥

गोपीरञ्जापहरणवर्णनम्

मदनातुरचेतसोह्वरहं

भ्रददङ्घ्रिद्वयदास्यकाम्यया ।

यमुनातटसीम्नि सैकतीं

तरलाक्ष्या गिरिजां समार्चिचन् ॥ 60.1 ॥

610

तर नामकथारताः समं

सुदृशः प्रातरूपागता नदीम् ।

उपहारशतैरपूजयन्

दधितो नन्दसुतो भवेदिति ॥ 60.2 ॥

611

इति मासमुपाहितव्रता -

स्तरलाक्षीरभिरीक्ष्य ता भवान् ।

करुणाम्दुलो नदीतटं

समयासीत्तदनुग्रहेच्छया ॥ 60.3 ॥

612

नियमारसितौ निजाम्बरं

तटसीमन्यरमुच्य तास्तदा ।

यमुनाजलखेलनाकुलाः

पुरतस्त्रामरलोक्य लज्जिताः ॥ 60.4 ॥

613

त्रपया नमिताननास्त्रथो

रनितान्स्त्रजालमन्तिके ।

निहितं परिगृह्य डुरुहो रिटपं रंरं तरसाहधिरुटरान् ॥ 60.5 ॥	614
इह तारदुपेत्य नीयतां रसनं रः सुदृशो यथायथम्। इति नर्ममृदुस्मिते रंरधि रुरति र्यामुमुहे रधुजनैः ॥ 60.6 ॥	615
अधि जीर चिरं किशोर न - सुर दासीररशीकरोषि किम्। प्रदिशाम्बरमधुजेम्फणे - तुदितस्त्रं स्मितमेर दतरान् ॥ 60.7 ॥	616
अधिरुह्य तटं कृताञ्जलीः परिशुद्धाः अगतीर्निरिक्ष्य ताः। रसनान्याखिलान्यनुग्रहं पुनरेरं गिरमप्यादा मुदा ॥ 60.8 ॥	617
रिदितं ननु रो मनीषितं रदितारस्त्रिह योग्यमुतरम्। यमुनापुलिने सचन्द्रिकाः म्फणदा इत्यबलास्त्रमुचिरान् ॥ 60.9 ॥	618
उपकर्ण्य डरनुखच्युतं मधुनिष्यन्दि रचो मृगीदृशः। प्रणयादधि रीम्फ्य रीम्फ्य ते रदनाञ्जं शनकैर्गृहं गताः ॥ 60.10 ॥	619
इति नन्ननुगृह्य रल्लरी - रिपिनाञ्जेषु पुरेर सञ्जरन्।	

करुणाशिशिरो हरे हर

९ररया मे सकलामथारलिम् ॥ 60.11 ॥

620

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये एकषष्टितमं दशकम् ॥

यज्ज्वरपत्न्युद्धरणरणनम्

ततश्च ब्रून्दारनतोहतिदूरतो

रनं गतस्त्रुं खलु गोपगोकुलैः।

हृदन्तरे भक्ततरद्विजागना -

कदम्बकानुग्रहणाग्रहं ररहन् ॥ 61.1 ॥

621

ततो निरीक्ष्याशरणे रनान्तरे

किशोरलोकं म्फुधितं तृषाकुलम्।

अदूरतो यज्ज्वरान् द्विजान् प्रति

र्यसर्जयो दीदिरियाचनाय तान् ॥ 61.2 ॥

622

गतेष्वरथो तेष्वरभिधाय तेहभिधां

कुमारकेष्वेरादनयाचिषु प्रभो।

श्रुतिस्त्रिरा अप्यभिनिन्युरश्रुतिं

न किष्किदूचुश्च महीसुरोत्तमाः ॥ 61.3 ॥

623

अनादरां खिन्नधियो हि बालकाः

समाययुर्बुक्तमिदं हि यज्ज्वरसु।

चिरादभक्ताः खलु ते महीसुराः

कथं हि भक्तं ररयि तैः समर्प्यते ॥ 61.4 ॥

624

निरेदयध्वं गृहिणीजनाय मां

दिशेयुरन्नं करुणाकुला इमाः।

- इति स्मितार्द्रं भरतेरिता गता -  
 स्ते दारका दारजनं यथाचिरे ॥ 61.5 ॥ 625
- गृहीतनाम्नि र्वायि सद्भ्रमाकुला -  
 श्चतुर्दिशं भोज्यरसं प्रगृह्य ताः।  
 चिरं धृतं रं प्ररिलोकनाग्रहाः  
 श्चकैर्निरुद्धा अपि तूर्णमाययुः ॥ 61.6 ॥ 626
- रिलोलपिञ्जं चिकुरे कपोलयोः  
 समुल्लसत्कुण्डलमार्द्रमीक्षिते।  
 निधाय बाह्वं सुहृदंससीमनि  
 स्थितं भरन्तं समलोकयन्त ताः ॥ 61.7 ॥ 627
- तदा च काचित्त्रुदुपागमोदयता  
 गृहीतहस्ता दयितेन यज्ज्वना।  
 तदैर सक्थिन्त्य भरन्तमञ्जसा  
 रिरेश कैरल्यमहो कृतिन्यसौ ॥ 61.8 ॥ 628
- आदाय भोज्यान्यनुगृह्य ताः पुन -  
 श्चुदसससम्पृहयोज्जातीर्गृहम्।  
 रिलोक्य यञ्ज्वाय रिसर्जयन्निमा -  
 श्चकर्थं भर्तृनपि ताम्बर्गर्णान् ॥ 61.9 ॥ 629
- निरूप्य दोषं निजमङ्गनाजने  
 रिलोक्य भक्तिं च पुनरिचारिभिः।  
 प्रबुद्धतत्रैस्त्रुमभिष्टुतो द्विजै -  
 र्मरुत्पुराधीश निरुक्त्वि मे गदान् ॥ 61.10 ॥ 630

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकषष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥



শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये द्विषष्टितमं दशकम् ॥ इन्द्रयागरिघातरर्णनम्

কদাচিদগোপালান্ রিহিতমখসম্ভাররিভরান্  
নিরিক্ষ্যৎ ৎরং শৌরে মঘরমদমুদ্বুংসিতুমনাঃ।  
রিজাননপ্যেতান্ রিনযম্‌দু নন্দাদিপশুপা -  
নপ্‌চ্ছঃ কো রাহযং জনক ভরতামুদ্যম ইতি ॥ 62.1 ॥

631

বভাষে নন্দস্তাং সুত ননু রিধেযো মঘরতো  
মখো রর্ষে রর্ষে সুখযতি স রর্ষণ পৃথিরীম্।  
নৃগাং রর্ষাযত্তং নিখিলমুপজীর্যং মহিতলে  
রিশেষাদস্ম্যাকং তৃণসলিলজীর্যা হি পশরঃ ॥ 62.2 ॥

632

ইতি ঋৎরা রাচং পিতুরযি ভরানাহ সরসং  
ধিগেতনো সত্যং মঘরজনিতা বৃষ্টিরিতি যৎ।  
অদৃষ্টং জীরানাং সৃজতি খলু বৃষ্টিং সমুচিতাং  
মহারণ্যে বৃক্ষাঃ কিমির বলিমিন্দ্রায দদতে ॥ 62.3 ॥

633

ইদং তারং সত্যং যদিহ পশরো নঃ কুলধনং  
তদাজীর্যাযাসৌ বলিরচলভর্ত্রে সমুচিতঃ।  
সুরেভ্যোহপ্যৎকৃষ্টা ননু ধরণিদেরাঃ ক্ষিতিতলে  
ততস্তেহপ্যারাধ্যা ইতি জগদিথ ৎরং নিজজনান্ ॥ 62.4 ॥

634

ভরদ্বাচং ঋৎরা বহ্মতিযুতাস্তেহপি পশুপাঃ  
দ্বিজেন্দ্রানর্চন্তো বলিমদদুরুচ্চৈঃ ক্ষিতিভূতে।

र्यधुः प्रादक्खिण्यं सुभृशमनमन्नादरयुता -

स्त्रुमादशैशलात्मा बलिमखिलमाडीरपुरतः ॥ 62.5 ॥

635

अरोचशैचरं तान् किमिह रितथं मे निगदितं

गिरीन्द्रो नन्नेष स्वबलिमुपभुङ्क्तु स्वरपुषा।

अयं गोत्रो गोत्रद्विषि च कुपिते रक्खितुमलं

समस्तानित्युक्ता जहसुरखिला गोकुलजुषः ॥ 62.6 ॥

636

परिप्रीता याताः खलु भरदुपेता ब्रजजुषो

ब्रजं यारतारनिजमखरिडङ्गं निशमयन्।

भरन्तं जानन्नप्याधिकरजसाहक्रान्तुहदयो

न सेहे देरेन्द्रस्त्रुदुपरचितात्त्रोन्नतिरपि ॥ 62.7 ॥

637

मनुष्यंरं यातो मधुभिदपि देरेण्णरिनयं

रिधते चेरुष्टस्त्रिदशसदसां कोहपि महिमा।

ततश्च ध्रंरंसिष्ये पशुपहतकस्य श्रियमिति

प्ररुत्तुत्वां जेतुं स किल मघरा दुर्मदनिधिः ॥ 62.8 ॥

638

रदारासं हन्तुं प्रलयजलदानम्बरदुरि

प्रहिण्णन् विद्राणः कुलिशमयमद्रेडगमनः।

प्रतस्त्रेहनैरन्तर्दहनमरुदादैरिहसितो

भरन्माया नैर त्रिदुरनपते मोहयति कम् ॥ 62.9 ॥

639

सुरेन्द्रः क्रुद्धश्चेत् द्विजकरुणया शैलकूपयाह -

प्यनातक्लोहस्माकं नियत इति रिश्र्वास्य पशुपान्।

अहो किन्नायातो गिरीभिदिति सक्खिन्त्य निरसन्

मरुदोहाधीश प्रणुद मुररैरिन् मम गदान् ॥ 62.10 ॥

640

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्विषष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये त्रिषष्टितमं दशकम् ॥

गोरर्धनोद्धरणवर्णनम्

ददृशिरै किल तत्क्षणमम्भत -

स्तनितजृम्भितकम्पितदिक्ताः।

सुषमया भरदङ्गतुलां गता

ब्रजपदोपरि वारिधराङ्गया ॥ 63.1 ॥

641

रिपुलकरकमिश्रैस्तोयधारानिपातै -

दिशि दिशि पशुपानां मण्डले दण्ड्यमाने।

कुपितहरिकृतान्नः पाहि पाहीति तेषां

रचनमजित शृङ्गन् मा विभीतेत्यभाषीः ॥ 63.2 ॥

642

कुल इह खलु गोत्रो दैरतं गोत्रशत्रो -

रिहितमिह स रुक्म्यां को नु रः संशयोहस्मिन्।

इति सहसितरादी देर गोरर्धनाद्रिं

वररितमुदमुमूलो मूलतो बालदोर्भ्याम् ॥ 63.3 ॥

643

तदनु गिरिरस्य प्रोद्धृतस्यास्य तारं

सिकतिलमृदुदेशे दूरतो वारितापे।

परिकरपरिमिश्रान् धेनुगोपानधस्ता -

दुपनिदधदधथा हस्तपद्मेन शैलम् ॥ 63.4 ॥

644

भरति रिधृतशैले बालिकाभिर्बस्यै -

रपि रिहितरिलासं केलिलापादिलोले।

- सरिधमिलितधेनुरेकहस्तुन कणु -  
 यति सति पशुपालास्तोषमैषस्तु सर्रे ॥ 63.5 ॥ 645
- अतिमहान् गिरिरेष तु रामके  
 करसरोरुहि तं धरते चिरम्।  
 किमिदमद्भुतमद्रिवलं त्रिति  
 र्दरलोकिभिराकथि गोपकैः ॥ 63.6 ॥ 646
- अहह धार्ष्ट्यममुष्य रटोर्गिरं  
 र्यथितबाह्रसारररोपयेत्।  
 इति हरिस्तुथि बद्धरिगर्हणो  
 दिरससप्तकमुग्रमर्षयत् ॥ 63.7 ॥ 647
- अचलति र्दरि देर पदात् पदं  
 गलितसर्रजले च घनोत्करे।  
 अपहृते मरुता मरुताम्पति -  
 स्त्रुदभिश्कितधीः समुपाद्रत् ॥ 63.8 ॥ 648
- शममुपेयुषि र्षभरे तदा  
 पशुपधेनुकुले च रिनिर्गते।  
 डुरि रिभो समुपाहितडूधरः  
 प्रमुदितैः पशुपैः परिरेभिषे ॥ 63.9 ॥ 649
- धरणिमेर पुरा धृतरानसि  
 क्षितिधरोद्धरणे तर कः श्रमः।  
 इति नुतस्त्रिदशैः कमलापते  
 गुरुपुरालय पालय मां गदात् ॥ 63.10 ॥ 650

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रिषष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুষ্টিতমং দশকম্ ॥

গোরিন্দাভিষেকর্ষণং, নন্দানযনর্ষণং চ

আলোক্য শৈলোদ্ধরণাদিরূপং

প্রভারমুচ্চৈস্তর গোপলোকাঃ।

রিশ্বেশ্বরং ঞ্ৰামভিমত্য রিশ্বে

নন্দং ভরজ্জাতকমন্ত্রপৃচ্ছন্ ॥ 64.1 ॥

651

গর্গোদিতো নির্গদিতো নিজায

র্গায তাতেন তর প্রভারঃ।

পূর্বাধিকস্ত্বয়নুরাগ এষা -

মৈধিষ্ট তারং বহুমানভারঃ ॥ 64.2 ॥

652

ততোহরমানোদিততত্ত্ববোধঃ

সুরাধিরাজঃ সহ দির্যগর্যা।

উপেত্য তুষ্টার স নষ্টগর্গঃ

স্পৃষ্টরা পদাজ্জং মণিমৌলিনা তে ॥ 64.3 ॥

653

স্নেহস্তুতৈস্ত্বাং সুরভিঃ পযোভি -

র্গোরিন্দনামাক্ষিতমভ্যষিঞ্চৎ।

ঐরারতোপাহতদির্যগঙ্গা -

পাথোভিরিন্দ্রোহপি চ জাতহর্ষঃ ॥ 64.4 ॥

654

জগত্ৰযেশে ঞ্ৰযি গোকুলেশে

তথাহভিষিক্তে সতি গোপরাটঃ।

- नाकेहपि रैकुष्ठपदेहप्यलभ्यां  
 श्रियं प्रपेदे भरतः प्रभारां ॥ 64.5 ॥ 655
- कदाचिदन्तर्यमुनं प्रभाते  
 स्नायन् पिता रारुणपुरुषेण।  
 नीतस्तमानेतुमगाः पुरीं व्रं  
 तां रारुणीं कारणमर्त्यरूपः ॥ 64.6 ॥ 656
- ससद्भ्रमं तेन जलाधिपेन  
 प्रपूजितस्त्रुं प्रतिगृह्य तातम्।  
 उपागतस्तंक्वमात्त्रागेहं  
 पिताहरदन्तुत्तरितं निजेभ्यः ॥ 64.7 ॥ 657
- हरिं रिनिश्चित्य भरन्तमेतान्  
 भरंपदालोकनवद्भृषणान्।  
 निरीक्ष्य रिषेण परमं पदं तद् -  
 दुरापमन्यैस्त्रुमदीदृशस्तान् ॥ 64.8 ॥ 658
- स्फुरंपरानन्दरसप्रराह -  
 प्रपूणैकरल्यमहापयोधौ।  
 चिरं निमग्नाः खलु गोपसञ्ज्ञा -  
 स्त्रुयैर भूमन् पुनरुद्भृतास्ते ॥ 64.9 ॥ 659
- करवदररदेरं देर कुत्रारतारे  
 निजपदमनराप्यं दर्शितं भक्तिभाजाम्।  
 तदिह पशुपक्रुपी व्रं हि साम्फां परात्त्रा  
 परनपुरनिरासिन् पाहि मामामयेभ्यः ॥ 64.10 ॥ 660

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुष्ष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये पञ्चषष्टितमं दशकम् ॥

গোপীসমাগমনরর্ণনম্

গোপীজনায কথিতং নিযমারসানে

মারোৎসরং ৎরমথ সাধযিতুং প্রবৃত্তঃ।

সান্দ্রেণ চান্দ্রমহসা শিশিরীকৃতশে

প্রাপুরযো মুরলিকাং যমুনানান্তে ॥ 65.1 ॥

661

সম্মূর্ছনাভিরুদিতস্বরমণ্ডলাভিঃ

সম্মূর্ছযন্তমখিলং ভুরনান্তরালম্।

ৎরদ্রেণুনাদমুপকর্ণ্য রিভো তরুণ্য -

স্তভাদৃশং কমপি চিত্তরিমোহমাপুঃ ॥ 65.2 ॥

662

তা গেহকৃত্যনিরতাস্তনযপ্রসক্তাঃ

কান্তোপসেরনপরাশচ সরোরুহাস্ক্যঃ।

সর্ং রিসৃজ্য মুরলীররমোহিতাস্তে

কান্তারদেশমযি কান্ততনো সমেতাঃ ॥ 65.3 ॥

663

কাশ্চিন্নিজাস্পপরিভূষণমাদধানা

রেণুপ্রণাদমুপকর্ণ্য কৃতার্ধভূষাঃ।

ৎরামাগতা ননু তথৈর রিভূষিতাভ্য -

স্তা এর সংরুচিরে তর লোচনায ॥ 65.4 ॥

664

হারং নিতম্বভুরি কাচন ধারযন্তী

কাঞ্চীং চ কণ্ঠভুরি দের সমাগতা ৎরাম্।

हारिंरमाअजघनस्य मुकुन्द तुभ्यं  
 ब्यक्तं वभाष ईर मुक्कमुथी रिशेषां ॥ 65.5 ॥ 665

काचिं कुचे पुनरसज्जितकण्ठुलीका  
 ब्यामोहतः पररधुभिरलक्ष्यमाणा।  
 ९रामायथौ निरूपमप्रणयातिभार -  
 राज्याभिषेकरिधये कलशीधरेर ॥ 65.6 ॥ 666

काश्चिं गृहां किल निरेतुमपारयन्त्य -  
 श्रामेर देर हृदये सुदृढं रिभार्य।  
 देहं रिधुय परचिंसुखरूपमेकं  
 ९रामारिशनं परमिमा ननु धन्यधन्याः ॥ 65.7 ॥ 667

जाराअना न परमाअतया अरन्त्या  
 नार्यो गताः परमहंसगतिं क्षणेन।  
 तं ९रां प्रकाशपरमाअतनुं कथञ्चि -  
 क्षित्ते रहन्नमृतमश्रममश्रुरीय ॥ 65.8 ॥ 668

अभ्यागताभिरभितो ब्रजसुन्दरीभि -  
 र्मुक्कस्मितार्द्रदनः करुणारलोकী।  
 निस्सीमकान्तिजलधिञ्जुमरेक्ष्यमाणो  
 रिशैरकहृदय हर मे परनेश रोगान् ॥ 65.9 ॥ 669

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चषष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥



श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये षट्षष्टितमं दशकम् ॥

गोपीजनान्नादनर्णनम्

उपयातानां सुदृशां

कुसुमायुधबाणपातरिरशानाम्।

अभिराङ्गितं रिधातुं

कृतमतिरपि ता जगाथ राममिर ॥ 66.1 ॥

670

गगनगतं मुनिनिरहं

श्रायितुं जगिथ कुलरधुधर्मम्।

धर्म्यं खलु ते रचनं

कर्म तु नो निर्मलस्य रिश्वास्यम् ॥ 66.2 ॥

671

आकर्ण्य ते प्रतीपां

राणीमेणीदृशः परं दीनाः।

मा मा करुणासिक्को

परित्यजेत्यतिचिरं रिलेपुस्ताः ॥ 66.3 ॥

672

तासां रुदितैर्लपितैः

करुणाकुलमानसो मुरारे व्रम्।

ताडिस्समं प्रवृत्तो

यमुनापुलिनेषु काममभिरन्तम् ॥ 66.4 ॥

673

चन्द्रकरस्यन्दलस -

९सुन्दरयमुनातटान्तरीथीषु।

गोपीजनोत्तरीये -

रापादितसंस्तरो न्यषीदञ्जम् ॥ 66.5 ॥

674

सुमधुरनर्मालपनैः

करसङ्ग्रहणैश्च चुम्बनोल्लासैः।

गाटालिङ्गनसङ्गै -

ञ्जमङ्गनालोकमाकुलीचकृषे ॥ 66.6 ॥

675

रासोहरणदिने य -

द्रासोहरणं प्रतिश्रुतं तसाम्।

तदपि रिभो रसरिरश -

श्रान्तानां कान्त सुकुरामदधाः ॥ 66.7 ॥

676

कन्दलितघर्मलेशं

कुन्दमृदुस्मेररङ्गपाथोजम्।

नन्दसुत एवां त्रिजगत् -

सुन्दरमुपगृह्य नन्दिता बालाः ॥ 66.8 ॥

677

रिरहेत्प्रसारमयः

शृङ्गारमयश्च सङ्गमे हि एरम्।

नितरामङ्गारमय -

स्तत्र पुनस्सङ्गमेहपि चित्रमिदम् ॥ 66.9 ॥

678

राधातुङ्गपयोधर -

साधुपरीरञ्जलोलुपात्मानम्।

आराधये भ्रञ्जं

परनपुराधीश शमय सकलगदान् ॥ 66.10 ॥

679

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षट्षष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে সপ্তষষ্টিতমং দশকম্ ॥

ভগবতস্তিরোধানাদির্গনং

স্ফুরৎপরানন্দরসাত্মকেন

ংরযা সমাসাদিতভোগলীলাঃ।

অসীমমানন্দভরং প্রপন্না

মহান্তমাপূর্মদমম্বুজাক্ষ্যঃ ॥ 67.1 ॥

680

নিলীযতেহসৌ মযি ময্যমাযং

রমাপতির্শ্রমনোভিরামঃ।

ইতি স্ম সর্বাঃ কলিতাভিমানা

নিরীক্ষ্য গোরিন্দ তিরোহিতোহভূঃ ॥ 67.2 ॥

681

রাধাভিধাং তারদজাতগর্ভা -

মতিপ্রিয়াং গোপরধুং মুরারে।

ভরানুপাদায় গতৌ রিদুরং

তযা সহ স্মৈররিহারকারী ॥ 67.3 ॥

682

তিরোহিতেহথ ংরযি জাততাপাঃ

সমং সমেতাঃ কমলাযতাক্ষ্যঃ।

রনে রনে ংরাং পরিমার্গযন্ত্যে

রিষাদমাপূর্ভগবন্নপারম্ ॥ 67.4 ॥

683

হা চূত হা চম্পক কর্ণিকার

হা মল্লিকে মালতি বালরল্যঃ।

- किं रीम्फितो नो हृदयैकचोरः  
इत्यादि तासुप्ररणा रिलेपुः ॥ 67.5 ॥ 684
- निरीम्फितोहयं सथि पक्कजाम्फः  
पुरो ममेत्याकुलमालपत्नी।  
एरां भारनाचम्फुषि रीम्फ्य काचिं  
तापं सथीनां द्विगुणीचकार ॥ 67.6 ॥ 685
- एरदात्त्रिकान्ता यमुनातटांते  
तरानुचक्रुः किल चेष्टितानि।  
रिचित्य डूयोहपि तथैर मानां  
एरया रिमुक्तां ददृशुश्च राधाम् ॥ 67.7 ॥ 686
- ततः समं ता रिपिने समन्तां  
तमोरतारारधि मार्गयन्त्यः।  
पुनर्रिमिशा यमुनातटांते  
डूशं रिलेपुश्च जगुर्गुणांस्ते ॥ 67.8 ॥ 687
- तथा र्याथासङ्कुलमानसानां  
ब्रजाम्पनानां करुणैकसिक्को।  
जगत्त्रयीमोहनमोहनात्मा  
एरां प्रादुरासीरथि मन्दहासी ॥ 67.9 ॥ 688
- सन्दिग्धसन्दर्शनमात्त्रकान्तं  
एरां रीम्फ्य तन्त्र्यः सहसा तदानीम्।  
किं किं न चक्रुः प्रमदातिभारां  
स एरां गदां पालय मारुतेश ॥ 67.10 ॥ 689

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तषष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে অষ্টষষ্টিতমং দশকম্ ॥

গোপীনাং ভগবৎসমাগমাদিবর্ণনম্

তর ঝিলোকনাদেগাপিকাজনাঃ

প্রমদসঙ্কুলাঃ পঙ্কজেক্ষণ।

অমৃতধারযা সম্প্লুতা ইর

স্তিমিততাং দধুস্ত্বৎপুরোগতাঃ ॥ 68.1 ॥

690

তদনু কাচন ংরৎকরাষুজং

সপদি গৃহুতী নিরিশঙ্কিতম্।

ঘনপযোধরে সন্নিধায় সা

পুলকসংবৃত্তা তস্তুষী চিরম্ ॥ 68.2 ॥

691

তর ঝিভোহপরা কোমলং ভুজং

নিজগলান্তরে পর্যরেষ্টযৎ।

গলসমুদগতং প্রাণমারুতং

প্রতিনিরুন্ধতীরাতিহর্ষুলা ॥ 68.3 ॥

692

অপগতত্রপা কাপি কামিনী

তর মুখাষুজাৎ পূগচরিতম্।

প্রতিগৃহ্য তদ্রুপঙ্কজে

নিদধতী গতা পূর্ণকামতাম্ ॥ 68.4 ॥

693

ঝিকরুণো বনে সংঝিহায় মা -

মপগতোহসি কা ংরামিহ স্পৃশেৎ।

- इति सरोषया तारदेकया  
सजललोचनं रीक्षितो भवान् ॥ 68.5 ॥ 694
- इति मुदाहंकुलैर्रल्लरीजनैः  
सममुपागतो यामुने तटे।  
मृदुकुचाश्रैः कल्लितासने  
घुसृणभासुरे पर्यशोभथाः ॥ 68.6 ॥ 695
- कतिरिधा कृपा केहपि सर्रतो  
धृतदयोदयाः केचिदाश्रिते।  
कतिचिदीदृशा मादृशेश्रपी -  
त्यभिहितो भवान् रल्लरीजनैः ॥ 68.7 ॥ 696
- अथि कुमारिका नैर शक्यतां  
कठिनता मथि प्रेमकातरे।  
मथि तु चेतसो रोहनुर्बुधये  
कृतमिदं मथेत्युचिरान् भवान् ॥ 68.8 ॥ 697
- अथि निशम्यतां जीररल्लभाः  
प्रियतमो जनो नेदृशो मम।  
तदिह रम्यतां रम्यथामिनी -  
श्रनुपरोधमित्यालपो रिभो ॥ 68.9 ॥ 698
- इति गिराधिकं मोदमेदुरै -  
र्ब्रजरधुजनैः साकमारमन्।  
कलितकौतुको रासखेलने  
गुरुपुरीपते पाहि मां गदां ॥ 68.10 ॥ 699

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टाष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে একোনসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

রাসক্রীডারর্ণনম্

কেশপাশধৃতপিঞ্জিকারিততিসঞ্চলন্মকরকুণ্ডলং

হারজালরনমালিকাললিতমঙ্গরাগঘনসৌরভম্।

পীতচেলধৃতকাঞ্চিকাঞ্চিতমুদঞ্চদংশুমণিনুপুরং

রাসকেলিপরিভূষিতং তর হি রূপমীশ কলযামহে ॥ 69.1 ॥

700

তারদের কৃতমণ্ডনে কলিতকঞ্চুলীককুচমণ্ডলে

গণ্ডলোলমণিকুণ্ডলে যুরতি মণ্ডলেহথ পরিমণ্ডলে।

অন্তরা সকলসুন্দরীযুগলমিন্দিরারমণ সঞ্চরন্

মঞ্জুলাং তদনু রাসকেলিমযি কঞ্জনাভ সমুপাদধাঃ ॥ 69.2 ॥

701

রাসুদের তর ভাসমানমিহ রাসকেলিরসসৌরভং

দুরতোহপি খলু নারদাগদিতমাকলয্য কুতুকাকুলা।

রেষভূষণরিলাসপেশলরিলাসিনীশতসমারূতা

নাকতো যুগপদাগতা রিযতি রেগতোহথ সুরমণ্ডলী ॥ 69.3 ॥

702

রেণুনাদকৃততানদানকলগানরাগগতিযোজনা -

লোভনীযমৃদুপাদপাতকৃততালমেলনমনোহরম্।

পাণিসঙ্কণিতকঙ্কণং চ মুহুরংসলম্বিতকরাম্বুজং

শ্রোণিবিশ্বচলদম্বরং ভজত রাসকেলিরসডম্বরম্ ॥ 69.4 ॥

703

শ্রদ্ধযা রিরচিতানুগানকৃততারতারমধুরস্বরে

নর্তনেহথ ললিতাঙ্গহারলুলিতাঙ্গহারমণিভূষণে।

- सम्पदेन कृतपुष्परर्षमलमुनिषदिरिषदां कुलं  
 चिन्मये ळरषि निलीयमानमिर सम्भुमोह सरधुकुलम् ॥ 69.5 ॥ 704
- स्त्रिनसन्नतनुरल्लरी तदनु कापि नाम पशुपाङ्गना  
 कान्तमंसमरलक्षते स्म तर ताञ्जिभारमुकुलेक्षण।  
 काचिदाचलितकुञ्जला नरपटीरसारघनसौरभं  
 रङ्गनेन तर सङ्घुचुम्भ डुजमङ्गितोरुपुलकाङ्कुरा ॥ 69.6 ॥ 705
- कापि गण्डुडुरि सन्निधाय निजगण्डुमाकुलितकुण्डलं  
 पुण्यपुरनिधिरन्त्राप तर पुगचरितरसामृतम्।  
 इन्दिरारिहतिमन्दिरं डुरनसुन्दरं हि नटनान्तरे  
 ळरामराप्य दधुरङ्गनाः किमु न सम्पदोन्मददशान्तरम् ॥ 69.7 ॥ 706
- गानमीश रिरतं क्रमेण किल राद्यमेलनमुपारतं  
 ब्रह्मसम्पदरसाकुलाः सदसि केरलं ननृतुरङ्गनाः।  
 नारिदन्नपि च नीरिकां किमपि कुञ्जलीमपि च कङ्गुलीं  
 ज्योतिषामपि कदम्बकं दिरि रिलक्षितं किमपरं ब्रूरे ॥ 69.8 ॥ 707
- मोदसीम्नि डुरनं रिलाप्य रिहतिं समाप्य च ततो रिभो  
 केलिसम्पुदितनिर्मलाङ्गनरघर्मलेशसुभगाङ्गनाम्।  
 मन्नाथासहनचेतसां पशुपयोषितां सुकृतचोदित -  
 स्तारदाकलितमूर्तिरादधिथ माररीरपरमोऽसरान् ॥ 69.9 ॥ 708
- केलिभेदपरिलोलिताभिरतिलालिताभिरवलालिभिः  
 श्रैरमीश ननु सुरजापयसि चारुनाम रिहतिं र्याधाः।  
 काननेहपि च रिसारिशीतलकिशोरमारुतमनोहरे  
 सूनसौरभमये रिलेसिथ रिलासिनीशतरिमोहनम् ॥ 69.10 ॥ 709
- कामिनीरिति हि यामिनीषु खलु कामनीयकनिधे डुरान्  
 पुर्णसम्पदरसार्णरं कमपि योगिगम्यमनुडारयन्।



ब्रह्मशक्करमुखानपीह पशुपाङ्गनासु बह्मानयन्

डङ्गलोकगमनीयरूप कमनीय कृष्ण परिपाहि माम् ॥ 69.11 ॥

710

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकोनसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে সপ্ততিতমং দশকম্ ॥

সুদর্শনশাপমোক্ষর্ষণং, শঙ্খচূডারধর্ষণং, বৃষভাসুরধর্ষণং চ  
ইতি ঞ্ৰযি রসাকুলং রমিতরল্লেভে রল্লেরাঃ  
কদাপি পুরমঞ্চিকাকমিতুরম্ণিকাকাননে।  
সমেত্য ভরতা সমং নিশি নিষের্য দির্যোৎসরং  
সুখং সুষুপুরগ্রসীদব্রজপমুগ্রনাগস্তদা ॥ 70.1 ॥

711

সমুন্মুখমখোল্মুকৈরভিহতেহপি তস্মিন্ বলা -  
দমুঞ্চতি ভরৎপদে ন্যপতি পাহি পাহীতি তৈঃ।  
তদা খলু পদা ভরান্ সমুপগম্য পস্পর্শ তং  
বভৌ স চ নিজাং তনুং সমুপসাদ্য রৈদ্যাধরীম্ ॥ 70.2 ॥

712

সুদর্শনধর প্রভো ননু সুদর্শনাখ্যোহস্ম্যহং  
মুনীন্ ক্লচিদপাহসং ত ইহ মাং ব্যধুরাহসম্।  
ভরৎপদসমর্পণাদমলতাং গতোহস্মীত্যসৌ  
স্তুরন্ নিজপদং যযৌ ব্রজপদং চ গোপা মুদা ॥ 70.3 ॥

713

কদাপি খলু সীরিণা রিহরতি ঞ্ৰযি স্ত্রীজনৈ -  
র্জহার ধনদানুগঃ স কিল শঙ্খচূডোহবলাঃ।  
অতিদ্রুতমনুদ্রুতস্তমথ মুক্তনারীজনং  
রুরোজিথ শিরোমণিং হলভূতে চ তস্যাদদাঃ ॥ 70.4 ॥

714

দিনেষু স সুহৃজ্জনৈস্সহ রনেষু লীলাপরং  
মনোভরমনোহরং রসিতরেণুনাদামৃতম্।

- ভরন্তমমরীদৃশামমৃতপারণাদাযিনং  
 রিচিন্ত্য কিমু নালপন্ রিরহতাপিতা গোপিকাঃ ॥ 70.5 ॥ 715
- ভোজরাজভৃতকঙ্কথ কশ্চিৎ  
 কষ্টদুষ্টপথদৃষ্টিররিষ্টঃ।  
 নিষ্ঠুরাকৃতিরপষ্ঠু নিনাদ -  
 স্তিষ্ঠতে স্ম ভরতে বৃষরূপী ॥ 70.6 ॥ 716
- শাকুরোহথ জগতীধৃতিহারী  
 মূর্তিমেষ বৃহতীং প্রদধানঃ।  
 পঙ্ক্তিমাশু পরিঘূর্ণ্য পশুনাং  
 ছন্দসাং নিধিমরাপ ভরন্তম্ ॥ 70.7 ॥ 717
- তুঙ্গশৃঙ্গমুখমাশ্রভিযন্তং  
 সঙ্গৃহ্য্য রভসাদভিযং তম্।  
 ভদ্ররূপমপি দৈত্যমভদ্রং  
 মর্দযন্নমদযঃ সুরলোকম্ ॥ 70.8 ॥ 718
- চিত্রমদ্য ভগরন্ বৃষঘাতাৎ  
 সুস্থিরাহজনি বৃষস্থিতিরূর্যাম্।  
 রর্ধতে চ বৃষচেতসি ভূযান্  
 মোদ ইত্যভিনুতোহসি সুরৈস্তুম্ ॥ 70.9 ॥ 719
- ঔক্ষকাণি পরিধারত দুরং  
 বীক্ষ্যতামযমিহোক্ষরিভেদী।  
 ইখমাত্তহসিতৈঃ সহ গোপৈ -  
 গ্ৰেহগস্তমর রাতপুরেশ ॥ 70.10 ॥ 720

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये सप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये एकसप्ततितमं दशकम् ॥

केशिमथनरर्णनं, र्योमरधरर्णनं च

यत्नेषु सर्वेष्वपि नारकेशी

केशी स भोजेशितुरिष्टबन्धुः।

एरां सिन्धुजाराप्य इतीर मत्रा

सम्प्राप्तवान् सिन्धुजर्राजिरूपः ॥ 71.1 ॥

721

गन्धर्वतामेष गतोऽपि रूम्हे -

नादैः समुद्रोजितसर्लोकः।

भरद्बिलोकारधि गोपराटीं

प्रमर्द्य पापः पुनरापतत् एराम् ॥ 71.2 ॥

722

तार्क्ष्यार्पिताङ्घ्रिस्तत्र तार्क्ष्य एष

चिक्षेप रम्होडुरि नाम पादम्।

भृगोः पदाघातकथां निशम्य

स्वेनापि शक्यं तदितीर मोहात् ॥ 71.3 ॥

723

प्ररक्ष्यन्नस्य खुराङ्गलं द्रा -

गमुं च चिक्षेपिथ दूरदूरम्।

सम्मुर्च्छितोऽपि ह्यतिमूर्च्छितेन

क्रोधाभ्रणा खादितुमाद्रुतस्त्राम् ॥ 71.4 ॥

724

एरं राहदण्डे कृतधीश्च राहा -

दण्डं न्यधास्तस्य मुखे तदानीम्।

- तद्द्विद्विरुद्वश्रसनो गतासुः  
सप्तौडरन्नप्ययमैक्यमागां ॥ 71.5 ॥ 725
- आलम्बमात्रेण पशोः सुराणां  
प्रसादके नृत्न ईराश्रमेधे।  
कृते ँरया हर्षरशां सुरेन्द्रा -  
ञ्जां तुष्ट्रुः केशरनामधेयम् ॥ 71.6 ॥ 726
- कंसाय ते शौरिसुतंरमुकञ्जा  
तं तद्द्रधोःकं प्रतिरुध्य राचा।  
प्राप्तेन केशिम्पणारसाने  
श्रीनारदेन ँरमडिष्टुतोहडुः ॥ 71.7 ॥ 727
- कदापि गोपैः सह काननाञ्जे  
निलायनक्रीडनलोलुपं ँराम्।  
मयाञ्जः प्राप दुरञ्जमायो  
र्योमाडिधो र्योमचरोपरौधी ॥ 71.8 ॥ 728
- स चोरपालायितरल्लरेषु  
चोरायितो गोपशिशुन् पशुंश्च।  
गुहासु कृंरा पिदधे शिलाडि -  
ञ्ज्या च बुद्धरा परिमर्दितोहडुं ॥ 71.9 ॥ 729
- एरं रिधैश्चाद्भुतकेलिडेदे -  
रानन्दमूर्छामतुलां ब्रजस्य।  
पदे पदे नूतनयन्नसीमां  
परान्नरूपिन् परनेश पायाः ॥ 71.10 ॥ 730

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে দ্বিসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

অক্রুরাগমনবর্ণনম্

কংসোহথ নারদগিরা ব্রজরাসিনং ৭রা -

মাকৰ্ণ্য দীৰ্ণহৃদযঃ স হি গান্দিনেযম্।

আহুয কার্মুকমখচ্ছলতো ভরন্ত -

মানেতুমেনমহিনোদহিনাথশাযিন্ ॥ 72.1 ॥

731

অক্রুর এষ ভরদভিঘ্নপরশ্চিরায

৭রদর্শনাক্ষমমনাঃ ক্ষিতিপালভীত্যা।

তস্যাজ্জযৈর পুনরীক্ষিতুমুদ্যতস্তা -

মানন্দভারমতিভুরিতরং বভার ॥ 72.2 ॥

732

সোহযং রথেন সুকৃতী ভরতো নিরাসং

গচ্ছন্ মনোরথগণাংস্তুযি ধার্যমাণান্।

আস্মাদযন্ মুহুরপাযভযেন দৈরং

সম্প্রার্থযন্ পথি ন কিঞ্চিদপি ব্যজানাৎ ॥ 72.3 ॥

733

দ্রক্ষ্যামি রেদশতগীতগতিং পুমাংসং

স্প্রক্ষ্যামি কিংস্বিদপি নাম পরিষ্রজেযম্।

কিং রক্ষ্যতে স খলু মাং ক্লনু রীক্ষিতঃ স্যা -

দিথং নিনায স ভরন্মযমের মার্গম্ ॥ 72.4 ॥

734

ভূযঃ ক্রমাদভিরিশন্ ভরদভিঘ্নপূতং

বৃন্দারনং হররিরিঞ্চসুরাভিরন্দ্যম্।

आनन्दमग्न इर लग्न इर प्रमोहे

किं किं दशान्तरमराप न पङ्कजाम्फ ॥ 72.5 ॥

735

पश्यान्नरन्दत भरद्विहतिस्थलानि

पांसुश्चररेष्टत भरच्चरणाङ्कितेषु।

किं ब्रूमहे बहुजना हि तदापि जाता

एरं तु भङ्कितरला रिरलाः परात्नन् ॥ 72.6 ॥

736

सायं स गोपभरनानि भरच्चरित्र -

गीतामृतप्रसृतकर्णरसायनानि।

पश्यान् प्रमोदसरितेर किलोह्यमानो

गच्छन् भरद्वरनसन्निधिमन्त्रयासीत् ॥ 72.7 ॥

737

तारददर्श पशुदोहरिलोकलोलं

भङ्कोत्तमागतिमिर प्रतिपालयन्तम्।

डूमन् भरन्तमयमग्रजरन्तमन्त -

ब्रह्मानुभूतिरससिन्धुमिरोद्भ्रमन्तम् ॥ 72.8 ॥

738

सायन्तनाप्लरिशेषरिरिक्तगात्रौ

द्वौ पीतनीलरुचिराम्बरलोभनीयौ।

नातिप्रपङ्कधृतभूषणचारुरेषौ

मन्दस्मितार्द्ररदनौ स युरां ददर्श ॥ 72.9 ॥

739

दूराद्रथांसमररुह्य नमन्तमेन -

मुखाप्य भङ्ककुलमौलिमथोपगूहन्।

हर्षान्मिताम्बरगिरा कुशलानुयोगी

पाणिं प्रगूह्य सबलोहथ गूहं निनेथ ॥ 72.10 ॥

740

नन्देन साकममितादरमर्चयिन्त्रा

तं यादरं तदुदितां निशमय्य रार्ताम्।

गोपेषु भूपतिनिदेशकथां निरेद्य

नानाकथाभिरिह तेन निशामनैशीः ॥ 72.11 ॥

741

चन्द्रागृहे किमुत चन्द्रभगागृहे नु

राधागृहे नु भवने किमु मैत्रिन्दे।

धूर्तो रिलम्बत इति प्रमदाभिरुच्छे -

राशङ्कितो निशि मरुत्पुरनाथ पायाः ॥ 72.12 ॥

742

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्विसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥



শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে ত্ৰিসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

মথুরাপুরযাত্রারর্ণনম্

নিশময্য তরাত্থ যানরার্তাং

ভূশমার্তাঃ পশুপালবালিকাস্তাঃ।

কিমিদং কিমিদং কথং ত্ৰিতীমাঃ

সমরেতাঃ পরিদেৱিতান্যকুর্ন ॥ 73.1 ॥

743

করণানিধিরেষ নন্দসুনাঃ

কথমস্মান্ রিসৃজেদনন্যনাথাঃ।

বত নঃ কিমু দৈৱমেরমাসী -

দিতি তাস্ত্ৰদগতমানসা রিলেপুঃ ॥ 73.2 ॥

744

চরমপ্রহরে প্রতিষ্ঠমানঃ

সহ পিত্ৰা নিজমিত্রমগুলৈশ্চ।

পরিতাপভরং নিতম্বিনীনাং

শমযিষ্যন্ ৰ্যমুচঃ সখাযমেকম্ ॥ 73.3 ॥

745

অচিৱাদুপযামি সন্নিধিং ৰো

ভৱিতা সাধু মথৈৱ সঙ্গমশ্রীঃ।

অমৃতাম্বুনিধৌ নিমজ্জযিষ্যে

দ্রুতমিত্যাশ্ৰসিতা ৰধূৱকাৰ্ষীঃ ॥ 73.4 ॥

746

সৱিষাদভরং সযাচ্ছমুচৈঃ

অতিদূৱং ৰনিতাভিৱীক্ষ্যমাণঃ।

मृदु तदिशि पातयन्नपाङ्गान् सबलोहक्रुररथेन निर्गतोहडुः ॥ 73.5 ॥	747
अनसा बह्लेन रल्लरानां मनसा चानुगतोहथ रल्लभानाम्। रनमार्तमृगं रिषण्णरुक्कं समतीतो यमुनातटीमयासीः ॥ 73.6 ॥	748
निषमाय निमज्य रारिणि एरा - मडिरीक्क्याथ रथेहपि गान्दिनेयः। रिरशोहजनि किं न्निदं रिडोस्ते ननु चिद्रेण एररलोकनं समन्तां ॥ 73.7 ॥	749
पुनरेष निमज्य पुण्यशाली पुरुषं एरां परमं डुजङ्गडोगे। अरिकम्भुगदाम्भुजैः स्फुरन्तं सुरसिद्धौघपरीतमालुलोके ॥ 73.8 ॥	750
स तदा परमात्मासौख्यसिक्कौ रिनिमण्णः प्रणुरन् प्रकारडेदैः। अरिलोक्य पुनश्च हर्षसिक्को - रनुरुत्त्या पुलकारुतो यथौ एराम् ॥ 73.9 ॥	751
किमु शीतलिमा महान् जले यं पुलकोहसारिति चोदितेन तेन। अतिहर्षनिरुत्तरेण सार्धं रथरसी परनेश पाहि मां एरम् ॥ 73.10 ॥	752

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रिसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमन्नारायणीये चतुस्सप्ततितमं दशकम् ॥

भगरतो मधुरापुरीप्रवेश रजकनिग्रह, रायकमालाकारकुञ्जानुग्रह,

धनुर्भङ्गादि वर्णनम् च

सम्प्राप्तो मथुरां दिनार्धरिगमे तत्रान्तरस्मिन् रस -

न्नारामे रिहिताशनः सखिजनैर्यातः पुरीमीक्षितुम्।

प्रापो राजपथं चिरश्रुतिधृतर्यालोककौतुहल -

स्त्रीपुंसोद्यदगण्यपुण्यनिगलैराकृष्यमाणो नु किम् ॥ 74.1 ॥

753

रंरंपाददु्यतिरं सरागसुभगास्त्रुमूर्तिरदोषितः

सम्प्राप्ता रिलसंपयोधररुचो लोला भरदृष्टिरं।

हारिण्यस्त्रुदुरस्त्रुलीरदधि ते मन्दस्मितप्रौटिर -

नैर्मल्योल्लसिताः कचोघ रुचिरद्राजंकलापाश्रिताः ॥ 74.2 ॥

754

तासामाकलयन्नपाङ्गरलनैर्मोदं प्रहर्षाद्भुत -

र्यालोलेषु जनेषु तत्र रजकं कधिं पटीं प्रार्थयन्।

कस्ते दास्यति राजकीयरसनं याहीति तेनोदितः

सद्यस्तस्य करेण शीर्षमहथाः सोऽप्याप पुण्यां गतिम् ॥ 74.3 ॥

755

भूयो रायकमेकमायतमतिं तोषेण रेषोचितं

दाश्रांसं स्त्रुपदं निनेथ सुकृतं को रेद जीरात्ननाम्।

मालाभिः स्त्रुवकैः स्त्रुरैरपि पुनर्मालाकृता मानितो

भक्तिं तेन वृतां दिदेशिथ परां लम्हीं च लम्हीपते ॥ 74.4 ॥

756

कुञ्जामञ्जरिलोचनां पथि पुनर्दृष्टैराहङ्गरागे तया

दत्ते साधु किलाङ्गरागमददास्तस्या महान्तं हृदि।

- चित्तस्वाम्जुतामथ प्रथयितुं गात्रेहपि तस्याः स्फुटं  
 गृह्णन् मञ्जु करेण तामुदनयस्तारज्जगत्सुन्दरीम् ॥ 74.5 ॥ 757
- तारनिश्चितरैभवासुर रिভো नात्यন্তপাপা জনা  
 যৎকিঞ্চিদদতে স্ম শক্ত্যানুগুণং তাম্বুলমাল্যাদিকম্।  
 গৃহ্নানঃ কুসুমাди কিঞ্চন তদা মার্গে নিবন্ধাঞ্জলি -  
 নীতিষ্ঠং বত হা যতোহদ্য রিপুলামার্তিং ব্রজামি প্রভো ॥ 74.6 ॥ 758
- এষ্যামীতি রিমুক্তযাহপি ভগবন্নালেপদাত্র্যা তযা  
 দুরাৎ কাতরযা নিরীক্ষিতগতিস্ত্বং প্রারিশো গোপুরম্।  
 আঘোষানুমিতৎরদাগমমহাহর্ষোল্ললদেবকী -  
 রক্ষোজপ্রগলৎপযোরসমিষাত্ত্বৎকীর্তিরন্তর্গতা ॥ 74.7 ॥ 759
- আরিষ্টো নগরীং মহোৎসবরতীং কোদগুশালাং ব্রজন্  
 মাধুর্যেণ নু তেজসা নু পুরুষৈর্দুরেণ দত্তান্তরঃ।  
 স্রগ্ভির্ভূষিতমর্চিতং বরধনুর্মা মেতি বাদাৎ পুরঃ  
 প্রাগৃহ্নাঃ সমরোপযঃ কিল সমাক্রাক্ষীরভাঙ্ক্ষীরপি ॥ 74.8 ॥ 760
- শ্বঃ কংসক্ষপণোৎসবস্য পুরতঃ প্রারম্ভতূর্যোপম -  
 শ্চাপধ্বংসমহাধ্বনিস্তর रिভো দেবানরোমাঞ্চযৎ।  
 কংসস্যপি চ রেপথুস্তদুদিতঃ কোদগুখগুদ্রযী -  
 চগাভ্যাহতরক্ষিপুরুষররৈকুৎকুলিতোহভূৎ ব্রযা ॥ 74.9 ॥ 761
- শিষ্টৈর্দুষ্টজনৈশ্চ দৃষ্টমহিমা প্রীত্যা চ ভীত্যা ততঃ  
 সম্পশ্যন্ পুরসম্পদং পরিচরন্ সাযং গতো বাটিকাম্।  
 শ্রীদাম্না সহ রাধিকারিরহজং খেদং বদন্ প্রস্বপ -  
 ন্নানন্দন্নরতারকার্যঘটনাদ্বাতেশ সংরক্ষ মাম্ ॥ 74.10 ॥ 762

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये चतुस्सप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে পঞ্চসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

কংসরধরণনম্

প্রাতঃ সন্তস্তভোজক্ষিতিপতিরচসা প্রস্তুতে মল্লতূর্যে  
সঙ্ঘে রাজ্ঞাং চ মঞ্চানভিযযুষি গতে নন্দগোপেহপি হর্ম্যম্।  
কংসে সৌধাধিরুচে ত্বরমপি সহবলঃ সানুগশচারুরেষো  
রঙ্গদ্বারং গতোহভূঃ কুপিতকুরলযাপীডনাগারলীচম্ ॥ 75.1 ॥

763

পাপিষ্ঠাপেহি মার্গাদ্ দ্রুতমিতি রচসা নিষ্ঠুরক্রুদ্ধবুদ্ধে -  
রম্বষ্ঠস্য প্রণোদাদধিকজরজুষা হস্তিনা গৃহ্যমাণঃ।  
কেলীমুক্তোহথ গোপীকুচকলশচিরস্পর্ধিনং কুস্তমস্য  
র্যাহত্যালাযথাস্ত্বং চরণভুরি পুনর্নির্গতো রঞ্জুহাসী ॥ 75.2 ॥

764

হস্তপ্রাপ্যোহপ্যগম্যো ঝটিতি মুনিজনস্যেয় ধারন্ গজেন্দ্রং  
ক্রীডনাপাত্য ভূমৌ পুনরপিপততস্তস্য দন্তং সজীরম্।  
মূলাদুন্মূল্য তন্মূলগমহিতমহামৌক্তিকান্যাঅমিত্রে  
প্রাদাস্ত্বং হারমেভিল্ললিতরিরচিতং রাধিকায়ৈ দিশেতি ॥ 75.3 ॥

765

গৃহ্নানং দন্তমংসে যুতমথ হলিনা  
রঙ্গমঙ্গারিশস্ত্বং  
ৎরাং মঙ্গল্যাঙ্গভঙ্গীরভসহতমনো -  
লোচনা রীক্ষ্য লোকাঃ।  
হংহো ধন্যো নু নন্দো নহি নহি পশুপা -  
লাঙ্গনা নো যশোদা

नो नो धन्येक्षणाः स्मञ्जिजगति रयमे -

रेति सर्वे शशंसुः ॥ 75.4 ॥

766

पूर्णं ब्रह्मैर साम्फान्निररधि परमानन्दसान्द्रप्रकाशं

गोपेषु एरं र्यासीर्न खलु बहजनैस्तारदारैदितोहडुः।

दृष्टराहथ एरां तदेदम्प्रथममुपगते पुण्यकाले जनौघाः

पूर्णान्दा रिपापाः सरसमभिजगुस्त्रुकृतानि स्मृतानि ॥ 75.5 ॥

767

चाणुरो मल्लरीरसुदनु नृपगिरा मुष्टिको मुष्टिशाली

एरां रामष्ठाभिपेदे ऋट्वाटिति मिथो मुष्टिपातातिरुक्कम्।

उत्पातापातनाकर्षणरिधरणान्यासतां तत्र चित्रं

मृत्योः प्रागेर मल्लप्रभुरगमदयं डुरिशो वक्त्रमोक्कान् ॥ 75.6 ॥

768

हा धिक् कष्टं कुमारौ सुललितरपुषौ मल्लरीरौ कठोरौ

न द्रक्ष्यामो ब्रजामस्त्रुरितमिति जने भाषमाणे तदानीम्।

चाणुरं तं करोद्भ्रामणरिगलदसुं पोथयामासिथोर्यां

पिष्टोहडुनुष्टिकोहपि द्रुतमथ हलिना नष्टशिष्टैर्दधारे ॥ 75.7 ॥

769

कंसः संरार्य तूर्यं खलमतिररिदन् कार्यमार्यान् पितृंस्ता -

नाहन्तुं र्याप्तमूर्तेस्तुर च समशिषदूरमुंसारणाय।

रुष्टो दुष्टोक्तिभिस्त्रुं गरुड ईर गिरिं मष्मष्मनुदक्षं

खडगर्यारल्लदुस्सडग्रहमपि च हठां प्राग्रहीरौग्रसेनिम् ॥ 75.8 ॥

770

सद्यो निष्पिष्टसन्धिं डुरि नरपतिमापात्य तस्योपरिष्ठा -

ड्रुय्यापात्ये तदैर एरदुपरि पतिता नाकिनां पुष्परुष्टिः।

किं किं ब्रूमसुदानीं सततमपि डिया एरदगतात्त्वा स डेजे

सायुज्यं एरद्वधोथा परम परमियं रासना कालनेमेः ॥ 75.9 ॥

771

तद्भ्रातूनष्ट पिष्टरा द्रुतमथ पितरौ सन्नमनुग्रसेनं

कृत्रा राजानमुच्छैर्यदुकुलमथिलं मोदयन् कामदानैः।

भक्तानामुत्तमं चोद्धरममरुगुरोरारुप्तनीतिं सखायं

लङ्करा तुष्टौ नगर्यां परनपुरपते रुक्मि मे सररुोगान् ॥ 75.10 ॥ 772

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये षट्सप्ततितमं दशकम् ॥

### उद्धरदुत्यर्णनम्

गंरा सान्दीपनिमथ चतुष्ष्टिमात्रैरहोभिः

सर्रञ्जस्त्रुं सह मुसलिना सर्रिदिया गृहींरा ।

पुत्रं नष्टं यमनिलयनादाहृतं दक्षिणार्थं

दंरा तस्मै निजपुरमगा नादयन् पाञ्जजन्यम् ॥ 76.1 ॥

773

स्मृंरा स्मृंरा पञ्चपसुदृशः प्रेमभारप्रणुनाः

कारुण्येन रंरमपि रिरशः प्राहिणोरुद्धरं तम् ।

किङ्गामुष्मै परमसुहृदे भङ्गरयाय तासां

भङ्ग्युद्देकं सकलभुरने दुर्लभं दर्शयिष्यन् ॥ 76.2 ॥

774

रंरन्माहाव्यप्रथिमपिशुनं गोकुलं प्राप्य सायं

रंरद्वार्ताभिर्बहू स रमयामास नन्दं यशोदाम् ।

प्रातर्दृष्टरा मणिमयरथं शङ्किताः पङ्कजाम्ब्यः

श्रंरा प्रापुं भरदनुचरं त्यक्तकार्याः समीयुः ॥ 76.3 ॥

775

दृष्टरा चैनं रंरदुपमलसद्देषडूषाभिरामं

स्मृंरा स्मृंरा तर रिलसितान्युच्छकैस्तानि तानि ।

रुद्दालापाः कथमपि पुनर्गदगदां राचमुचुः

सौजन्यादीन् निजपरभिदामप्यलं रिस्मरन्त्यः ॥ 76.4 ॥

776

श्रीमन् किं रंरं पितृजनकृते प्रेषितो निर्दयेन

क्वासौ काण्ठो नगरसुदृशां हा हरे नाथ पायाः ।



आप्लेषाणाममृतपुषो हस्त ते चुम्बनाना -

मुन्नादानां कुहकरचसां रिस्मरेण कान्त का रा ॥ 76.5 ॥

777

रासक्रीडालुलितललितं रिप्लथकेशपाशं

मन्दोद्धिन्नश्रमजलकणं लोभनीयं वरदङ्गम्।

कारुण्याक्के सकृदपि समालिङ्गितुं दर्शयेति

प्रेमोन्नादाद्भुरनमदन वरंप्रियास्तुं रिलेपुः ॥ 76.6 ॥

778

एरम्प्रायैर्रिरशरचनैराकुला गोपिकास्ता -

स्त्रुंसन्दैः प्रकृतिमनयं सोहथ रिञ्जानगर्भैः।

डूयस्ताभिर्मुदितमतिभिस्त्रुन्मयीभिर्बुधि -

स्तुद्वार्तासरसमनयं कानिचिद्वासराणि ॥ 76.7 ॥

779

वरंप्रोदगानैः सहितमनिशं सरतो गेहकृत्यं

वरद्वार्तेर प्रसरति मिथः सैर चोत्स्रापलापाः।

चेष्टाः प्रायस्त्रुदनुकृतयस्त्रुन्मयं सरमेरं

दृष्टरा तत्र र्यमुहदधिकं रिस्मयादुक्करोहयम् ॥ 76.8 ॥

780

राधाया मे प्रियतममिदं मंप्रियैरं ब्रवीति

वरं किं मौनं कलयसि सखे मानिनी मंप्रियेर।

इत्याद्येर प्ररदति सखि वरंप्रियो निर्जने मा -

मिथंरादैररमयदयं वरंप्रियामुंपलाङ्गीम् ॥ 76.9 ॥

781

एष्यामि द्रागनुपगमनं केरलं कार्यभारा -

द्विप्लेषेहपि स्मरणदृत्तासम्बरान्मास्तु खेदः।

ब्रह्मानन्दे मिलति नचिरां सङ्गमो रा रियोग -

स्तुल्यो रः स्यादिति तर गिरा सोहकरोर्रिर्थास्ताः ॥ 76.10 ॥

782

एरं भक्तिः सकलभुरने नेम्फिता न श्रुता रा

किं शास्त्रौघैः किमिह तपसा गोपिकाड्यो नमोहस्तु।

इत्यनन्दाकुलमुपगतं गोकुलादुद्धरं तं  
दृष्ट्वा हृष्टो गुरुपुरपते पाहि मामामयोघात् ॥ 76.11 ॥

783

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षट्सप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে সপ্তসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

উপশ্লোকোৎপত্তির্ণনং, জরাসন্ধাদিযুদ্ধর্ণনং, মুচকুন্দানুগ্রহর্ণনং

চ

সৈরঙ্ক্যাস্তদনু চিরং স্মরাতুরাযা

যাতোহভূঃ সুললিতমুদ্বরেন সার্থম্।

আরাসং ৎরদুপগমোৎসরং সর্দৈর

ধ্যাযন্ত্যাঃ প্রতিদিনরাসসর্জ্জিকাযাঃ ॥ 77.1 ॥

784

উপগতে ৎরযি পূর্ণমনোরথাং

প্রমদসঙ্কমকম্প্রপযোধরাম্।

রিরিধমাননমাদধতীং মুদা

রহসি তাং রমযাঞ্চকৃষে সুখম্ ॥ 77.2 ॥

785

পৃষ্ঠা ররং পুনরসারবৃণোদ্ররাকী

ভূযস্তুযা সুরতমের নিশান্তরেষু।

সায়ুজ্যমস্তুিতি রদেৎ বুধ এর কামং

সামীপ্যমস্তুনিশমিত্যপি নাব্ররীৎ কিম্ ॥ 77.3 ॥

786

ততো ভরান্ দের নিশাসু কাসুচি -

নুগীদৃশং তাং নিভৃতং রিনোদযন্।

অদাদুপশ্লোক ইতি শ্রুতং সুতং

স নারদাৎ সাত্ত্বততন্ত্ররিদ্ বভৌ ॥ 77.4 ॥

787

অক্রুরমন্দিরমিতোহথ বলোদ্ধরাভ্যা -

মভ্যর্চিতো বহু নুতো মুদিতেন তেন।

এনং রিসৃজ্য রিপিনাগতপাণ্ডরেয -

বৃত্তং রিরেদিথ তথা ধৃতরাষ্ট্ৰচেষ্টাম্ ॥ 77.5 ॥

788

রিঘাতাজ্জামাতুঃ পরমসুহৃদো ভোজনূপতে -

র্জরাসন্ধে রুন্ধত্যনরধিরুষাঙ্কেহথ মথুরাম্।

রথাদৈর্দ্যোলকৈঃ কতিপযবলস্ত্বং বলযুত -

স্বযোরিংশত্যক্ষৌহিণি তদুপনীতং সমহুথাঃ ॥ 77.6 ॥

789

বদ্ধং বলাদথ বলেন বলোত্তরং ত্বং

ভূযো বলোদ্যমরসেন মুমোচিথৈনম্।

নিশ্শেষদিগ্জযসমাহৃতরিশ্রসৈন্যাৎ

কোহন্যস্ততো হি বলপৌরুষরাংস্তদানীম্ ॥ 77.7 ॥

790

ভগ্নঃ স লগ্নহৃদযোহপি নৃপৈঃ প্রণুনো

যুদ্ধং ত্বয়া ব্যধিত ষোড়শকৃৎর এরম্।

অক্ষৌহিণীঃ শির শিরাস্য জঘন্ত রিষ্ণে

সম্ভুয সৈকনরতিত্রিশতং তদানীম্ ॥ 77.8 ॥

791

অষ্টাদশেহস্য সমরে সমুপেযুষি ত্বং

দৃষ্টরা পুরোহথ যরনং যরনত্রিকোট্যা।

ত্বষ্টা রিধাপ্য পুরমাশু পযোধিমধ্যে

তত্রাহথ যোগবলতঃ স্বজনাননৈষীঃ ॥ 77.9 ॥

792

পদ্ভ্যাং ত্বং পদ্মমালী চকিত ইর পুরান্নির্গতো ধারমানো

শ্লেচ্ছেশেনানুযাতো রধসুকৃতরিহীনেন শৈলে ন্যলৈষীঃ।

সুপ্তেনাভগ্ন্যাহতেন দ্রুতমথ মুচুকুন্দেন ভস্মীকৃতেহস্মিন্

ভূপাযাস্মৈ গুহান্তে সুললিতরপুষা তস্থিষে ভক্তিভাজে ॥ 77.10 ॥

793

ঐক্ষ্রাকোহহং রিরক্তোহস্ম্যাখিলনূপসুখে

ত্বংপ্রসাদৈককাজক্ষী

हा देरेति स्वरुतं रररिततिषु तं  
निस्पृहं रीक्ष्य ह्यन्यं।  
मुक्तेस्तुल्यां च भक्तिं धुतसकलमलं  
मोक्षमप्याशु दत्त्वा  
कार्यं हिंसारिशुद्धे तप इति च तदा  
प्राथ लोकरुतीते ॥ 77.11 ॥

794

तदनु मथुरां गत्वा हत्वा चमूं यरुनाहतां  
मगधपतिना मार्गे सैन्येः पुरेरु निररुतः।  
चरुमरुिजयं दर्पायास्मै प्रदाय पलायितो  
जलधिनगरीं यातो रातलयेश्वरु पाहि माम् ॥ 77.12 ॥

795

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে অষ্টসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

রুক্ষিণীস্বয়ংররম্

ত্রিদশরর্ধকিরর্ধিতকৌশলং

ত্রিদশদত্তসমস্তরিভূতিমৎ।

জলধিমধ্যগতং ঞরমভূষযো

নরপুরং রপুরঞ্চিতরোচিষা ॥ 78.1 ॥

796

দদুষি রেৱতভূভূতি রেৱতীং

হলভূতে তনযাং রিধিশাসনাৎ।

মহিতমুৎসরঘোষমপুপুষঃ

সমুদিতৈর্মুদিতৈঃ সহ যাদরৈঃ ॥ 78.2 ॥

797

অথ রিদর্ভসুতাং খলু রুক্ষিণীং

প্রণযিনীং ঞরযি দেৱ সহোদরঃ।

স্বযমদিৎসত চেদিমহীভুজে

স্বতমসা তমসাধুমুপাশ্রযন্ ॥ 78.3 ॥

798

চিরধৃতপ্রণযা ঞরযি বালিকা

সপদি কাঙ্ক্ষিতভঙ্গসমাকুলা।

তৱ নিরেদযিতুং দ্বিজমাদিশৎ

স্বকদনং কদনঙ্গরিনির্মিতম্ ॥ 78.4 ॥

799

দ্বিজসুতোহপি চ তুর্ণমুপাযযৌ

তৱ পুরং হি দুরাশদুরাসদম্।

मुदमराप च सादरपूजितः

स भरता भरतापहता स्वयम् ॥ 78.5 ॥

800

स च भरन्तमरोचत कुण्डिने

नृपसुता खलु राजति रुक्मिणी।

एरुषि समुत्सुकया निजधीरता -

रहितया हि तया प्रहितोहस्यहम् ॥ 78.6 ॥

801

तर हताहस्यि पुरैर गुणैरहं

हरति मां किल चेदिनूपोहधुना।

अयि कूपालय पालय मामिति

प्रजगदे जगदेकपते तया ॥ 78.7 ॥

802

अशरणां यदि मां एरमुपेक्षसे

सपदि जीरितमेर जहाम्यहम्।

इति गिरा सुतनोरतनोद्धुशं

सुहृदयं हृदयं तर कातरम् ॥ 78.8 ॥

803

अकथयञ्जुमथैनमये सथे

तदधिका मम मन्मथरेदना।

नृपसमक्षमुपेत्य हराम्यहं

तदयि तां दयितामसितेक्षणाम् ॥ 78.9 ॥

804

प्रमुदितेन च तेन समं तदा

रथगतो लघु कुण्डिनमेधिरान्।

गुरुमरुत्पुरनायक मे भवान्

रितनुतां तनुतामखिलापदाम् ॥ 78.10 ॥

805

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये एकानाशीतितमं दशकम् ॥ रुक्मिणीस्त्रयंररर्णनम्

बलसमेतबलानुगतो भरान्  
पुरमगाहत तीष्णकमानितः।

द्विजसूतं रदुपागमरादिनं  
धृतरसा तरसा प्रणनाम सा ॥ 79.1 ॥

806

डुरनकास्तमरेक्ष्य डुरद्वपु -  
नृपसूतस्य निशम्य च चेष्टितम्।

रिपुलखेदजुषां पुररासिनां  
सरुदितैरुदितैरगमनिशा ॥ 79.2 ॥

807

तदनु रन्दितुमिन्दुमुथी शिरां  
रिहितमङ्गलडूषणभासुरा।

निरगमद्वरदर्पितजीरिता  
स्वपुरतः पुरतः सुभटारुता ॥ 79.3 ॥

808

कुलरधुडिरुपेत्य कुमारिका  
गिरिसूतां परिपूज्य च सादरम्।

मुहुरयाचत तपदपङ्कजे  
निपतिता पतितां तर केरलम् ॥ 79.4 ॥

809

समरलोककुतूहलसङ्कुले  
नृपकुले निडृतं ररिषि च स्थिते।



नृपसुता निरगाद् गिरिजालयां  
सुरुचिरं रुचिरञ्जितदिङ्मुखा ॥ 79.5 ॥ 810

डुरनमोहनरूपरुचा तदा  
रिरशिताखिलराजकदम्बया।  
रमपि देर कटाक्करिमोक्कणैः  
प्रमदया मदयाक्कृषे मनाक् ॥ 79.6 ॥ 811

क्नु गमिष्यसि चन्द्रमुखीति तां  
सरसमेत्य करेण हरन् क्कणां।  
समधिरोप्य रथं रमपाह्वा  
डुरि ततो रिततो निनदो द्विषाम् ॥ 79.7 ॥ 812

क्नु गतः पशुपाल इति क्रुधा  
कृतरणा यदुभिश्च जिता नृपाः।  
न तु भवानुदचाल्यत तैरहो  
पिशुनकैः शुनकैरिर केसरी ॥ 79.8 ॥ 813

तदनु रुक्मिणमागतमाहरे  
रधुमुपेक्ष्य निबध्य रिरूपयन्।  
ह्रतमदं परिमुच्य बलोज्जिभिः  
पुरमया रमया सह काञ्चया ॥ 79.9 ॥ 814

नरसमागमलज्जितमानसां  
प्रणयकौतुकजृम्भितमन्मथाम्।  
अरमयः खलु नाथ यथासुखं  
रहसि तां हसितांशुलसन्मुखीम् ॥ 79.10 ॥ 815

रिरिधनर्मभिररमहर्निशं  
प्रमदमाकलयन् पुनरेकदा।

ऋजुमतेः किल रक्रगिरा भवान्  
ररतनोरतनोदतिलोलताम् ॥ 79.11 ॥

816

तदधिकैरथ लालन कौशलैः  
प्रणयिनीमधिकं सुखयन्निमाम्।  
अयि मुकुन्द भरच्चरितानि नः  
प्रगदतां गदतान्तिमपाकुरु ॥ 79.12 ॥

817

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकौनाशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে অশীতিতমং দশকম্ ॥

স্যমন্তকোপাখ্যানম্

সত্রাজিতস্কুমথ লুব্ধরদর্কলব্ধং

দির্যং স্যমন্তকমণিং ভগবন্নযাচীঃ।

তৎকারণং বহুরিধং মম ভাতি নুনং

তস্যাত্মজাং ত্বরযি রতাং ছলতো রিরোঢ়ুম্ ॥ 80.1 ॥

818

অদত্তং তং তুভ্যং মণিররমেনেনান্নমনসা

প্রসেনস্তদ্ধাতা গলভুরি রহন্ প্রাপ মৃগযাম্।

অহ্নেনং সিংহো মণিমহসি মাংসভ্রমরশাৎ

কপীন্দ্রস্তং হংরা মণিমপি চ বালায দদিরান্ ॥ 80.2 ॥

819

শশংসুঃ সত্রাজিদিগিরমনু জনাস্ত্বাং মণিহরং

জনানাং পীযুষং ভরতি গুণিনাং দোষকণিকা।

ততঃ সর্জ্জোহপি স্বজনসহিতো মার্গণপরঃ

প্রসেনং তং দৃষ্টরা হরিমপি গতোহভূঃ কপিগুহাম্ ॥ 80.3 ॥

820

ভরন্তমরিতর্কযন্নতিরযাঃ স্বযং জাম্বরান্

মুকুন্দশরণং হি মাং ক ইহ রোদ্ধুমিত্যালপন্।

রিভো রঘুপতে হরে জয জযেত্যালং মুষ্টিভি -

শ্চিরং তর সমর্চনং ব্যধিত ভক্তচুডামণিঃ ॥ 80.4 ॥

821

বুধ্রাহথ তেন দত্তাং

নররমণীং বরমণিং চ পরিগৃহ্ন।

अनुगृह्णन्मुमागाः

सपदि च सत्राजिते मणिं प्रादाः ॥ 80.5 ॥

822

तदनु स खलु ब्रीलालोलो रिलोलरिलोचनां  
दुहितरमहो धीमान् भामां गिरैर परार्पिताम्।  
अदित मणिना तुभ्यं लभ्यं समेत्य भवानपि  
प्रमुदितमनास्तस्यैरादान्मणिं गहनाशयः ॥ 80.6 ॥

823

ब्रीलाकुलां रमयति र्वयि सत्यभामां  
कौन्तेयदाहकथयाथ कुरुन् प्रयाते।  
ही गान्दिनेयकृतर्मगिरा निपात्य  
सत्राजितं शतधनुर्मणिमाजहार ॥ 80.7 ॥

824

शोकां कुरुनुपगतामरलोक्य कान्तां  
हंरा द्रुतं शतधनुं समहर्षयस्ताम्।  
रत्ने सशङ्क ईर मैथिलगेहमेत्य  
रामो गदां समशिशिक्षत धार्तराष्ट्रम् ॥ 80.8 ॥

825

अक्रुर एष भगवन् भरदिच्छयैर  
सत्राजितः कुचरितस्य युयोज हिंसाम्।  
अक्रुरतो मणिमनाहतवान् पुनस्तुं  
तस्यैर भूतिमुपधातुमिति ब्रुरन्ति ॥ 80.9 ॥

826

भङ्गस्तुयि स्थिरतरः स हि गान्दिनेय -  
स्तस्यैर कापथमतिः कथमीश जाता।  
रिञ्जानवान् प्रशमवानहमित्युदीर्णं  
गर्भं ध्रुवं शमयितुं भरता कृतैर ॥ 80.10 ॥

827

यातं भयेन कृतर्मयुतं पुनस्त -  
माहूय तद्विनिहितं च मणिं प्रकाश्या।

तत्रैर सुब्रतधरे रिनिधाय तुष्यन्

भामाकुचान्तरशयः परनेश पायाः ॥ 80.11 ॥

828

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে একাশীতিতমং দশকম্ ॥

সুভদ্রাহরণং, কালিন্দ্যাদিরিরাহরণং, নরকাসুররধরণং চ  
স্নিগ্ধাং মুগ্ধাং সততমপি তাং লালযন্ সত্যভামাং  
যাতো ভূযঃ সহ খলু তযা যাজ্জসেনীরিরাহম্।  
পার্থপ্রীতৈ পুনরপি মনাগাস্থিতো হস্তিপূর্যাং  
শক্রপ্রস্থং পুরমপি রিভো সংরিধাযাগতোহভূঃ ॥ 81.1 ॥

829

ভদ্রাং ভদ্রাং ভরদররজাং কৌররেণার্থ্যমানাং  
ৎরদ্বাচা তামহত কুহনামস্করী শক্রসূনুঃ।  
তত্র ক্রুদ্ধং বলমনুনযন্ প্রত্যগাস্তেন সার্থং  
শক্রপ্রস্থং প্রিযসখমুদে সত্যভামাসহাযঃ ॥ 81.2 ॥

830

তত্র ক্রীডন্নপি চ যমুনাকুলদৃষ্টাং গৃহীৎরা  
তাং কালিন্দীং নগরমগমঃ খাণ্ডরপ্রীণিতাণিঃ।  
ভ্রাতৃস্তাং প্রণযরিরশাং দেৱ পৈতৃৎরসেযীং  
রাজ্জাং মধ্যে সপদি জহ্ষে মিত্রিন্দামরন্তীম্ ॥ 81.3 ॥

831

সত্যাং গৎরা পুনরুদরহো নগ্নজিন্নন্দনাং তাং  
বধ্ৱা সপ্তাপি চ বৃষররান্ সপ্তমূর্তিনিমেষাৎ।  
ভদ্রাং নাম প্রদদুরথ তে দেৱ সন্তর্দনাদ্যা -  
স্তৎসোদর্যা ররদ ভরতঃ সাহপি পৈতৃৎরসেযী ॥ 81.4 ॥

832

পার্থাদৈরপ্যকৃতলরনং তোযমাত্রাভিলক্ষ্যং  
লক্ষং ছিৎরা শফরমবৃথা লক্ষ্ণাং মদ্রকন্যাম্।

- अष्टारेरं तर समभरन् रल्लभासुत्र मध्ये  
 शुश्रोथ एरं सुरपतिगिरा भौमदुश्चेष्टितानि ॥ 81.5 ॥ 833
- स्मृतायातं पम्फिप्ररमधिरुचस्रुमगमो  
 रहन्नक्के भामामुपरनमिरारातिभरनम्।  
 रिभिन्दन् दुर्गाणि क्वाटितपृतनाशोणितरसैः  
 पुरं तारं प्राग्जेज्यातिषमकुरुथाः शोणितपुरम् ॥ 81.6 ॥ 834
- मुरस्त्रां पक्कास्यो जलधिरनमध्यादुदपतं  
 स चक्रे चक्रेण प्रदलितशिरा मञ्जु भरता।  
 चतुर्दन्तैर्दन्तारलपतिभिरिक्कानसमरं  
 रथाप्सेन छिंरा नरकमकरोस्तीर्णनरकम् ॥ 81.7 ॥ 835
- स्तुतो भूम्या राज्यं सपदि भगदन्तेहस्य तनये  
 गजकैकं दंरा प्रजिघथिथ नागान्निजपुरीम्।  
 खलेनावद्धानां स्वगतमनसां षोडश पुनः  
 सहस्राणि स्त्रीणामपि च धनराशिं च रिपुलम् ॥ 81.8 ॥ 836
- भौमापाहृतकुण्डलं तददितेर्दातुं प्रयातो दिरं  
 शक्रादैर्महितः समं दथितया द्युस्त्रीषु दउह्रिया।  
 हंरा कल्लतरुं रुषाभिपतितं जिंरेन्द्रमभ्यागम -  
 सुत्तु श्रीमददोष ईदृश इति र्याख्यातुमेराकृथाः ॥ 81.9 ॥ 837
- कल्लद्रं सत्यभामाभरनभुरिसृजन् द्युष्टिसाहस्रयोषाः  
 स्त्रीकृत्य प्रत्यगारं रिहितवह्रपुर्लालयन् केलिभेदैः।  
 आश्चर्यान्नारदालोकितरिधिगतिस्तुत्र तत्रापि गेहे  
 भूयः सर्वासु कुरन् दश दश तनयान् पाहि रातालयेष ॥ 81.10 ॥ 838

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकाशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে দ্ব্যশীতিতমং দশকম্ ॥

বাণযুদ্ধং, নৃগমোক্ষং চ

প্রদ্যুম্নো রৌক্মিণেষঃ স খলু তর কলা

শম্বরেণাহতস্তং

হংরা রত্যা সহাপ্তো নিজপুরমহর -

দ্রক্ষিকন্যাং চ ধন্যাম্।

তৎপুত্রোহথানিরুদ্ধো গুণনিধিরহ -

দ্রোচনাং রুক্ষিপৌত্রীং

তত্রোদ্রাহে গতস্ত্বং ন্যরধি মুসলিনা

রুক্ষ্যপি দ্যুতরৈরাৎ ॥ 82.1 ॥

839

বাণস্য সা বলিসুতস্য সহস্রবাহো -

র্মাহেশ্বরস্য মহিতা দুহিতা কিলোষা।

ৎরৎপৌত্রমেনমনিরুদ্ধমদৃষ্টপূর্ং

স্বপ্নেহনুভূয ভগবন্ রিরহাতুরাহভূৎ ॥ 82.2 ॥

840

যোগিন্যতীর কুশলা খলু চিত্রলেখা

তস্যাঃ সখী রিলিখতী তরুণানশেষান্।

তত্রানিরুদ্ধমুষয়া রিদিতং নিশায়া -

মানেষ্ট যোগবলতো ভরতো নিকেতাৎ ॥ 82.3 ॥

841

কন্যাপুরে দযিতয়া সুখমারমন্তং

চৈনং কথঞ্চন ববক্ষুষি শর্ববক্ষৌ।



श्रीनारदोक्ततदुदन्तदुरन्तरोषै -

स्त्रुं तस्य शोणितपुरं यदुर्भिन्यरुक्काः ॥ 82.4 ॥

842

पुरीपालशैशलप्रियदुहितृनाथोहस्य भगवान्

समं भूतब्रूतैर्यदुबलमशक्कं निरुरुधे।

महाप्राणो बाणो ऋत्ति युयुधानेन युयुधे

गुहः प्रद्युम्नेन वरमपि पुरहन्त्रा जघटिषे ॥ 82.5 ॥

843

निरुद्धाशेषास्त्रे मुमुक्षुषि तरास्त्रेण गिरिशे

द्रुता भूता बीताः प्रमथकुलरीराः प्रमथिताः।

परास्कन्दं स्कन्दः कुसुमशरवाणैश्च सचिरः

स कुम्भाणो भाणुं नरमिर बलेनाशु विभिदे ॥ 82.6 ॥

844

चापानां पञ्चशत्या प्रसभमुपगते

हिनचापेहथ बाणे

र्यर्थे याते समेतो ज्वरपतिरशनै -

रज्वरि वरज्वरेण।

ज्जानी स्त्रुवराहथ दंरा तर चरितजुषां

रिज्वरं स ज्वरोहगां

प्रायोहन्तर्ज्जानरन्तोहपि च बह्तमसा

रौद्रचेष्टा हि रौद्राः ॥ 82.7 ॥

845

बाणं नानायुधोग्रं पुनरभिपतितं दर्पदोषाद्वितन्त्रन्

निर्लूनाशेषदोषं सपदि बुबुधुषा शक्करेणोपगीतः।

तद्वाचा शिष्टबाह्वद्वितयमुभयतो निर्भयं तं प्रियं तं

मुक्त्वा तद्वदमानो निजपुरमगमः सानिरुद्धः सहोषः ॥ 82.8 ॥

846

मुहस्तारच्छक्रं ररुणमजयो नन्दहरणे

यमं बालानीतौ दरदहनपानेहनिलसखम्।

रिधिं रत्सस्त्ये गिरिशमिह बाणस्य समरे

रिभो रिश्रेत्कर्षी तदयमरतारो जयति ते ॥ 82.9 ॥

847

द्विजरुषा कृकलासरपुर्धरं

नृगनृपं त्रिदिरालयमापयन्।

निजजने द्विजभक्तिमनुत्तमा -

मुपदिशन् परनेश्वर पाहि माम् ॥ 82.10 ॥

848

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्व्यशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে ত্র্যশীতিতমং দশকম্ ॥

পৌণ্ড্রকরধরণনং, কাশীপুরিদাহরণনং, রিদিদরধরণনং,  
লক্ষণাস্বয়ংররং চ

রামেহথ গোকুলগতে প্রমদাপ্রসক্তে

হুতানুপেতযমুনাদমনে মদাক্কে।

স্বৈরং সমারমতি সেরকরাদমূঢ়ো

দুতং ন্যযুভক্ত তর পৌণ্ড্রকরাসুদেরঃ ॥ 83.1 ॥

849

নারাযণোহহমরতীর্ণ ইহাস্মি ভূমৌ

ধৎসে কিল ংরমপি মামকলক্ষণানি।

উৎসৃজ্য তানি শরণং ব্রজ মামিতি ংরাং

দুতো জগাদ সকলৈর্হসিতঃ সভাযাম্ ॥ 83.2 ॥

850

দুতেহথ যাতরতি যাদরসৈনিকৈস্তুং

যাতো দদর্শিথ রপুঃ কিল পৌণ্ড্রকীয়ম্।

তাপেন রক্ষসি কৃতাক্ষমনল্লমূল্য -

শ্রীকৌস্তুভং মকরকুণ্ডলপীতচেলম্ ॥ 83.3 ॥

851

কালাযসং নিজসুদর্শনমস্যতোহস্য

কালানলোৎকরকিরেণ সুদর্শনেন।

শীর্ষং চকর্তিথ মমর্দিথ চাস্য সেনাং

তন্নিত্রকাশিপশিরোহপি চকর্থ কাশ্যাম্ ॥ 83.4 ॥

852

জাল্যেন বালকগিরাহপি কিলাহমের

শ্রীরাসুদের ইতি রুচমতিশ্চিরং সঃ।

- सायुज्यमेरुं भ्रूदक्याधिया गतोहभू९  
को नाम कस्य सुकृतं कथमित्यरेया९ ॥ 83.5 ॥ 853
- काशीश्वरस्य तनयोहथ सुदक्षिणाथ्यः  
शर्वं प्रपूज्य भ्रूते रिहिताभिचारः।  
कृत्यानलं कमपि वाणरणातिभीते -  
भूतेः कथञ्चन भूतेः सममभ्यमुञ्च९ ॥ 83.6 ॥ 854
- तालप्रमाणचरणामथिलं दहन्तीं  
कृत्यां रिलोक्य चकितैः कथितोहपि पौरैः।  
द्यूतोऽसरे किमपि नो चलितो रिभो ँरं  
पाश्वरसुमाशु रिससर्जिथ कालचक्रम् ॥ 83.7 ॥ 855
- अभ्यापतत्यमितधाम्नि भ्रून्महास्त्रे  
हा हेति रिद्रुतरती खलु घोरकृत्या।  
रोषां सुदक्षिणमदक्षिणचेष्टितं तं  
पुण्णेष चक्रमपि काशिपुरीमधाम्नीं ॥ 83.8 ॥ 856
- स खलु रिरिदो रम्भोघाते कृतोपकृतिः पुरा  
तर तु कलया मृत्युं प्राप्नुं तदा खलतां गतः।  
नरकसचिरो देशक्लेशं सृजन् नगराञ्जिके  
ऋतिति हलिना युध्यन्द्वा पपात तलाहतः ॥ 83.9 ॥ 857
- साम्भं कौरव्यपुत्रीहरणं नियमितं सान्धुनार्थी कुरूणां  
यातस्तद्वाक्यरोषोद्भूतकरिनगरो मोचयामास रामः।  
ते घात्याः पाण्डुरैरिति यदुपतनां नामुचस्त्रुं तदानीं  
तं ँरां दुर्वोधलीलं परनपुरपते तापशास्त्रे  
निषेरे ॥ 83.10 ॥ 858

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्र्यशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये चतुरशीतितमं दशकम् ॥

सूर्यग्रहणयात्रारर्णनम्

क्वचिदथ तपनोपरागकाले

पुरि निदधे कृतर्मकामसूनु।

यदुकुलमहिलारूतः सूतीर्थं

समुपगतोहसि समस्तपञ्चकाथ्यम् ॥ 84.1 ॥

859

बहतरजनताहिताय तत्र

ेरमपि पुनन् रिनिमज्य तीर्थतोयम्।

द्विजगणपरिमुञ्जरिउराशिः

सममिलथाः कुरुपाण्णरादिमित्रैः ॥ 84.2 ॥

860

तर खलु दयिताजनैः समेता

द्रुपदसूता ळरयि गाढभक्तिभारा।

तदुदितभरदाहतिप्रकारैः

अतिमुमुदे सममन्यभामिनीभिः ॥ 84.3 ॥

861

तदनु च भगवन् निरीक्ष्य गोपा -

नतिकुतुकदुपगम्य मानयिः।

चिरतररिरहातुराङ्गरेखाः

पञ्चपरधुः सरसं ळरमन्त्रयासीः ॥ 84.4 ॥

862

सपदि च भ्रदीक्षणेऽसरेन

प्रमुषितमानहदां नितम्बिनीनाम्।

अतिरसपरिमुक्तकङ्गुलीके परिचयहृद्यतरे कुचे न्यलैषीः ॥ 84.5 ॥	863
रिपुजनकलहैः पुनः पुनर्मे समुपगतैरियती रिलम्बनाहडू९। इति कृतपरिरम्भणे ँरयि द्रा - गतिरिरशा खलु राधिका निलिल्ये ॥ 84.6 ॥	864
अपगतरिरहर्यास्तदा ता रहसि रिधाय ददाथ तड्ढुबोधम्। परमसुखचिदात्मकोहहमात्मे - त्युदयतु रः स्फुटमेर चेतसीति ॥ 84.7 ॥	865
सुखरसपरिमिश्रितो रियोगः किमपि पुराहभरदुक्करोपदेशैः। समभरदमुतः परं तु तासां परमसुखैक्यमयी भरद्विचिन्ता ॥ 84.8 ॥	866
मुनिररनिरहैस्तुराथ पित्रा दुरितशमाय शुभानि पृच्छ्यमानैः। ँरयि सति किमिदं शुभान्तरैरि - त्युरुहसितैरपि याजितस्तदाहसौ ॥ 84.9 ॥	867
सुमहति यजने रितायमाने प्रमुदितमित्रजने सहैर गोपाः। यदुजनमहितास्त्रिमासमात्रं भरदनुषङ्गरसं पुरेर भेजुः ॥ 84.10 ॥	868
र्यपगमसमये समेत्य राधां दृत्मुपगूह्य निरीक्ष्य रीतखेदाम्।	

प्रमुदितहृदयः पुरं प्रयातः

परनपुरेश्वर पाहि मां गदेभ्यः ॥ 84.11 ॥

869

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुरशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥



শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে পঞ্চাশীতিতমং দশকম্ ॥

জরাসন্ধরধরণনং, রাজসূয়রণনং চ

ততো মগধভূভূতা চিরনিরোধসঙ্কল্পশিতং  
শতাষ্টকযুতায়ুতদ্বিতযমীশ ভূমীভূতাম্।  
অনাথশরণায় তে কমপি পুরুষং প্রাহিণো -  
দযাচত স মাগধক্ষপণমের কিং ভূযসা ॥ 85.1 ॥

870

যিযাসুরভিমাগধং তদনু নারদোদীরিতা -  
দ্যুধিষ্ঠিরমখোদ্যমাদুভযকার্যপর্যাকুলঃ।  
বিরুদ্ধজযিনোহধ্বরাদুভযসিদ্ধিরিত্যুধ্বরে  
শশংসুষি নিজৈঃ সমং পুরমিযেথ যৌধিষ্ঠিরীম্ ॥ 85.2 ॥

871

অশেষদযিতায়ুতে ংরযি সমাগতে ধর্মজো  
রিজিত্য সহজৈমহীং ভরদপাঙ্গসংর্ধিতৈঃ।  
শ্রিযং নিরুপমাং রহন্নহহ ভক্তদাসাযিতং  
ভরন্তমযি মাগধে প্রহিতরান্ সভীমার্জুনম্ ॥ 85.3 ॥

872

গিরিব্রজপুরং গতাস্তদনু দেব যুযং ত্রযো  
যযাচ সমরোৎসরং দ্বিজমিষেণ তং মাগধম্।  
অপূর্ণসুকৃতং ংরমুং পরনজেন সঙ্গ্রামযন্  
নিরীক্ষ্য সহ জিষ্ণুনা ংরমপি রাজযুদ্ধরা স্থিতঃ ॥ 85.4 ॥

873

অশান্তসমরোদ্ধতং বিটপপাটনাসংজ্ঞয়া  
নিপাত্য জরসম্ভুতং পরনজেন নিষ্পাটিতম্।

रिमुच्य नृपतीन् मुदा समनुगृह्य भक्तिं परां  
दिदेशिथ गतस्पृहानपि च धर्मशुश्रूष्यैः ॥ 85.5 ॥ 874

प्रचक्रुषि युधिष्ठिरे तदनु राजसूयाध्वरं  
प्रसन्नभृतक्रीडरसकलराजकर्याकुलम्।  
रमपयि जगत्पते द्विजपदारनेजादिकं  
चकथं किमु कथ्यते नृपरस्य भाग्योन्नतिः ॥ 85.6 ॥ 875

ततः सरनकर्माणि प्ररमग्र्यपूजारिधिं  
रिचार्य सहदेवरागनुगतः स धर्मात्प्रजः।  
र्यधत्त भरते मुदा सदसि रिरभूतात्प्रने  
तदा ससुरमानुषं भूरनमेर तृप्तिं दधौ ॥ 85.7 ॥ 876

ततः सपदि चेदिपो मुनिनृपेषु तिष्ठत्प्रहो  
सभाजयति को जडः पशुपदुदुरुटं रटुम्।  
इति ररयि स दुर्रचोरिततिमुद्रमन्नासना -  
दुदापतदुदायुधः समपतन्नमुं पावराः ॥ 85.8 ॥ 877

निरार्य निजपङ्कगानभिमुखस्य रिरद्वेषिण -  
श्रुमेर जहषे शिरो दनुजदारिणा स्वारिणा।  
जनुश्रितयलक्कया सततचित्तया शुद्धधी -  
श्रुया स परमेकतामधृत योगिनां दुर्लभाम् ॥ 85.9 ॥ 878

ततः सुमहिते ररया क्रतुररे निरुटे जनो  
यथौ जयति धर्मजो जयति कृष इत्यालपन्।  
खलः स तु सुयोधनो धुतमनास्सपत्नप्रिया  
मयार्पितसभामुখে श्लजलप्रमादप्रमीत् ॥ 85.10 ॥ 879

तदा हसितमुखितं द्रुपदनन्दनाभीमयो -  
रपाङ्कलया रिभो किमपि तारदुज्जुम्भयन्।

धराभरनिराकृतौ सपदि नाम बीजं रूपन्  
जनार्दन मरुत्पुरीनिलय पाहि मामामयात् ॥ 85.11 ॥

880

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चाशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये षडशीतितमं दशकम् ॥

সাল্লাদিরধরণনং ভারতযুদ্ধরণনং চ

সাল্লে ভৈষ্ণীরিরাহে যদুবলরিজিতশ্চন্দ্রচূডাধ্রিমানং

রিন্দন্ সৌভং স মাযী ৳রযি রসতি কুরুংস্তুপুরীমভ্যভাঙ্ক্ষীৎ।  
প্রদ্যুম্নস্তং নিরুঙ্কান্নিখিলযদুভট্টৈর্যগ্রহীদুগ্ররীর্ষং

তস্যামাত্যং দ্যুমন্তং র্যজনি চ সমরঃ সপ্তরিংশত্যহান্তঃ ॥ 86.1 ॥

881

তারভ্রুং রামশালী ৳ররিতমুপগতঃ খণ্ডিতপ্রায়সৈন্যং

সৌভেশং তং ন্যরুঙ্কাঃ স চ কিল গদযা শার্ঙ্গমভ্রংশযন্তে।  
মাযাতাতং র্যহিংসীদপি তর পুরতস্তভ্রুযাপি ক্ষণার্ধং

নাজ্জাযীত্যাহুরেকে তদিদমরমতং র্যাস এর ন্যষেধীৎ ॥ 86.2 ॥

882

ক্ষিপ্ত্বা সৌভং গদাচূর্ণিতমুদকনিধৌ মঙ্ক্ষু সাল্লেহপি চক্রে -

ণোৎকৃতে দন্তরভ্রুঃ প্রসভমভিপতন্নভ্যমুঞ্চদগদাং তে।  
কৌমোদক্যা হতোহসারপি সুকৃতনিধিশ্চৈচদ্যরৎপ্রাপদৈক্যং

সর্বেষামেষ পূর্নং ৳রযি ধৃত মনসাং মোক্ষণার্থোহরতারঃ ॥ 86.3 ॥

883

৳রয্যাযাতেহথ জাতে কিল কুরুসদসি দ্যুতকে সংযতাযাঃ

ক্রন্দন্ত্যা যাঙ্কসেন্যাঃ স করুণমকৃথাশ্চেলমালামনন্তাম্।  
অনান্তপ্রাপ্তশর্রাংশজমুনিচকিতদ্রৌপদী চিন্তিতোহথ

প্রাপ্তঃ শাকান্নমগ্নন্ মুনিগণমকৃথাস্তৃপ্তিমন্তং রনান্তে ॥ 86.4 ॥

884

যুদ্ধোদ্যোগেহথ মন্ত্রে মিলতি সতি বৃতঃ

ফল্গুনেন ৳রমেকঃ  
কৌরবে দত্তসৈন্যঃ করিপূরমগমো

दौत्यकृं पाणुरार्थम्।  
 डीश्वद्रोणादिमान्ये तर खलु रचने  
 धिक्कृते कौररेण  
 र्यारृणन् रिश्वररूपं मुनिसदसि पुरीं  
 ष्फोभयिंरागतोहडुः ॥ 86.5 ॥

885

जिषेणस्रुं कृषु सूतः खलु समरमुखे वक्नुघाते दयालुं  
 थिनं तं रीक्ष्य रीरं किमिदमथि सथे नित्य एकोहयमात्मा।  
 को रथ्यः कोहत्र हन्ता तदिह रथडियं प्रोज्ञ्य मय्यर्पितात्मा  
 धर्म्यं युद्धं चरेति प्रकृतिमनयथा दर्शयन् रिश्वररूपम् ॥ 86.6 ॥

886

डक्तोडुंसेहथ डीश्वे तर धरणिडर -  
 ष्फेपकृतैकसक्ते  
 नित्यं नित्यं रिडिन्दत्युतसमधिकं  
 प्राप्सुसादे च पार्थे।  
 निश्वस्रुंरप्रतिङ्गां रिजहदरिररं  
 धारयन् क्रोधशाली -  
 राधारन् प्राङ्गलिं तं नतशिरसमथो  
 रीक्ष्य मोदादपागाः ॥ 86.7 ॥

887

युद्धे द्रोणस्य हस्तिश्विररणडगदतेरितं रैषुंरास्रुं  
 रक्षस्याधु चक्रस्रुगितररिमहाः प्रादयंसिक्कुराजम्।  
 नागास्रे कर्णमुक्ते ष्फितिमरनमयन् केरलं कृतमौलिं  
 तत्रे तत्रापि पार्थं किमिर नहि डरान् पाणुरानामकार्षीं ॥ 86.8 ॥

888

युद्धादौ तीर्थगामी स खलु हलधरो नैमिशक्फेड्रमुच्छ -  
 नप्रतुथायिसूतक्षयकृतथ सूतं तंपदे कल्लयिंरा।

यञ्जुघ्नं बल्ललं परीणि परिदलयन् स्नाततीर्थो रणाञ्जे  
सम्प्राप्तो भीमदुर्योधनरणमशमं वीक्ष्य यातः पुरीं ते ॥ 86.9 ॥ 889

संसुप्तद्रौपदेयक्कपणहतधियं द्रौणिमेत्य एरदुक्त्या  
तनुक्तं ब्राम्ममञ्जं समहत रिजयो मौलिरत्नं च जहे।  
उच्छित्ये पाणुरानां पुनरपि च रिशतुत्तरागर्भमञ्जे  
रक्कन्नसुर्धमात्रः किल जठरमगाश्चक्रपाणिर्बिभो एरम् ॥ 86.10 ॥ 890

धर्मौघं धर्मसूनोरभिदधदधिलं  
छन्दमृत्युस्स भीष्म -  
स्त्रां पश्यन् भक्तिभूमैर हि सपदि ययौ  
निष्कलब्रम्हाडूयम्।  
संयाज्याथाश्चरमेधैस्त्रिभिरतिमहितै -  
धर्मजं पूर्णकामं  
सम्प्राप्तो द्वारकां एरं परनपुरपते  
पाहि मां सररोगां ॥ 86.11 ॥ 891

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षडशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে সপ্তাশীতিতমং দশকম্ ॥

কুচেলোপাখ্যানম্

কুচেলনামা ভরতঃ সতীর্থ্যতাং

গতঃ স সান্দীপনিমন্দিরে দ্বিজঃ।

ৎরদেকরাগেণ ধনাদিনিষ্পৃহো

দিনানি নিন্যে প্রশমী গৃহাশ্রমী ॥ 87.1 ॥

892

সমানশীলাহপি তদীয়রল্লভা

তথৈর নো চিত্তজয়ং সমেযুষী।

কদাচিদুচে বত বৃত্তিলঙ্ঘয়ে

রমাপতিঃ কিং ন সখা নিষের্যতে ॥ 87.2 ॥

893

ইতীরিতোহয়ং প্রিযযা ক্ষুধার্তযা

জুগুন্সমানোহপি ধনে মদারহে।

তদা ত্ৰদালোকনকৌতুকাদ্যযৌ

রহন্ পটান্তে পৃথুকানুপাযনম্ ॥ 87.3 ॥

894

গতোহযমাশ্চর্যমযীং ভরৎপুরীং

গৃহেষু শৈব্যভরনং সমেযিরান্।

প্ররিশ্য রৈকুঠমিরাপ নিরুতিং

তরাতিসম্ভারনযা তু কিং পুনঃ ॥ 87.4 ॥

895

প্রপূজিতং তং প্রিযযা চ রীজিতং

করে গৃহীৎরাহকথযঃ পুরাকৃতম্।

यदिक्नार्थं गुरुदारचोदितै -

रपर्तुर्षं तदमर्षि कानने ॥ 87.5 ॥

896

त्रपाजुषोहस्मां पृथुकं बलादथ  
प्रगृह्य मुष्टौ सकृताशिते व्रया।

कृतं कृतं नन्वियतेति संद्रमा -

द्रमा किलोपेत्य करं रुरोध ते ॥ 87.6 ॥

897

भक्तेषु भक्तेन स मानितस्त्रया

पुरीं रसन्नेकनिशां महासुखम्।

वतापरेद्युर्द्रिणं रिना यथौ

रिचिद्रूपसुत्रं खल्लनुग्रहः ॥ 87.7 ॥

898

यदि ह्याचिष्यमदास्यदच्युतो

रदामि भार्यां किमिति ब्रुजन्नसौ।

व्रदुक्त्रिलीलास्मितमग्नधीः पुनः

क्रमादपश्याग्निदीप्रमालयम् ॥ 87.8 ॥

899

किं मार्गरिभ्रंश इति भ्रमन् ऋणं

गृहं प्ररिष्टः स ददर्श रल्लभाम्।

सथीपरीतां मणिहेमभूषितां

बुबोध च व्रवकरुणां महाद्भुताम् ॥ 87.9 ॥

900

स रत्नशालासु रसन्नपि स्वयं

समून्नमङ्गुक्तिभरोहमृतं यथौ।

व्रमेरमापुरितभक्तुराङ्घ्रितो

मरुवपुराधीश हरस्व मे गदान् ॥ 87.10 ॥

901

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तशतीतमं दशकं समाप्तम् ॥



श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये अष्टाशीतितमं दशकम् ॥

सन्तानगोपालोपाख्यानम्

प्रागेराचार्यपुत्राहतिनिशमनया स्त्रीयषट्सूनुरीक्षां

काङ्क्षन्त्या मातुरुक्त्या सुतलभुरि बलिं प्राप्य तेनार्चितम्।

धातुः शापाद्विरग्यान्वितकशिपु भवान् शौरिजान् कंसभग्ना -

नानीयैनान् प्रदर्शय स्वपदमनयथाः पूर्णपुत्रान् मरीचेः ॥ 88.1 ॥

902

श्रुतदेर इति श्रुतं द्विजेन्द्रं

बह्लाश्रं नृपतिं च भक्तिपूर्णम्।

युगपद्भ्रमनुग्रहीतुकामो

मिथिलां प्रापिथ तापसैः समेतः ॥ 88.2 ॥

903

गच्छन् द्विमूर्तिरुभयोर्युगपन्निकेत -

मेकेन भूरिभिरैरिहितोपचारः।

अन्येन तद्दिनभूतैश्च फलोदनाद्यै -

स्तुल्यं प्रसेदिथ ददाथ च मुक्तिमाभ्याम् ॥ 88.3 ॥

904

भूयोऽथ द्वाररत्यां द्विजतनयमृतिं तंप्रलापानपि व्रं

को वा दैव्यं निरुक्त्यादिति किल कथयन् विश्वरौचाहप्यसोटाः।

जिष्णोर्गर्भं रिनेतुं व्रथि मनुजधिया कुण्ठितां चास्य बुद्धिं

तद्भारुटां रिधातुं परमतमपदप्रेक्षणेनेति मन्ये ॥ 88.4 ॥

905

नष्टा अष्टास्य पुत्राः पुनरपि तत्र तूपेक्षया कष्टरादः

स्पष्टो जातो जनानामथ तदरसरे द्वारकामाप पार्थः।

मैत्र्या तत्रोषितोऽसौ नरमसूतमृतौ रिप्रर्यप्ररोदं

श्रृंरा चक्रे प्रतिञ्जामनुपहतसूतः सन्निरेक्ष्य कृशानुम् ॥ 88.5 ॥ 906

मानी स एरामपृष्टरा द्विजनिलयगतो  
बाणजालैर्महास्त्रैः

रुक्मानः सूतिगेहं पुनरपि सहसा  
दृष्टनष्टे कुमारे।

याम्यामैन्द्रीं तथाहन्याः सुरररनगरी -  
रिदय्याहसद्य सद्यो

मोघोद्योगः पतिष्यन् हृतभुजि भरता  
सस्मितं रारितोहभू ॥ 88.6 ॥ 907

सार्धं तेन प्रतीचीं दिशमतिजरिना  
स्यन्दनेनाभियातो

लोकालोकं र्यतीतस्तिमिरभरमथो  
चक्रधाम्ना निरुक्कन्।

चक्रांशुक्लिष्टदृष्टिं स्थितमथ रिजयं  
पश्य पश्यति रारां

पारे एरं प्राददर्शः किमपि हि तमसां  
दूरदूरं पदं ते ॥ 88.7 ॥ 908

तत्रासीनं भुजङ्गाधिपशयनतले  
दिर्यभूषायुधै -

रारीतं पीतचेलं प्रतिनरजलद -  
श्यामलं श्रीमदङ्गम्।

मूर्तीनामीशितारं परमिह तिसृणा -  
मेकमर्थं श्रुतीनां

९रामेर ९रं परात्नन् प्रियसखसहितो  
नेमिथ ক্ষेमरूपम् ॥ 88.8 ॥

909

युरां मामेर द्वारधिकरिर्बृताङ्गिर्हिततया  
रिभिनौ सन्द्रष्टुं स्वयमहमहार्षं द्विजसुतान्।  
नयेतं द्रागेतानिति खलु रितीर्णान् पुनरमून्  
द्विजायादायादाः प्रणुतमहिमा पाण्डुजनुषा ॥ 88.9 ॥

910

एरं नानारिहारैर्जगदभिरमयन् रूष्णिरंशं प्रपुष -  
नीजानो यञ्जभेदैरतुलरिहतिभिः प्रीणयन्नेनेत्राः।  
डूभारक्षेपदञ्चां पदकमलजूषां मोक्षणायारतीर्णः  
पुर्णं ब्रह्मैर साक्षाद्यदुषु मनुजतारुषितस्तुं ब्यासीः ॥ 88.10 ॥

911

प्रायेण द्वाररत्यामरूतदधि तदा  
नारदस्तुद्रसार्द्र -  
स्तस्माल्लेभे कदाचिंखलु सुकृतनिधि -  
स्त्रुपिता तद्बुबोधम्।  
भङ्गानामग्रयायी स च खलु मतिमा -  
नुद्धरस्तुत एर  
प्राप्तो रिञ्जानसारं स किल जनहिता -  
याधुनाहहस्ते बदर्याम् ॥ 88.11 ॥

912

सोहयं कृष्णरतारो जयति तर रिभो  
यत्र सौहार्दभीति -  
स्नेहद्वेषानुरागप्रभृतिभिरतुलै -  
रश्रमैर्योगभेदैः।  
आर्तिं तीर्त्वा समस्ताममृतपदमणु -  
स्सरतः सरल्लोकाः

स एरं रिश्रार्तिशान्ते परनपुरपते  
भक्तिपूरैते च डूयाः ॥ 88.12 ॥

913

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टाशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে একোননরতিতমং দশকম্ ॥

বৃকাসুররধরণনম্

রমাজানে জানে যদিহ তর ভক্তেষু রিভরো

ন সদ্যস্পদ্যস্তদিহ মদকৃত্ত্বাদশমিনাম্।

প্রশান্তিং কৃৎরৈর প্রদিশসি ততঃ কামমখিলং

প্রশান্তেষু ক্ষিপ্রং ন খলু ভরদীযে চ্যুতিকথা ॥ 89.1 ॥

914

সদ্যঃ প্রসাদরুষিতান্ রিধিশঙ্করাদীন্

কেচিদ্ভিভো নিজগুণানুগুণং ভজন্তঃ।

ভ্রষ্টা ভরন্তি বত কষ্টমদীর্ঘদৃষ্ট্যা

স্পষ্টং বৃকাসুর উদাহরণং কিলাস্মিন্ ॥ 89.2 ॥

915

শকুনিজঃ স তু নারদমেকদা

ৎররিততোষমপৃচ্ছদধীশ্বরম্।

স চ দিদেশ গিরীশমুপাসিতুং

ন তু ভরন্তমবন্ধুমসাধুষু ॥ 89.3 ॥

916

তপস্তপ্ত্বা ঘোরং স খলু কুপিতঃ সপ্তমদিনে

শিরঃ ছিৎরা সদ্যঃ পুরহরমুপস্থাপ্য পুরতঃ।

অতিক্ষুদ্রং রৌদ্রং শিরসি করদানেন নিধনং

জগন্নাথাদ্বব্রে ভরতি রিমুখানাং ক্ল শুভধীঃ ॥ 89.4 ॥

917

মোক্তারং বন্ধমুক্তো হরিণপতিরির প্রাদ্রবৎসোহথ রুদ্রং

দৈত্যাঙ্কীত্যা স্ম দেবো দিশি দিশি বলতে পৃষ্ঠতো দত্তদৃষ্টিঃ।

तूष्ठीके सर्रलोके तर पदमधिरोक्क्युमुद्रीक्क्य शर्रं  
दुरादेराग्रतस्त्रुं पटूरटूरपुषा तस्त्रिषे दानराय ॥ 89.5 ॥

918

भद्रं ते शाकुनेय ब्रमसि किमधुना  
एरं पिशाचस्य राचा  
सन्देहश्चेन्मदुक्तौ तर किमु न करो -  
ष्यस्त्रुलीमङ्ग मौलौ।  
इत्थं एरद्वाक्यमुटः शिरसि कृतकरः  
सोहपतच्छिन्नपातं  
ब्रंशो हेरं परोपासितुरपि च गतिः  
शूलिनोहपि एरमेर ॥ 89.6 ॥

919

डूणुं किल सरस्वतीनिकटरासिनस्तापसा -  
स्त्रिमूर्तिषु समादिशन्नधिकसद्भुतां रेदितुम्।  
अयं पुनरनादरादुदितरुद्धरोषे रिधौ  
हरेहपि च जिहिंसिषौ गिरिजया धृते एरामगां ॥ 89.7 ॥

920

सुष्ठुं रमाङ्कडुरि पङ्कजलोचनं एरां  
रिप्रे रिनिष्पति पदेन मुदोत्थितस्त्रुम्।  
सर्रं ऋमस्त्रु मुनिरर्य भरें सदा मे  
एरंपादचिह्मिह डूषणमित्यरादीः ॥ 89.8 ॥

921

निश्चित्य ते च सुदृटं एरयि बद्धभाराः  
सारस्वता मुनिररा दधिरे रिमोक्कम्।  
एरामेरमच्युत पुनश्च्युतिदोषहीनं  
सत्त्रोच्छयैकतनुमेर रयं भजामः ॥ 89.9 ॥

922

जगत्सृष्ट्यादौ एरां निगमनिरहैर्रन्दिभिरि  
स्तुतं रिषेष्ठा सच्चिं परमरसनिर्द्वैतरपुषम्।

परात्मानं डूमन् पशुपरनिताभाग्यनिरहं  
परीतापशान्ते परनपुरवासिन् परिभजे ॥ 89.10 ॥

923

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकोननरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये नरतितमं दशकम् ॥

আগমাদীনাং পরমতাৎপর্যনিরূপণম্

বৃকভৃগুমুনিমোহিন্যম্বরীষাদিবৃতে -

শ্রযি তর হি মহত্বং সর্ষশর্ষাদিজৈত্রম্।

স্থিতমিহ পরমাত্মন্ নিষ্কলারাগভিন্নং

কিমপি যদরভাতং তদ্ধি রূপং তরৈর ॥ 90.1 ॥

924

মূর্তিত্রযেশ্বরসদাশিরপঞ্চকং যৎ

প্রাহঃ পরাত্মরপুরের সদাশিরোহস্মিন্।

তত্রেশ্বরস্তু স রিকুণ্ঠপদস্তুমের

ত্রিৎরং পুনর্ভজসি সত্যপদে ত্রিভাগে ॥ 90.2 ॥

925

তত্রাপি সাত্ত্বিকতনুং তর রিষ্ণুমাহ -

ধাতা তু সত্ত্বরিরলো রজসৈর পূর্ণঃ।

সত্ত্বোৎকটৎরমপি চাস্তি তমোরিকার -

চেষ্টাদিকং চ তর শঙ্করনাম্মি মূর্তৌ ॥ 90.3 ॥

926

তং চ ত্রিমূর্ত্যতিগতং পরপুরুষং ত্রাং

শর্ষাত্মনাপি খলু সর্ষমযৎরহেতোঃ।

শংসন্ত্যপাসনরিধৌ তদপি স্ত্বতস্তু

ৎরদ্রপমিত্যতিদৃচং বহু নঃ প্রমাণম্ ॥ 90.4 ॥

927

শ্রীশঙ্করোহপি ভগরান্ সকলেষু তার -

ত্বামের মানযতি যো ন হি পক্ষপাতী।



- ॐरन्निष्ठमेर स हि नामसहस्रकादि  
 र्याख्ये ॐरंस्त्वतिपरश्च गतिं गतोहन्ते ॥ 90.5 ॥ 928
- मूर्तित्रयातिगमुराच च मन्त्रशास्त्र -  
 स्यादौ कलायसुषमं सकलेश्वरं ॐराम्।  
 ध्यानं च निष्कलमसौ प्रणरे खलुकृत्वा  
 ॐरामेर तत्र सकलं निजगद नान्यम् ॥ 90.6 ॥ 929
- समस्तसारे च पुराणसङ्ग्रहे  
 रिसंशयं ॐरन्महिमेर र्ण्यते।  
 त्रिमूर्तियुक्त्वात्यपदत्रिभागतः  
 परं पदं ते कथितं न शूलिनः ॥ 90.7 ॥ 930
- यं ब्राम्हकल्प इह भागरतद्वितीय -  
 श्कन्दोदितं रपुरनारुतमीश धात्रे।  
 तस्यैर नाम हरिशर्मुखं जगद  
 श्रीमाधरः शिरपरोहपि पुराणसारे ॥ 90.8 ॥ 931
- ये स्वप्रकृत्यनुगुणा गिरिशं भजन्ते  
 तेषां फलं हि दृढैर तदीयभक्त्या।  
 र्यासो हि तेन कृतरानधिकारिहेतोः  
 श्कान्दादिकेषु तर हानिरचोर्थादैः ॥ 90.9 ॥ 932
- भूतार्थकीर्तिरनुरादरिरुद्धरादौ  
 त्रेधार्थरादगतयः खलु रोचनार्थाः।  
 श्कान्दादिकेषु बहरोहत्र रिरुद्धरादा -  
 श्कृतमसत्प्रभुत्पुत्रिभूत्युपशिष्णद्याः ॥ 90.10 ॥ 933
- यं किष्किदप्यरिदुषाहपि रिभो मयोक्तं  
 तन्मन्त्रशास्त्ररचनाद्यभिदृष्टमेर।

ब्यासोक्तिसारमयभागरतोपगीत

क्लेशान् रिधुय कुरु भक्तिभरं परात्नम् ॥ 90.11 ॥

934

॥ इति श्रीमन्नारायणीये नरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে একনরতিতমং দশকম্ ॥

ভক্তিস্বরূপরণনম্

শ্রীকৃষ্ণং ৎরৎপদোপাসনমভযতমং

বদ্ধমিথ্যার্থদৃষ্টে -

মর্ত্যস্যার্তস্য মন্যে র্যপসরতি ভযং

যেন সর্বাঅনৈর।

যত্তারং ৎরৎপ্রণীতানিহ ভজনরিধী -

নাস্থিতো মোহমার্গে

ধারন্নপ্যার্বুতাক্ষঃ স্থলতি ন কুহচি -

দেৱদেৱাখিলাঅন্ ॥ 91.1 ॥

935

ভূমন্ কাযেন রাচা মুহুরপি মনসা

ৎৱদ্বলপ্রেরিতাঅ্মা

যদ্যৎ কুর্বে সমস্তং তদিহ পরতরে

ৎৱয্যসারর্পযামি।

জাত্যাপীহ শ্রপাকস্তুযি নিহিতমনঃ

কর্মরাগিন্দ্রিয়ার্থ -

প্রাণো রিশ্রং পুনীতে ন তু রিমুখমনা -

স্তুৎপদাদ্বিপ্রর্যঃ ॥ 91.2 ॥

936

ভীতিনাম দ্বিতীযাদুরতি ননু মনঃ

কল্লিতং চ দ্বিতীযং

তেনৈক্যাভ্যাসশীলো হৃদযমিহ যথা -

শক্তি বুদ্ধ্যা নিরুক্ষ্যাম্।

मायारिद्धे तू तस्मिन् पुनरपि न तथा  
 भाति मायाधिनाथं  
 तं वरां भक्त्या महत्या सततमनुभज -  
 नीश भीतिं रिजह्याम् ॥ 91.3 ॥

937

ভক্তেরুৎপত্তিবৃদ্ধী তর চরণজুষাং  
 সঙ্গমেনৈর পুংসা -  
 মাসাদ্যে পুণ্যভাজাং শ্রিয় ইর জগতি  
 শ্রীমতাং সঙ্গমেন।  
 তৎসঙ্গো দের ভূযান্মম খলু সততং  
 তনুখাদুন্নিষক্তি -  
 স্ত্রুম্বাহাত্ম্যপ্রকারৈর্ভরতি চ সুদৃঢ়া  
 ভক্তিরুদ্ধুতপাপা ॥ 91.4 ॥

938

শ্রেয়োমার্গেষু ভক্তারধিকবহুমতি -  
 জন্মকর্মাণি ভূযো  
 গায়ন্ ক্ষেমাণি নামান্যপি তদুভযতঃ  
 প্রদ্রতং প্রদ্রতাত্মা।  
 উদ্যদ্বাসঃ কদাচিৎ কুহচিদপি রুদন্  
 ক্লাপি গর্জন্ প্রগায় -  
 ন্নুমাদীর প্রনৃত্যন্নযি কুরু করুণাং  
 লোকবাহশ্চরেযম্ ॥ 91.5 ॥

939

ভূতান্যেতানি ভূতান্মকমপি সকলং  
 পক্ষিমৎস্যান্ মৃগাদীন্  
 মর্ত্যান্ মিত্রাণি শত্রুনপি যমিতমতি -  
 স্ত্রুম্বাহান্যানমানি।  
 বরৎসেবায়্যাং হি সিধ্যেন্মম তর কৃপয়া

ভক্তিদার্যং রিরাগ -  
 স্ত্রুত্ত্বস্যারবোধোহপি চ ভুরনপতে  
 যত্নভেদং রিনৈর ॥ 91.6 ॥

940

নো মুহন্ ক্ষুত্ৰুডাদৈর্ভরসরণিভরৈ -  
 স্ত্রুন্নিলীনাশযৎরা -  
 চ্চিন্তাসাতত্যাশালী নিমিষলরমপি  
 ৎরৎপদাদপ্রকম্পঃ।  
 ইষ্টানিষ্টেষু তুষ্টির্যসনরিরহিতো  
 মাযিকৎরারবোধা -  
 জ্জ্যেৎস্নাভিস্ত্রুন্নখেন্দোরধিকশিশিরিতে -  
 নাত্মনা সঞ্চরেযম্ ॥ 91.7 ॥

941

ভূতেষ্চেষু ৎরদৈক্যস্মৃতিসমধিগতৌ  
 নাধিকারোহধুনা চে -  
 ত্রুৎপ্রেম ৎরৎকমৈত্রী জডমতিষু কৃপা  
 দ্বিটসু ভূযাদুপেক্ষা।  
 অর্চাযাং রা সমর্চাকুতুকমুরুতর -  
 শ্রদ্ধযা রর্ধতাং মে  
 ৎরৎসংসেরী তথাপি দ্রুতমুপলভতে  
 ভক্তলোকোত্তমৎরম্ ॥ 91.8 ॥

942

আরূত্য ৎরৎস্বরূপং ক্ষিতিজলমরুদা -  
 দ্যাঅনা রিক্ষিপন্তী  
 জীরান্ ভূযিষ্ঠকর্মারলিরিরশগতীন্  
 দুঃখজালে ক্ষিপন্তী।  
 ৎরন্মাযা মাভিভূন্মামযি ভুরনপতে  
 কল্পতে তৎপ্রশান্ত্যে

९र९पादे भक्तिरेरेत्यरददधि रिभो  
सिद्धयोगी प्रबुद्धः ॥ 91.9 ॥

943

दुःखान्यालोक्य जल्लुश्रलमुदितरिरे -  
कोहमाचार्यर्या -  
ल्लक्का ९रद्रपतत्रुं गुणचरितकथा -  
दुद्धरुक्तिडूमा।  
मायामेनां तरि९रा परमसुखमये  
९र९पादे मोदिताहे  
तस्यायं पूर्ररुः परनपुरपते  
नाशयाशेषरोगान् ॥ 91.10 ॥

944

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে দ্বিনরতিতমং দশকম্ ॥

কর্মমিশ্রভক্তিস্বরূপবর্ণনম্

রৈদৈস্সর্বাণি কর্মাণ্যফলপরতয়া  
বর্ণিতানীতি বুদ্ধরা  
তানি ব্রহ্ম্যর্পিতান্যের হি সমনুচরন্  
যানি নৈষ্কর্ম্যমীশ।  
মা ভুদ্রেদৈর্নিষিদ্ধে কুহচিদপি মনঃ  
কর্মরাচাং প্রবৃত্তি -  
দূর্ভজং চেদরাপ্তং তদপি খলু ভর -  
তর্পযে চিৎপ্রকাশে ॥ 92.1 ॥

945

যস্তুন্যঃ কর্মযোগস্তর ভজনময -  
স্তত্র চাভীষ্টমূর্তিং  
হৃদ্যাং সত্বেকরূপাং দৃষদি হৃদি মৃদি  
ক্লাপি রা ভারযিৎরা।  
পুষ্পৈর্গন্ধৈর্নিরৈদ্যৈরপি চ ব্রিচিৎতৈঃ  
শক্তিতো ভক্তিপূতৈ -  
নিত্যং ব্রযাং সপর্যাং ব্রিদধদযি ব্রিভো  
ব্রৎপ্রসাদং ভজেযম্ ॥ 92.2 ॥

946

স্ত্রীশূদ্রাস্ত্বেকথাদিশ্রবণবিরহিতা  
আসতাং তে দযার্হা -  
স্ত্বেপাদাসন্নযাতান্ দ্বিজকুলজনুষো  
হন্ত শোচাম্যশান্তান্।

बृत्त्यर्थं ते यजन्तो बह्वकथितमपि  
 ९रामनाकर्णयन्तो  
 दृष्ट्वा रिद्याभिजातैः किमु न रिदधते  
 तादृशं मा कृथा माम् ॥ 92.3 ॥

947

पापोहयं कृष्णरामेत्यभिलपति निजं  
 गूहितुं दुश्चरित्रं  
 निर्लज्जस्यस्य राचा बह्वतरकथनी -  
 यानि मे रिघ्नितानि।  
 भ्राता मे रक्ष्यशीलो भजति किल सदा  
 रिष्णुमिथं बुधांस्ते  
 निन्दन्त्यैच्छैर्हसन्ति ९रयि निहितमतीं -  
 स्तादृशं मा कृथा माम् ॥ 92.4 ॥

948

श्वेतच्छायं कृते ९रां मुनिरररपुषं  
 प्रीणयन्ते तपोभि -  
 स्त्रेतायां ऋकऋराद्यङ्कितमरुणतनुं  
 यञ्जुरूपं यजन्ते।  
 सेरन्ते तन्त्रमागैर्गिरिलसदरिगदं  
 द्वापरे श्यामलाङ्गं  
 नीलं सङ्कीर्तनादैरिह कलिसमये  
 मानुषाञ्छ्वां भजन्ते ॥ 92.5 ॥

949

सोहयं कालेयकालो जयति मुररिपो  
 यत्र सङ्कीर्तनादै -  
 निर्यत्नेरेर मागैरखिलद न चिरा -  
 त्त्रुप्रसादं भजन्ते।  
 जातास्त्रेताकृतदारपि हि किल कलौ



सम्भरं कामयन्ते  
 दैरातत्रैर जातान् रिषयरिषरसै -  
 र्मा रिभो रङ्गयाम्नाम् ॥ 92.6 ॥

950

ভক্তাস্তারং কলৌ স্যুর্দ্রমিলভুরি ততো  
 ভুরিশস্ত্র চোচ্চৈঃ  
 কারেরীং তাম্রপর্ণীমনু কিল কৃতমা -  
 লাং চ পুণ্যাং প্রতীচীম্।  
 হা মামপ্যেতদন্তর্ভরমপি চ রিভো  
 কিঞ্চিদঞ্চদ্রসং ৎর -  
 য্যাশাপাশৈর্নিবধ্য ভ্রময় ন ভগরন্  
 পূরয ৎরন্নিষেরাম্ ॥ 92.7 ॥

951

दृष्ट्वा धर्मद्रुहं तं कलिमपकरुणं  
 प्राङ्मुहीक्षिं परीक्षि -  
 द्भ्रुं र्याकृष्टखडेगाहपि न रिनिहतवान्  
 साररेदी गुणांशां।  
 ৎরৎসেরাদ্যাশু সিধ্যেদসদিহ ন তথা  
 ৎরৎপরে চৈষ ভীরু -  
 র্যত্তু প্রাগের রোগাদিভিরপহরতে  
 তত্র হা শিক্ষ্যৈনম্ ॥ 92.8 ॥

952

गङ्गा गीता च गायत्र्यपि च तुलसिका  
 गोपिकाचन्दनं तं  
 सालग्रामाभिपूजा परपुरुष तथै -  
 कादशी नामरर्णाः।  
 एतान्यष्टाप्ययत्नान्यथি कलिसमये  
 ৎরৎপ্রসাদপ্রবৃদ্ধ্যা

म्निप्रं मुक्तिप्रदानीत्यभिदधुर्षय -  
स्तेषु मां सज्जयेथाः ॥ 92.9 ॥

953

देरर्षीणां पितृणामपि न पुनरुणी  
किङ्करो रा स डूमन्  
योऽसौ सर्वात्मना एरां शरणमुपगत -  
स्सर्कृत्यानि हिंरा।  
तस्योऽपन्नं रिकर्माप्यथिलमपनुद -  
स्येः चित्तस्थितस्त्रुं  
तन्मे पापोऽथापान् परनपुरपते  
रुक्नि भक्तिं प्रणीयाः ॥ 92.10 ॥

954

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्विनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमन्नारायणीये त्रिनरतितमं दशकम् ॥

गुरुशिक्षारर्णनम्

बन्धुस्नेहं रिजह्यां तर हि करुणया

एरय्युपारेशितात्मा

सर्रं त्यक्त्वा चरेयं सकलमपि जग -

द्वीक्ष्य मायारिलासम्।

नानात्राद्वाञ्छितजन्यां सति खलु गुणदो -

षारबोधे रिधिर्वा

र्यासेधो वा कथं तौ एरयि निहितमते -

र्रीतरैषम्यबुद्धेः ॥ 93.1 ॥

955

म्फुतृषगालोपमात्रे सततकृतधियो

जन्तरः सन्त्यनन्ता -

स्तेभ्यो रिञ्जानरत्नां पुरुष इह रर -

स्तज्जनिर्दुर्लभैर।

तत्राप्यात्मात्मनः स्यात्सुहृदपि च रिपु -

र्यस्त्वयि न्यस्तचेता -

स्तापोच्छित्तेरुपायं स्मरति स हि सुहृत्

स्वात्परैरी ततोहन्यः ॥ 93.2 ॥

956

एरकारुण्ये प्रवृत्ते क इर नहि गुरु -

लोकवृत्तेऽपि भूमन्

सर्राक्रान्तापि भूमिनहि चलति तत -

स्सत्समां शिक्षयेयम्।

गृहीयामीश ततद्विषयपरिचये -

हप्यप्रसक्तिं समीरां

र्याप्तंरक्षाअनो मे गगनगुरुरशा -

द्वातु निर्लेपता च ॥ 93.3 ॥

957

स्वच्छः स्यां पारनोहहं मधुर उदकर -

द्वहिरन्मा स्म गृहां

सरानीनोहपि दोषं तरुषु तमिर मां

सरभूतेररेयाम्।

पुष्टिर्नाष्टिः कलानां शशिन इर तनो -

र्नाअनोहस्तीति रिद्यां

तोयादिर्यस्तुमार्तागुरदपि च तनु -

त्रैकतां रंरंप्रसादां ॥ 93.4 ॥

958

स्नेहाद्र्याधातुपुत्रप्रणयमृतकपो -

तायितो मा स्म डूरं

प्राप्तं प्राप्नन् सहेय म्फुधमपि शयुरं

सिक्कुरंस्यामगाधः।

मा पप्तं योषिदादौ शिथिनि शलभरं

डूसरं सारভাগী

डूयासं किन्तु तद्वद्वनचयनरशा -

न्नाहमीश प्रणेशम् ॥ 93.5 ॥

959

मा बद्क्यासं तरुण्या गज इर रशया

নার্জযেযং ধনৌঘং

হর্তান্যস্তং হি মাধ্বীহর ইর মৃগর -

ন্মা মুহং গ্রাম্যগীতৈঃ।

নাত্যাসজ্জয ভোজ্যে ঝষ ইর বডিশে

पिङ्गलारनिराशः  
सुप्यां भर्तव्ययोगां कुरुर इर रिभो  
सामिषोहनैर्यर्न हनै ॥ 93.6 ॥

960

रर्तेय त्यक्तमानः सुखमतिशिशुर -  
निस्सहायश्चरेयं  
कन्याया एकशेषो बलय इर रिभो  
रर्जितान्योन्यघोषः।  
र्रच्छित्तो नारबुद्ध्य परमिषुकुदिर  
म्ह्याभूदायानघोषं  
गेहेश्वरन्यप्रणीतेश्वरहिरिर निरसा -  
न्युन्दुरोर्मन्दिरेषु ॥ 93.7 ॥

961

र्रय्येर र्ररंकृतं र्ररं ऋपयसि जगदि -  
तुर्णनाभां प्रतीयां  
र्रच्छित्ता र्ररंस्वरूपं कुरुर इति दृटं  
शिक्षये पेशकारां।  
रिडभस्मात्मा च देहो भरति गुरुररो  
यो रिरैकं रिरक्तिं  
धत्ते सक्थिन्त्यमानो मम तु बहुरुजा -  
पीडितोहयं रिशेषां ॥ 93.8 ॥

962

ही ही मे देहमोहं त्यज परनपुरा -  
धीश यंप्रेमहेतो -  
र्गेहे रिक्ते कलत्रादिषु च रिरशिता -  
स्त्रुपदं रिस्यरन्ति।  
सोहयं र्रहेश्वरुनो रा परमिह परत -  
स्साम्प्रतं चास्मिर्कर्ण -

ॐरगिज्हराद्या रिकर्षन्त्यरशमत इतः  
कोहपि न ॐरपदाञ्जे ॥ 93.9 ॥

963

दुर्दारो देहमोहो यदि पुनरधुना  
तर्हि निश्शेषरोगान्  
हंरा भक्तिं द्रष्टिष्यां कुरु तत्र पदप -  
क्लेशहे पङ्कजाङ्ग।  
नूनं नानाभराञ्जे समधिगतमिमं  
मुक्तिदं रिप्रदेहं  
म्बुद्रे हा हस्त मा मा म्बिप रिषयरसे  
पाहि मां मारुतेश ॥ 93.10 ॥

964

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रिनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে চতুর্নরতিতমং দশকম্ ॥

তৎরজ্ঞানোৎপত্তিপ্রকারবর্ণনং, বন্ধমোক্ষস্বরূপবর্ণনং,  
ভক্তিপ্রার্থনাবর্ণনং চ

শুদ্ধা নিষ্কামধর্মৈঃ প্রবরগুরুগিরা

তৎস্বরূপং পরং তে

শুদ্ধং দেহেন্দ্রিয়াদির্যপগতমখিল -

র্যাপ্তমারেদযন্তে।

নানাৎরশ্চৌল্যকার্ষ্যাদি তু গুণজরপু -

সঙ্গতোহধ্যাসিতং তে

রহেদারুপ্রভেদেষ্টির মহদগুতা -

দীপ্ততাশান্ততাди ॥ 94.1 ॥

965

আচার্যাখ্যাধরস্থারণিসমনুমিল -

চ্ছিয়রূপোত্তরার -

ণ্যারেধোদ্ভাসিতেন স্ফুটতরপরিবো -

ধাগ্নিনা দহ্যমানে।

কর্মালীরাসনাতৎকৃততনুভুরন -

ভ্রান্তিকান্তারপূরে

দাহ্যভারেন রিদ্যাশিখিনি চ রিরতে

ৎরন্ময়ী খল্লরস্থা ॥ 94.2 ॥

966

এরং তৎপ্রাপ্তিতোহন্যো নহি খলু নিখিল -

ক্লেসহানেরূপাযো

নৈকান্তাত্যন্তিকাস্তে কৃষিরদগদষাড্ -

गुण्यषडकर्मयोगाः।  
 दुरैकलैरकल्या अपि निगमपथा -  
 सुत्फलान्यप्यराप्ता  
 मत्ताङ्गां रिस्मरन्तः प्रसजति पतने  
 यान्त्यनन्तान् रिषादान् ॥ 94.3 ॥

967

ळरल्लोकान्यलोकः क्नु भयरहितो  
 यं परार्धद्वयात्ते  
 ळरुद्धीतस्सत्यलोकेहपि न सुखरसतिः  
 पद्मभूः पद्मनाभ।  
 एरं भारे ळरधर्मार्जितवत्तमसां  
 का कथा नारकाणां  
 तन्मे ळरं छिन्नि वक्त्रं ररद कूपणव -  
 क्को कूपापूरसिक्को ॥ 94.4 ॥

968

याथार्थ्याद्भुन्यसैर्य हि मम न रिभो  
 रस्तुतो वक्त्रमोक्छौ  
 मायारिद्यातनुभ्यां तर तु रिरचितौ  
 स्वप्नबोधोपमौ तौ।  
 वद्वे जीरद्विमुक्तिं गतरति च भिदा  
 तारती तारदेको  
 डुङ्केतु देहद्रमस्त्रो रिषयफलरसा -  
 न्नापरौ निर्यथात्मा ॥ 94.5 ॥

969

जीरन्मुक्तंरमेरंरिधमिति रचसा  
 किं फलं दूरदूरे  
 तन्नामाशुद्धबुद्धेर्न च लघु मनस -  
 श्शेषाधनं भक्तितोहन्यं।



तन्ने रिषेण कृषीर्थास्त्रुयि कृतसकल -  
 प्रार्पणं भक्तिभारं  
 येन स्यां मङ्गु किष्किदगुरुरचनमिल -  
 त्रुप्रबोधस्त्रुदात्मा ॥ 94.6 ॥

970

शब्दब्रह्मण्यपीह प्रयतितमनस -  
 स्त्रुं न जानन्ति केचिं  
 कष्टं रक्त्यश्रमास्ते चिरतरमिह गां  
 विद्वते निष्प्रसूतिम्।  
 यस्यां रिश्राभिरामास्सकलमलहरा  
 दिर्यलीलारताराः  
 सच्चिंसान्द्रं च रूपं तर न निगदितं  
 तां न राचं त्रियासम् ॥ 94.7 ॥

971

यो यारान् यादृशो रा रमिति किमपि नै -  
 रारगच्छामि डूम -  
 न्नेरथानन्यथारस्त्रुदनुभजनमे -  
 राद्रिये चैद्यरैरिन्।  
 रेल्लिङ्गानां ररदङ्घ्रिप्रियजनसदसां  
 दर्शनस्पर्शनादि -  
 डूयान्ने ररप्रपूजानतिनुतिगुणक -  
 र्मानुकীर्त्यादरोहपि ॥ 94.8 ॥

972

यद्यल्लभ्येत ततुतर समुपहतं  
 देर दासोहस्मि तेहहं  
 ररदोहोन्नार्जनाद्यं भरतु मम मुहः  
 कर्म निर्मायमेर।  
 सूर्याग्निब्रह्मणात्मादिषु लसितचतु -

बाह्माराधये वरां  
वरांप्रेमार्द्रवररूपो मम सततमभि -  
स्यन्दतां भक्तियोगः ॥ 94.9 ॥

973

ঐক্যং তে দানহোমব্রতনিযমতপ -  
স্সাঙ্ঘ্যযোগৈর্দুরাপং  
বরাংসঙ্গেনৈর গোপ্যঃ কিল সুকৃতিতমাঃ  
প্রাপুরানন্দসান্দ্রম্।  
ভক্তেশ্বরন্যেষু ভূযস্বপি বহুমনুষে  
ভক্তিমেব বরমাসাং  
তন্মে বরভুক্তিমেব দ্রঢ্য হর গদান্  
কৃষ্ণ রাতালযেশ ॥ 94.10 ॥

974

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुर्नरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে পঞ্চনরতিতমং দশকম্ ॥

কৈরল্যসিদ্ধিপ্রকাররণনম্

আদৌ হৈরণ্যগভীং তনুমরিকলজী -

রাঙ্কিকামাস্থিতঙ্কুং

জীরৎরং প্রাপ্য মাযাগুণগণখচিতো

রর্তসে রিশ্রযোনে।

তত্রোদ্বুদ্ধেন সত্ত্বেন তু গুণযুগলং

ভক্তিভারং গতেন

ছিৎরা সত্ত্বং চ হিৎরা পুনরনুপহিতো

রর্তিতাহে ত্রমের ॥ 95.1 ॥

975

সত্ত্বোন্মেষাৎ কদাচিৎ খলু রিষযরসে

দোষবোধেহপি ভূমন্

ভূযোহপ্যেষু প্রবৃত্তিস্সতমসি রজসি

প্রোদ্ধতে দুর্নিরারা।

চিত্তং তারদগুণাশ্চ গ্রথিতমিহ মিথ -

স্তানি সর্বাণি রোদ্ধুং

তুর্যে ত্রয্যেকভক্তিশ্ররণমিতি ভরান্

হংসরূপী ন্যগাদীৎ ॥ 95.2 ॥

976

সন্তি শ্রেয়াংসি ভূযাংস্যপি রুচিভিদযা

কর্মিণাং নির্মিতানি

ক্ষুদ্রানন্দাশ্চ সান্তা বহুরিধগতযঃ

কৃষ্ণ তেভ্যো ভরেযুঃ।

৳রং চাচখ্যাথ সখ্যে ননু মহিততমাং  
 শ্রেযসাং ভক্তিমেকাং  
 ৳রদুত্ত্যানন্দতুল্যঃ খলু রিষযজুযাং  
 সম্মদঃ কেন রা স্যাৎ ॥ 95.3 ॥

977

৳রদুত্ত্যা তুষ্টবুদ্ধেঃ সুখমিহ চরতো  
 রিচ্যুতাশস্য চাশাঃ  
 সর্বাঃ স্যুঃ সৌখ্যময্যঃ সলিলকুহরগ -  
 স্যের তোযৈকময্যঃ।  
 সোহযং খল্লিন্দ্রলোকং কমলজভরনং  
 যোগসিদ্ধীশ্চ হৃদ্যাঃ  
 নাকাঙ্ক্ষতেতদাস্তাং স্বযমনুপতিতে  
 মোক্ষসৌখ্যেহপ্যনীহঃ ॥ 95.4 ॥

978

৳রদুত্তো বাধ্যমানোহপি চ রিষযরসৈ -  
 রিন্দ্রিযাশান্তিহেতো -  
 উক্ত্যৈরাক্রম্যমণৈঃ পুনরপি খলু তৈ -  
 দুর্বলৈর্নাভিজয্যঃ।  
 সপ্তার্চির্দীপিতার্চিদহতি কিল যথা  
 ভুরিদারুপ্রপঞ্চং  
 ৳রদুত্ত্যোগ্যে তথৈর প্রদহতি দুরিতং  
 দুর্মদঃ ক্লেন্দ্রিযাণাম্ ॥ 95.5 ॥

979

চিত্তাদ্রীভারমুচ্চৈর্পুষ্টি চ পুলকং  
 হর্ষবাষ্পং চ হিৎরা  
 চিত্তং শুদ্র্যেকথং রা কিমু বহুতপসা  
 রিদ্যায়া রীতভক্তেঃ।  
 ৳রদগাথাস্বাদসিদ্ধাঞ্জনসততমরী -

मृज्यामानोऽयमात्मा  
 चम्बुर्रं तद्भुसुम्भं भजति न तु तथा -  
 भ्यस्तया तर्ककोट्या ॥ 95.6 ॥

980

ध्यानं ते शीलयेषं समतनुसुखव -  
 द्वासनो नासिकाग्र -  
 न्यस्तान्कः पुरकाद्यैर्जितपरनपथ -  
 श्चित्तपद्मं रराणम्।  
 उर्ध्वाग्रं भारयिंरा ररिधिषिथिनः  
 संरिचित्त्यापरिष्ठां  
 तत्रसुं भारये रंरां सजलजलधर -  
 श्यामलं कोमलाङ्गम् ॥ 95.7 ॥

981

आनीलम्लम्केशं ज्वलितमकरस -  
 ंकुण्डलं मन्दहास -  
 स्यन्दार्द्रं कौस्तुभश्रीपरिगतनमा -  
 लोरुहाराभिरामम्।  
 श्रीरंसाङ्गं सुबाह्वं मृदुलसदुदरं  
 काण्ठच्छायचेलं  
 चारुस्निग्धोरुमञ्जोरुहललितपदं  
 भारयेहं भ्रञ्जम् ॥ 95.8 ॥

982

सर्वाङ्गैरङ्ग रङ्गैकुतुकमति मुह -  
 धारयन्नीश चित्तं  
 तत्राप्येकत्र युञ्जे रदनसरसिजे  
 सुन्दरे मन्दहासे।  
 तत्रालीनं तु चेतः परमसुखचिद -  
 द्वैतरूपे रितन्त्र -

न्नन्यन्नो चिन्तयेथं मुहुरिति समुपा -  
रूचयोगो भवेथम् ॥ 95.9 ॥

983

इत्थं रंरुद्धानयोगे सति पुनरणिमा -  
दृष्टसंसिद्धयस्ताः  
दूरश्रुत्यादयोऽपि ह्यहमहमिकया  
सम्पतेयुर्मुंरारे ।  
रंरंसम्प्राप्तौ रिलम्बारहमथिलमिदं  
नाद्रिये कामयेहहं  
रंरामेरानन्दपूर्णं परनपुरपते  
पाहि मां सर्रतापां ॥ 95.10 ॥

984

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে ষপ্ননরতিতমং দশকম্ ॥

ভগরদ্বিভূতিরর্ণনং, কর্মজ্ঞানভক্তিমাৰ্গাধিকারিনিৰূপণং,  
চিত্তোপশমনপ্রার্থনা চ

৳ৱং হি ব্রহ্মৈৱ সাক্ষাৎ পরমুরুমহিম -

ব্রহ্মরাণামকার -

স্তারো মন্ত্ৰেষু রাজ্ঞাং মনুরসি মুনিষু

৳ৱং ভৃগুর্নারদোহপি।

প্রহ্লাদো দানৱানাং পশুষু চ সুরভিঃ

পক্ষিণাং বৈনতেযো

নাগানাৱস্যনন্তসুরসরিদপি চ

শ্রোতসাং ব্রিশ্বরমূৰ্তে ॥ 96.1 ॥

985

ব্রহ্মণ্যানাং বলিস্ত্বং ক্রতুষু চ জপয -

জ্ঞোহসি বীৱেষু পার্থো

ভক্তানাৱুদ্ধরস্ত্বং বলমসি বলিনাং

ধাম তেজস্বিনাং ৳ৱম্।

নাস্ত্যন্তস্ত্বদ্বিভূতেৱিকসদতিশযং

রস্ত্ব সৰ্বং ৳ৱমের

৳ৱং জীৱস্ত্বং প্রধানং যদিহ ভৱদূতে

তন্ন কিঞ্চিৎ প্রপঞ্চঃ ॥ 96.2 ॥

986

ধর্মং বর্ণাশ্রমাণাং শ্রুতিপথরিহিতং

৳ৱৎপরৎৱেন ভক্ত্যা

কুর্ৱন্তোহন্তৱিরাগে ব্রিকসতি শনকৈঃ

सन्त्यजन्तो लभन्ते ।  
 सत्तास्फूर्तिप्रियंरात्रकमखिलपदा -  
 र्थेषु भिन्नैरभिन्नं  
 निर्मूलं रिस्रमूलं परममहमिति  
 र्वाद्विबोधं रिसुद्धम् ॥ 96.3 ॥

987

ज्ञानं कर्मापि भक्तिस्त्रितयमिह भर -  
 ंप्रापकं तत्र तार -  
 निरिग्नानामशेषे रिसय इह भरे  
 ज्ञानयोगेहधिकारः ।  
 सक्तानां कर्मयोगस्त्रयि हि रिसिहितो  
 ये तु नात्यन्तसक्ताः  
 नाप्यत्यन्तं रिसक्तस्त्रयि च धृतरसा  
 भक्तियोगो ह्यमीषाम् ॥ 96.4 ॥

988

ज्ञानं र्दुक्ततां रा लघु सूकृतरशा -  
 न्मर्त्यलोके लभन्ते  
 तस्मात्तत्रैर जन्म स्पृहयति भगवन्  
 नाकगो नारको रा ।  
 आरिष्टं मां तु दैराद्भरजलनिधिपो -  
 ताघिते मर्त्यदेहे  
 र्द्वं कृत्वा कर्णधारं गुरुमनुगुणरा -  
 ताघितस्तारयेथाः ॥ 96.5 ॥

989

अर्यक्तं मार्गयन्तः श्रुतिभिरपि नयैः  
 केरलज्ञानलुक्ताः  
 क्लिश्यन्तेहतीर सिद्धिं बहतरजनुषा -  
 मन्त एराप्नुवन्ति ।



दूरस्थः कर्मयोगोऽपि च परमफले  
 नन्वयं भक्तियोग -  
 स्त्रामूलादेर हृदयस्त्रुरितमयि भर -  
 ९प्रापको र्धतां मे ॥ 96.6 ॥

990

ज्जानायैरातियत्नं मुनिरपरदते  
 ब्रह्मतत्त्वं तु शृण्वन्  
 गाढं ९रंपादभक्तिं शरणमयति य -  
 स्तस्य मुक्तिः कराग्रे।  
 ९रद्व्यानेहपीह तुल्या पुनरसुकरता  
 चित्तचाঞ্চल्यहेतो -  
 रभ्यासादाशु शक्यं तदपि रशयितुं -  
 ९रंकृपाचारुताभ्याम् ॥ 96.7 ॥

991

निर्दिष्टः कर्ममार्गे खलु रिषमतमे  
 ९रंकथादौ च गाढं  
 जातश्रद्धोऽपि कामानयि भुरनपते  
 नैर शक्नोमि हातुम्।  
 तद्भूयो निश्चयेन ९रयि निहितमना  
 दोषबुद्ध्या भजंस्तान्  
 पुष्पीयां भक्तिमेर ९रयि हृदयगते  
 मङ्गफु नङ्ग्यन्ति सङ्गाः ॥ 96.8 ॥

992

कश्चिं क्लेशार्जितार्थक्खरिमलमति -  
 नूद्यमानो जनौघैः  
 प्रागेरं प्राह रिप्रो न खलु मम जनः  
 कालकर्मग्रहा रा।  
 चेतो मे दुःखहेतुस्तदिह गुणगणं

भारयत्सरकारी -  
तुक्त्वा शांता गतस्त्रां मम च कुरु रिभो  
तादृशीं चित्तशान्तिम् ॥ 96.9 ॥

993

ऀलः प्रागुर्शीं प्रत्यतिरिशमनाः  
सेरमानश्चिरं तां  
गाढं निरिन्द्य भूयो युरतिसुखमिदं  
म्बुद्रमेरेति गायन्।  
रुद्रक्षिं प्राप्य पूर्णः सुखतरमचर -  
उद्गुद्गुत्सङ्गं  
डक्तोत्सं क्रिया मां परनपुरपते  
हस्त मे रुक्मि रोगान् ॥ 96.10 ॥

994

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षण्णरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নारायणीये सप्तनरतिमं दशकम् ॥

উত্তমভক্তিপ্রার্থনা, মার্কণ্ডেয়োপাখ্যানম্ চ

ত্রৈগুণ্যাঙ্কিনরূপং ভরতি হি ভুরনে  
হীনমধ্যোত্তমং যৎ  
জ্ঞানং শ্রদ্ধা চ কৰ্তা রসতিরপি সুখং  
কৰ্ম চাহারভেদাঃ।  
ৎরৎক্ষেত্রৎরনিষেৱাদি তু যদিহ পুন -  
স্তুৎপরং তত্তু সৰ্বং  
প্রাহ্নৈর্গুণ্যনিষ্ঠং তদনুভজনতো  
মঙ্ক্ষু সিদ্ধো ভৱেযম্ ॥ 97.1 ॥

995

ৎরয্যেৱ ন্যস্তচিত্তঃ সুখমযি রিচরন্  
সৰ্ৱচেষ্টাস্তুদৰ্থং  
ৎরন্তুজৈঃ সেৱ্যমানানপি চরিতচরা -  
নাশ্রযন্ পুণ্যদেশান্।  
দসেটৌ রিপ্রে মৃগাদিষ্ৱপি চ সমমতি -  
মূচ্যমানারমান -  
স্পর্ধাসূযাদিদোষঃ সততমখিলভূ -  
তেষু সম্পূজযে ত্ৱাম্ ॥ 97.2 ॥

996

ৎরন্তারো যারদেশু স্ফুরতি ন রিশদং  
তারদেরং হ্রুপাস্তিং  
কুর্ৱনৈকাঅ্যবোধে ঝটিতি রিকসতি  
ৎরন্মযোহহং চৱেযম্।

ॐरुकरुसुसुतु तुरुं कुरुतुतु न डगुरुनु  
 तुरुसुतुतुसु तुरुतुरुश -  
 सुतुसुतुतुसुरुतुतुनुरु तुरुतुरुश तुरुतु रुरुतुतु  
 डुकुतुरुतुरुगुं तुरुनुरुकुतुतु ॥ 97.3 ॥

997

तुं तुनुं डुकुतुरुतुरुगुं दुरुतुतुतुतुतुतु तुरु  
 सुतुतुतुतुरुगुतुतुतुतु -  
 तुतुतुतुतु तुरुतुतुतु सुतुतुतुं तुरु तुरु तुरुतुतुतुतु  
 डुषुतुतुतुतुतु दुरुकुतुतु।  
 तुरुकरुतुतुतुतु हुरु तुरुतुं गुरुतुतुतुतुतुतु -  
 दुरुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुः  
 सुतुतुतुतुतु तुरुतुसुरुं तुरुतुं तुरु डुतुतुतुतुतुतु -  
 दुरुतुरुतुतुतुतु सुतुतुतु ॥ 97.4 ॥

998

तुरुकरुतुतुतुतुतुतुतुः सु खलु तुरुनुरुतुतुतु  
 तुरुतुतुतुतुः तुरुतुतुतुतुतु -  
 तुरुतुतु नुरुतुतु तुतुसुतुतुतुतुतुसुतुतुतुतुतुः  
 तुतु तुरु तुरुतुतुतुतुतुतु।  
 दुरुतुतुतुतुः सुतुतुतुतुतुं सुतुतुतुतुतुतुतुतु -  
 नुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु  
 तुरुगुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु तुरु तुरुनुरुतुतुतु -  
 तुरुतुतुतुतुतु नुरुतुरुतुतुतुं कः ॥ 97.5 ॥

999

तुरुतुतु नुरुतुतुतुतुतुतुतुतुतु नुरुसुतुः  
 तुरुतुतुतुतुतुतुतुतुतुतु  
 तुरुतुतुतु तुरुतुतुतुतुतुतुः सु तुरु तुरुतुतुतुतुतुतु -  
 तुरुतुतुतुतु नुरुनुतुतुतु।  
 दुरुतुतुं तुरुतुतुं तुरुदुतुतुतुं कुरुतु तुरुनुरुतुतुतु -

दुक्तितृष्ठांतरात्मा  
मायादुःखानभिञ्जस्तदपि मृगयते  
नूनमाश्चर्यहेतोः ॥ 97.6 ॥

1000

याते ररय्याशु राताकुलजलदगल -  
त्रोषपूर्णातिघूर्ण -  
एसप्तार्णोराशिमग्ने जगति स तु जले  
सद्भ्रमन् ररर्षकोटीः।  
दीनः प्रैम्फिष्ट दूरे ररटदलशयनं  
कष्णिदाश्चर्यबालं  
ररामेर श्यामलाङ्गं रदनसरसिज -  
न्यस्तपादाङ्गुलीकम् ॥ 97.7 ॥

1001

दृष्टरा ररां हृष्टरोमा रररितमूपगतः  
स्पष्टुकामो मुनीन्द्रः  
श्ररसेनाञ्जनिरिष्टः पुनरिह सकलं  
दृष्टरान् रिष्टपौघम्।  
डूयोहपि श्ररसररैर्बहिरनुपतितो  
रीम्फितस्त्रुंकटाक्फै -  
र्रोदादाङ्गैरुक्तकामस्त्रुयि पिहिततनौ  
स्वाश्रमे प्राङ्गदासीं ॥ 97.8 ॥

1002

गौर्या सार्धं तदग्रे पुरभिदथ गत -  
स्त्रुप्रियप्रेम्फणार्थी  
सिद्धानेररस्य दररा स्वयमयमजरा -  
मृत्युतादीन् गतोहडूँ।  
एरं रररसेररैर स्मररिपुरपि स  
प्रीयते येन तस्मा -

नूर्तित्रय्यात्नकञ्चुं ननु सकलनिय -  
ञ्जेति सुर्यक्तुमासीत् ॥ 97.9 ॥

1003

त्र्यंशेष्विन् सत्यलोके रिधिहरिपुरभि -  
न्मन्दिराण्यूर्ध्वमूर्ध्वं  
तेभ्योऽप्यूर्ध्वं तु मायारिकृतिरिरहितो  
भाति रैकुठलोकः।  
तत्र ंरं कारणाम्बुस्यपि पशुपकुले  
शुद्धसत्त्वैकरूपी  
सच्चिद्विद्मद्भयात्मा परनपुरपते  
पाहि माम् सररोगात् ॥ 97.10 ॥

1004

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে অষ্টনরতিতমং দশকম্ ॥

নিষ্কলব্রহ্মোপাসনা

যস্মিন্নেতদ্বিভাতং যত ইদমভর -

দ্যেন চেদং য এত -

দ্যোহস্মাদুত্তীর্ণরূপঃ খলু সকলমিদং

ভাসিতং যস্য ভাসা।

যো রাচাং দূরদূরে পুনরপি মনসাং

যস্য দেৱা মুনীন্দ্রাঃ

নো রিদ্যুস্তত্ত্বরূপং কিমু পুনরপরে

কৃষ্ণ তস্মৈ নমস্তে ॥ 98.1 ॥

1005

জন্মাথো কৰ্ম নাম স্ফুটমিহ গুণদো -

ষাদিকং রা ন যস্মিন্

লোকানামুতযে যঃ স্বযমনুভজতে

তানি মাযানুসারী।

বিভ্রচ্ছক্তীররূপোহপি চ বহুতররু -

পোহরভাত্যদ্ভুতাত্মা

তস্মৈ কৈরল্যধাম্নে পররসপরিপু -

র্ণায় রিষ্ণে নমস্তে ॥ 98.2 ॥

1006

নো তির্যঞ্চং ন মর্ত্যং ন চ সুরমসুরং

ন স্ত্রিয়ং নো পুমাংসং

ন দ্রব্যং কৰ্ম জাতিং গুণমপি সদস -

দ্বাপি তে রূপমাছঃ।

शिष्टं यं स्यान्निषेधे सति निगमशतै -

लक्ष्णारूढितस्तं

कृच्छेणारेद्यमानं परमसुखमयं

भाति तस्मै नमस्ते ॥ 98.3 ॥

1007

मायायां विष्वितस्तुं सृजसि महदह -

क्लारतन्मात्रभेदै -

दूतग्रामेन्द्रियादैरपि सकलजग -

त्स्रप्सकल्पकल्पम्।

दूयः संहृत्य सर्गं कमठ ईर पदा -

न्यान्ना कालशक्त्या

गस्त्रीरे जायमाने तमसि रितिमिरो

भासि तस्मै नमस्ते ॥ 98.4 ॥

1008

शब्दब्रह्मेति कर्मेत्यगुरिति भगवन्

काल इत्यालपन्ति

त्स्रामेकं रिश्रहेतुं सकलमयतया

सर्गथा कल्प्यमानम्।

रेदात्तैर्यत्तु गीतं पुरुषपरचिदा -

आभिधं तत्तु तत्तुं

प्रेम्फामात्रेण मूलप्रकृतिरिक्तिकृं

कृष्ण तस्मै नमस्ते ॥ 98.5 ॥

1009

सत्वेनासतोया रा न च खलु सदस -

त्वेन निर्राच्यरूपा

धत्ते यासाररिद्या गुणफणिमतिर -

द्विश्रदृश्यारभासम्।

रिद्यात्स्रं सैर याता ऋतिरचनलरै -



र्यंकृपास्यन्दलाडे  
संसारारण्यसद्यस्त्रुटनपरशुता -  
मेति तस्मै नमस्ते ॥ 98.6 ॥

1010

डूषासु स्पर्णरद्वा जगति घटशरा -  
रादिके मृत्तिकार -  
उत्ते सक्थिन्त्यामाने स्फुरति तदधुना -  
प्यद्वितीयं रूपस्ते।  
स्वप्नद्रष्टुः प्रबोधे तिमिरलयरिधौ  
जीर्णरज्जेश्च यद् -  
द्विद्यालाडे तथैर स्फुटमपि रिकसे  
कृष्ण तस्मै नमस्ते ॥ 98.7 ॥

1011

यद्धीत्योदेति सूर्यो दहति च दहनो  
राति रायुस्तथान्ये  
यद्धीताः पद्मजाद्याः पुनरुचितवली -  
नाहरन्तेहनुकालम्।  
येनैरारोपिताः प्राञ्जिनजपदमपि ते  
चारितारश्च पश्चा -  
तस्मै रिश्वरं नियन्त्रे रथमपि भरते  
कृष्ण कुर्मः प्रणामम् ॥ 98.8 ॥

1012

त्रैलोक्यं भारयन्तं त्रिगुणमयमिदं  
त्र्यम्बरसैकराच्यं  
त्रीशानामैकरूपं त्रिभिरपि निगमै -  
र्गीयमानस्वरूपम्।  
तिस्रोऽरश्वा रिदन्तं त्रियुगजनिजुषं  
त्रिक्रमाक्रान्तरिश्वरं

त्रैकाल्ये भेदहीनं त्रिभिरहमनिशं  
योगभेदैर्भजे ९राम् ॥ 98.9 ॥

1013

सत्यं शुद्धं रिवुद्धं जयति तर रपु -  
नित्यमुक्तं निरीहं  
निर्द्बुद्धं निर्रिकारं निखिलगुणगण -  
र्यङ्गनाधारभूतम्।  
निर्मूलं निर्मलं तन्निररधिमहिमो -  
ल्लासि निर्लीनमन्त -  
निस्सङ्गानां मुनीनां निरूपमपरमा -  
नन्दसान्द्रप्रकाशम् ॥ 98.10 ॥

1014

दुर्दारं द्वादशारं त्रिशतपरिमिल -  
९षष्टिपर्वाभिरीतं  
सङ्ग्राम्यं क्रूररेगं ऋणमनु जगदा -  
च्छिद्य सङ्कारमानम्।  
चक्रं ते कालरूपं र्यथयतु न तु मां  
९रपदैकारलम्बं  
रिषेण कारुण्यसिक्को परनपुरपते  
पाहि सर्रामयौघां ॥ 98.11 ॥

1015

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে একোনশততমং দশকম্ ॥

ভগবন্মাহাঅ্যানুর্ণনম্

বিশ্বেগারীর্য়াণি কো রা কথযতু ধরণেঃ

কশ্চ রেণুন্নিমীতে

যসৈরাঙ্ঘ্রিযেণ ত্রিজগদভিমিতং

মোদতে পূর্ণসম্পৎ।

যোহসৌ ব্রিশ্রানি ধত্তে প্রিযমিহ পরমং

ধাম তস্যাবিযাযাং

ৎরদ্ভক্তা যত্র মাদ্যন্ত্যমৃতরসমর -

ন্দস্য যত্র প্ররাহঃ ॥ 99.1 ॥

1016

আদ্যাযাশেষকর্ত্রে প্রতিনিমিষনরী -

নায ভর্ত্রে ব্রিভূতে -

র্ভক্তাত্মা ব্রিষ্ণরে যঃ প্রদিশতি হরিরা -

দীনি যজ্ঞার্চনাদৌ।

কৃষ্ণাদ্যং জন্ম যো রা মহদিহ মহতো

বর্ণযেৎসোহযমের

প্রীতঃ পূর্ণো যশোভিস্কুরিতমভিসরেৎ

প্রাপ্যমন্তে পদং তে ॥ 99.2 ॥

1017

হে স্তোতারঃ করীন্দ্রাস্তমিহ খলু যথা

চেতযধ্রে তথৈর

ব্যক্তং বেদস্য সারং প্রণুরত জননো -

পাতুলীলাকথাভিঃ।

जानन्तश्चास्य नामान्याथिलसुखकरा -

नीति सक्तीर्तयध्रं

हे रिषेण कीर्तनादैद्यस्तुर खलु महत -

स्तुत्वोबोधं भजेयम् ॥ 99.3 ॥

1018

रिषेणः कर्माणि सम्पश्यत मनसि सदा

यैः स धर्मानवध्ना -

द्यानीन्द्रसैष्य भृत्यः प्रियसख ईर च

र्यातनोः क्षेमकारी।

रीक्षन्ते योगसिद्धाः परपदमनिशं

यस्य सम्यक् प्रकाशं

रिप्रेन्द्रा जागरूकाः कृतबहनुतयो

यच्च निर्वासयन्ते ॥ 99.4 ॥

1019

नो जातो जायमानोऽपि च समधिगत -

स्तुन्महिम्नोहरसानं

देर श्रेयांसि रिद्वान् प्रतिमुहुरपि ते

नाम शंसामि रिषेण।

तं एरां संस्तौमि नानारिधनुतिरचनै -

रस्य लोकत्रयस्या -

प्यूर्ध्रं रिद्राजमाने रिरचितरसतिं

तत्र रैकुष्ठलोके ॥ 99.5 ॥

1020

आपः सृष्ट्यादिजन्याः प्रथममथि रिभो

गर्भदेशे दधुस्तुं

यत्र एरय्येर जीरा जलशयन हरे

सङ्गता ँक्यामापन्।

तस्याजस्य प्रभो ते रिनिहितमभरं

पद्ममेकं हि नाडौ  
दिकपत्रं यं किलाहः कनकधरणिभृं  
कर्णिकं लोकरूपम् ॥ 99.6 ॥

1021

हे लोका रिषुःरेतद्भुरनमजनय -  
तन्न जानीथ यूयं  
युष्माकं ह्यन्तरस्यं किमपि तदपरं  
रिद्यते रिषुःरूपम्।  
नीहारप्रथ्यायापरिबृतमनसो  
मोहिता नामरूपैः  
प्राणप्रीत्यैकतृप्ताश्चरथ मथपरा  
हन्त नेच्छा मुकुन्दे ॥ 99.7 ॥

1022

मूर्ध्नामङ्गां पदानां रहसि खलु सह -  
स्त्राणि सम्पूर्य रिश्रं  
तत्प्रोत्क्रम्यापि तिष्ठन् परिमितरिरे  
भासि चित्तान्तरेहपि।  
भूतं भव्यं च सरं परपुरुष भवान्  
किञ्च देहेन्द्रियादि -  
श्चरारिष्टोऽप्युदगतं रादमृतसुखरसं  
चानुभुञ्जेत् रमेर ॥ 99.8 ॥

1023

यत्तु त्रैलोक्यरूपं दधदपि च ततो  
निर्गतो ननु शुद्ध -  
ज्ञानात्मा रतसे रं तत्र खलु महिमा  
सोऽपि तत्रान् किमन्यं।  
स्तोकस्ते भाग एवाखिलभुरनतया  
दृश्यते त्र्यंशकल्पं

डूयिष्ठं सान्द्रमोदात्नकमुपरि ततो  
भाति तस्मै नमस्ते ॥ 99.9 ॥

1024

अर्यक्तं ते स्वरूपं दुरधिगमतमं  
तद्गु शुद्धैकसद्गुं  
र्यक्तं चाप्येतदेर स्फुटममृतरसा -  
श्लोधिकल्लोलतुल्यम्।  
सरोःकृष्टामडीष्टां तदिह गुणरसे -  
नैर चित्तं हरन्तीं  
मूर्तिं ते संश्रयेहहं परनपुरपते  
पाहि मां कृष्ण रोगां ॥ 99.10 ॥

1025

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकानशततमं दशकं समाप्तम् ॥

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে শততমং দশকম্ ॥

কেশাদিপাদর্ষণনম্

অগ্রে পশ্যামি তেজো নিবিডতর কলা -

যারলী লোভনীযং

পীযুষাপ্লারিতোহহং তদনু তদুদরে

দির্যকৈশোররেষম্।

তারুণ্যারম্ভরম্যং পরমসুখরসা -

স্বাদরোমাঞ্চিতাঙ্গৈ -

রারীতং নারদাদৈর্যিলসদুপনিষ -

ৎসুন্দরীমগুলৈশ্চ ॥ 100.1 ॥

1026

নীলাভং কুঞ্চিতাগ্রং ঘনমমলতরং

সংযতং চারুভঙ্গ্যা

রত্নোত্তংসাভিরামং রলযিতমুদয -

চন্দ্রকৈঃ পিঞ্জুজালৈঃ।

মন্দারশ্চিন্দিরীতং তর পৃথুকবরী -

ভারমালোকযেহহং

স্নিগ্ধশ্চৈতোর্ধ্বপুঞ্জামপি চ সুললিতাং

ফালবালেন্দুরীথীম্ ॥ 100.2 ॥

1027

হৃদ্যং পূর্ণানুকম্পার্ণরমৃদুলহরী -

চঞ্চলঙ্গুরিলাসৈ -

রানীলস্নিগ্ধপম্ফ্লারলিপরিলাসিতং

নেত্রযুগ্মং রিভো তে।

सान्द्रच्छायं रिशालारुणकमलदला -  
 कारमामुक्तारं  
 कारुण्यालोकलीलाशिशिरितडुरनं  
 क्षिप्यतां मय्यनाथे ॥ 100.3 ॥

1028

उत्तुप्पोल्लासिनासं हरिमणिमुकुर -  
 प्रोल्लसदगुपाली -  
 र्यालोलङ्कर्णपाशाक्षितमकरमणी -  
 कुण्डलद्वन्द्वदीप्रम्।  
 উন্নীলদন্তপঙ্ক্তিস্থুরদরুণতর -  
 ছাযবিশ্বাধরান্তঃ  
 প্রীতিপ্রস্যন্দিমন্দস্মিতমধুরতরং  
 রক্ত্রমুদ্ভাসতাং মে ॥ 100.4 ॥

1029

बाहृद्वन्द्वेन रत्नोज्ज्वलरलयभृता  
 शोणपाणिप्रराले -  
 नोपातां रेणुनालीं प्रसृतनखमयू -  
 खाङ्गुलीसङ्गशाराम्।  
 कृत्रा रत्नाररिन्दे सुमधुररिकस -  
 द्रागमुद्भार्यामनैः  
 शब्दब्रह्मामृतैस्त्रुं शिशिरितडुरनैः  
 सिञ्च मे कर्णरीथीम् ॥ 100.5 ॥

1030

उंसर्पङ्कौस्तुभश्रीततिभिररुणितं  
 कोमलं कण्ठदेशं  
 रम्भः श्रीरंसरम्यं तरलतरसमु -  
 द्दीप्रहारप्रतानम्।  
 नानारर्णप्रसूनारलिकिसलयिनीং



रन्यमालां रिलोल -  
ल्लोलश्वां लम्बमानामूरसि तर तथा  
भारये रत्नमालाम् ॥ 100.6 ॥

1031

अङ्गे पङ्काङ्गरागैरतिशयरिकस -  
९सौरभाकृष्टलोकं  
लीनानेकत्रिलोकীরिततिमपि कृशां  
विद्रतं मध्यरत्नीम्।  
शक्राश्वन्यस्ततप्तोज्ज्वलकनकनिभं  
पीतचेलं दधानं  
ध्यायामो दीप्तुरश्मिस्फुटमणिरशना -  
किङ्किणीमण्डितं ९राम् ॥ 100.7 ॥

1032

ऊरु चारु तरोरु घनमसृणरुचौ  
चित्तोरौ रमायाः  
रिश्रम्भोभं रिशक्त्य ध्रुमनिशमुडौ  
पीतचेलारुतासौ।  
आनम्नाणां पुरस्तान्यसनधृतसम -  
स्तार्थपालीसमुदग -  
छायं जानुद्वयं च क्रमपृथुलमनो -  
ञ्जे च जञ्जेघ निषेरे ॥ 100.8 ॥

1033

मञ्जीरं मञ्जुनादैरिर पदभजनं  
श्रेय इत्यालपन्तं  
पादाग्रं भ्राञ्जिमञ्जप्रणतजनमनो -  
मन्दरोद्धारकूर्मम्।  
उत्तुङ्गाताम्रराजन्नखरहिमकर -  
ज्योत्स्नया चाहप्रितानां

सन्तापध्व्रान्तहृत्तीं ततिमनुकलये  
मङ्गलामङ्गुलीनाम् ॥ 100.9 ॥

1034

योगीन्द्राणां रुरदङ्गेश्वरधिकसुमधुरं  
मुक्तिभाजां निरासो  
उक्तानां कामरर्षद्युतरुक्सलयं  
नाथ ते पादमूलम्।  
नित्यं चित्तस्थितं मे परनपुरपते  
कृष्ण कारुण्यसिक्को  
हृत्त्रा निशेषतापान् प्रदिशतु परमा -  
नन्दसन्दोहलक्ष्मीम् ॥ 100.10 ॥

1035

अङ्गात्रा ते महत्त्रुं यदिह निगदितं  
रिश्ननाथ ऋमेथाः  
स्तोत्रं चैतत्सहस्रोत्तरमधिकतरं  
रुरप्रसादाय धुयात्।  
द्वेधा नारायणीयं श्रुतिषु च अनुषा  
स्तुत्यतार्णनेन  
स्फीतं लीलारतरैरिदमिह कुरुता -  
मायुरारोग्यसौख्यम् ॥ 100.11 ॥

1036

॥ इति श्रीमन्नारायणीये शततमं दशकं समाप्तम् ॥